राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

नवंबर - 2024

मूल्य ₹ 50/-

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

उद्योग के युग निर्माता'

'सपनों को सच करने वाले,
विकास के पथ पर अग्रसर,
मानवता के लिए समर्पित' : रतन टाटा'

बम की अफवाहें!

एयरलाइन्स की टूट रही कमर,
फर्जी धमकी पर डूब रहे
करोड़ों रुपये...

लोक आस्था का पर्व

भारत के इस इकलौते छठ महापर्व में
एकसाथ सूर्य,जल और वायु तीनों
की पूजा होती है।

स्वच्छता की आवश्यकता है भारत में आज
स्वच्छ भारत
स्वच्छ तन, स्वच्छ मन से बनता - स्वच्छ समाज।

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

• वर्ष : 9 • अंकः 08 • मुंबई • नवंबर-2024

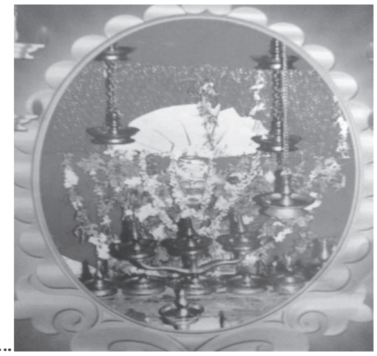

मुद्रक-प्रकाशक,संपादक

नटराजन बालसुब्रमणियम

कार्यकारी संपादक

मंगला नटराजन अय्यर

उप संपादक

भाग्यश्री कानडे, तोषिर शुक्ला, संतोषी मिश्रा, एन.निधी

ब्यूरो चीफ

ओडिशाः अशोक पाण्डेय
उत्तर प्रदेशः विजय दूबे
पटनाः राय यशेन्द्र प्रसाद

टंकन व पृष्ठ सज्जा

ज्योति पुजारी, सोमेश

मार्केटिंग मैनेजमेंट

राजेश अय्यर, शैफाली

संपादकीय कार्यालय

Add: Tirupati Ashish CHS., A-102, A-1 Wing , Near Shahad Station , Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
mangsom@rediffmail.com
Website: swarnimumbai.com

मालिक, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक : बी. नटराजन द्वारा तिरुपति को. ऑप, हॉसिंग सोसायटी, ए-१ विंग १०२, नियर शहाड स्टेशन, कल्याण (वेस्ट)-४२११०३, जिलाः ठाणे, महाराष्ट्र से प्रकाशित व *महेश प्रिन्टर्स, बिरला कॉलेज, कल्याण से मुद्रित।*

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

सभी विवादों का निपटारा मुंबई न्यायालय होगा।

इस अंक में...

फ्लाइट में बम की अफवाहें!	05
रतन टाटा भारतीय उद्योग जगत के लिए एक धरोहर...	07
दिवाली २०२४: रोशनी का पर्व और उसकी महत्ता	12
पकवान	18
राशिफल	24
सफेद रेगिस्तान और सांस्कृतिक धरोहर...	26
सिनेमा	29
परोपकारी अच्युतानंद ...	30
माननीय ओम बिड़ला द्वारा कीट स्कूल ऑफ पब्लिक पॉलिसी उद्घाटित	
देश-दुनिया	32
विविधा	34
लोक आस्था का महापर्वः	
ऑनलाइन गेमिंग के जाल में युवा ...	37
'अधूरी मोहब्बत'	40
काँसे का गिलास	44
बथुआ की खेती	56

सुविचारः

' जिस प्रकार पाप और रोग को दबाया नहीं जा सकता है ठीक उसी प्रकार खुशबू, प्रेम और योग्यता को भी छिपाया नहीं जा सकता है।' -अशोक पाण्डेय

संपादकीय

महानायक रतन टाटा

रतन टाटा न केवल एक महान उद्योगपति हैं, बल्कि एक ऐसे व्यक्ति हैं जिनके मूल्यों और सिद्धांतों ने उन्हें आज के समय का प्रेरणास्रोत बना दिया है। उनकी दूरदर्शिता, नेतृत्व क्षमता और समाज के प्रति जिम्मेदारी निभाने का अद्वितीय दृष्टिकोण उन्हें अन्य उद्योगपतियों से अलग करता है। उनका जीवन संघर्ष, सफलता और सादगी का प्रेरणादायक उदाहरण है, जिसे हर पीढ़ी को सीखने और अनुसरण करने की आवश्यकता है। रतन टाटा भारतीय उद्योग जगत के लिए एक धरोहर हैं, और उनके योगदान से आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा मिलती रहेगी।

१९९१ में, रतन टाटा ने जे.आर.डी. से नए नेता के रूप में पदभार संभाला। टाटा, टाटा संस के नेता हैं, जो टाटा समूह की मालिक कंपनी है। इस दौरान, भारत में अर्थव्यवस्था में बड़े बदलाव हुए, और रतन के पास इन महत्वपूर्ण बदलावों के माध्यम से समूह का नेतृत्व करने का कठिन काम था। उन्होंने परिचालन को और अधिक सुचारू रूप से चलाने, मुख्य व्यवसायों पर ध्यान केंद्रित करने और दुनिया भर में बढ़ने के लिए एक परियोजना शुरू की। उनके मार्गदर्शन में टाटा समूह ने अपनी योजनाओं में बड़े बदलाव किए। रतन ने कारोबार के उन हिस्सों को बेच दिया जो उतने महत्वपूर्ण नहीं थे और इसके बजाय स्टील, कार, फोन और कंप्यूटर सेवाओं जैसे उद्योगों पर ध्यान केंद्रित किया। वह टाटा को पूरी दुनिया में एक बड़ी कंपनी बनाना चाहते थे और उन्होंने यह काम बखूबी किया।

नुसीरवानजी टाटा (१८२२-१८८६): नुसीरवानजी टाटा, टाटा परिवार के पितामह थे. उनकी पत्नी जीवनबाई कावसजी टाटा, और उनके पांच बच्चे थे जमशेदजी टाटा, रतनबाई टाटा, मानेकबाई टाटा, और वीरबाईजी टाटा थे. नुसीरवानजी टाटा के पुत्र और टाटा समूह के संस्थापक थे. जमशेदजी टाटा ने १८७० के दशक में मध्य भारत में एक कपड़ा मिल से टाटा समूह की शुरुआत की. उन्हें 'भारतीय उद्योग के जनक' के रूप में जाना जाता है. उन्होंने स्टील (टाटा स्टील), होटल (ताजमहल होटल), और जलविद्युत जैसे प्रमुख उद्योगों की नींव रखी. रतन टाटा ने टाटा समूह को दुनिया भर में मशहूर करके एक बड़ा काम किया। उन्होंने कई महत्वपूर्ण खरीद की, जिससे टाटा समूह पूरी दुनिया में मशहूर हो गया। २००० में टाटा टी ने ब्रिटेन से टेटली टी को खरीदा, जिससे यह दुनिया की सबसे बड़ी चाय कंपनियों में से एक बन गई। इसके बाद २००४ में टाटा मोटर्स ने दक्षिण कोरियाई ट्रक कंपनी देवू कमर्शियल व्हीकल्स को खरीदा।

२००७ और २००८ में टाटा ने कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण खरीददारी की। उन्होंने ब्रिटिश स्टील निर्माता कोरस और ब्रिटिश कार ब्रांड जगुआर और लैंड रोवर को खरीदा। इन बदलावों ने समूह की अंतरराष्ट्रीय स्थिति को पूरी तरह से बदल दिया और बाजार में उनकी पहचान को और मजबूत बना दिया। रतन टाटा को नए विचार और तकनीक को बेहतर बनाना बहुत पसंद था। उन्होंने टाटा समूह के भीतर नए विचार लाने और चीजों को बेहतर बनाने की संस्कृति को बढ़ावा दिया। उनके द्वारा बनाई गई सबसे मशहूर चीजों में से एक टाटा नैनो कार थी, जो २००८ में आई थी। दुनिया की सबसे कम कीमत वाली कार के रूप में विज्ञापित, नैनो को कई भारतीय परिवारों को सस्ता परिवहन देने के लिए बनाया गया था। हालाँकि इसमें कुछ समस्याएँ थीं, लेकिन नैनो कार दिखाती है कि कैसे रतन टाटा का सभी के लिए नवाचार का विचार सफल रहा।

अपने व्यवसाय के अलावा, कई लोग रतन टाटा की दूसरों की मदद करने और समाज के लिए अच्छा करने के प्रति समर्पण के लिए प्रशंसा करते हैं। उनके नेतृत्व में टाटा समूह ने विभिन्न परियोजनाओं के माध्यम से समाज की मदद करना जारी रखा। टाटा ट्रस्ट्स, जो टाटा संस में अधिकांश शेयरों का मालिक है, ने शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और ग्रामीण विकास जैसे महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दों का समर्थन करने के लिए धन देने में बड़ी भूमिका निभाई है। रतन टाटा कई चैरिटी कार्यों में सीधे तौर पर शामिल रहे हैं। उन्होंने कोलकाता में टाटा मेडिकल सेंटर बनाने में मदद की, जो कैंसर का अच्छा इलाज करता है। उन्होंने आपदाओं, खेती और स्कूलों के लिए पैसे और सहायता देकर भारत और अन्य जगहों पर कई लोगों की मदद की है। उनकी मदद ने कई लोगों के जीवन में बड़ा बदलाव किया है।

रतन टाटा ने व्यवसायों और समुदायों के लिए जो अच्छे काम किए हैं, उन्हें कई लोगों ने देखा और सराहा है। उन्होंने पद्म भूषण (२०००) और पद्म विभूषण (२००८) जैसे कई पुरस्कार और सम्मान जीते हैं, जो भारत में नागरिकों को दिए जाने वाले दो सर्वोच्च पुरस्कार हैं। उन्हें अपने व्यवसाय और दान कार्यों के लिए अन्य देशों और संगठनों से और भी पुरस्कार मिले, साथ ही मानद उपाधियाँ भी मिलीं।

२०१२ में रतन टाटा ने टाटा संस के बॉस का पद छोड़ दिया और साइरस मिस्त्री को कमान सौंप दी। लेकिन, उनका प्रभाव और स्थायी प्रभाव अभी भी टाटा समूह को आकार देता है। २०१६ में, साइरस मिस्त्री को हटाए जाने के बाद वे अस्थायी बॉस के रूप में वापस आए, जिससे पता चलता है कि उन्हें अभी भी कंपनी की परवाह है। जब चीजें बदल रही थीं, तब समूह को एक साथ रखने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी।

भले ही रतन टाटा सेवानिवृत्त हो चुके थे , फिर भी वे अलग-अलग भूमिकाओं में व्यस्त रहते थे। वे अभी भी टाटा संस के मानद चेयरमैन थे और सलाह देने और धर्मार्थ कार्य करने में सक्रिय थे। उन्हें नए व्यवसायों में निवेश करना और उन युवाओं की मदद करना पसंद था, जो अपना खुद का व्यवसाय शुरू करने की कोशिश कर रहे हैं। इससे पता चलता है कि उन्हें नए विचार और व्यवसायों को बढ़ने में मदद करना वाकई पसंद था। ■

फ्लाइट में बम की अफवाहें!

अफवाहें भरी कॉल से एयरलाइंस की टूट रही कमर, भारी वित्तीय नुकसान

इन दिनों विमानों में बम होने की अफवाह फैलने की घटनाएं तेजी से बढ़ी हैं. इनसे अव्यवस्था फैलती है और एयरलाइन समेत यात्रियों की भी समस्याएं झेलनी पड़ती हैं. मगर, इसका आर्थिक पहलू और ज्यादा कमर तोड़ देने वाला है. ऐसी हर अफवाह पर एयरलाइन को करोड़ों रुपये का नुकसान झेलना पड़ता है. शनिवार को करीब ३० फ्लाइट में बम होने की धमकी मिली. इनमें विस्तारा (Vistara), एयर इंडिया (Air India), इंडिगो (IndiGo), अकासा एयर (Akasa Air), स्पाइसजेट (एज्मवू), स्टार एयर (Star Air) और अलायंस एयर (Alliance Air) शामिल हैं. इस हफ्ते अब तक कुल ७० फ्लाइट ऐसी धमकियों के चलते परेशान हुई हैं. एयर इंडिया के बोइंग ७७७ विमान ने मुंबई से न्यूयॉर्क की ओर उड़ान भरी। एयर इंडिया के बोइंग ७७७ विमान में बम रखे होने की धमकी मिलने के बाद सोमवार (१४ अक्टूबर) को मुंबई से न्यूयॉर्क के लिए उड़ान भरी थी। विमान ने १६ घंटे की नॉन-स्टॉप यात्रा के लिए उड़ान भरी, जिसमें १३० टन जेट ईंधन लोड हुआ। हालांकि, उड़ान भरने के कुछ मिनट बाद एयरलाइन को फोन आया कि विमान में बम है। एयर इंडिया के बोइंग ७७७ को तत्काल डायवर्ट

पिछले कुछ दिनों से देश की कई फ्लाइट्स को बम से उड़ाने की धमकी मिल चुकी है. ये सिलसिला थम नहीं रहा है. रोजाना ऐसी घटनाएं सामने आ रही हैं. इसके मद्देनजर बम थ्रेट असेसमेंट कमेटी (बीटीएसी) के प्रोटोकॉल में बदलाव हुआ है. इसका मकसद एयरलाइन कंपनियों को मिल रही धमकियों से निपटना है. सोमवार रात दिल्ली, मुंबई, जयपुर, पुणे, मेंगलुरु, बेंगलुरु और कोझिकोड एयरपोर्ट की बीटीएसी ने ३ एअर इंडिया, विस्तारा और इंडिगो की ३० फ्लाइट को भेजी गई बम की धमकी को अफवाह करार दिया. इस मामले की जांच में पाया गया है कि सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर एक एक्स हैंडल ने इन एयरलाइन कंपनियों की फ्लाइट में बम होने के पोस्ट किए थे.

१. सुरक्षित लैंडिंग के लिए १ करोड़ रुपये का फ्यूल फेंकना पड़ा
२. एयर इंडिया को झेलना पड़ा था २० करोड़ रुपये का नुकसान
३. नो फ्लाई लिस्ट में डालने के साथ ही कड़ी कार्रवाई होगी

बीटीएसी के प्रोटोकॉल में बदलाव

अब बीटीएसी के प्रोटोकॉल में बदलाव हुआ है. बीटीएसी ने इस पर काम करना शुरू कर दिया है. इस मामले में साइबर सुरक्षा एजेंसियों का कहना है कि कुछ धमकियां वीपीएन (वर्चुअल प्राइवेट नेटवर्क) से की गई हैं. इसके लिए कई हैंडल एक्स पर बनाए गए थे. ये अकाउंट धमकी देने से कुछ समय पहले ही बनाए गए थे. ऐसे २० से २५ हैंडल अब तक सस्पेंड किए जा चुके हैं. सीआईएसएफ और संबंधित एयरलाइन की सुरक्षा एजेंसियों को यात्रियों और फ्लइट की तलाशी के लिए सुरक्षा प्रोटोकॉल सुनिश्चित करने के लिए भी कहा गया है. एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि फ्लइट में बम होने की अफवाहों से अभी तक १४० फ्लाइट प्रभावित हुई हैं. इसमें घरेलू और अंतरराष्ट्रीय दोनों उड़ानें हैं.फ्लाइट में बम की धमकी मामले में दिल्ली पुलिस ने ८ एफआईआर दर्ज की हैं.

कर दिया गया। उड़ान भरने के दो घंटे के भीतर विमान को दिल्ली में उतरना था। हालाँकि, इसके साथ एक समस्या भी थी। बम की धमकी से एयरलाइन को ३ करोड़ रुपये से अधिक का नुकसान हुआ। इसके पीछे क्या कारण है? वास्तव में यह मामला क्या है? हम इसके बारे में और जानेंगे। बम की धमकी मिलते ही विमान को दिल्ली में उतारने की तैयारी शुरू कर दी गई। हालांकि, समस्या यह थी कि अगर विमान को दिल्ली में लैंड करना होता तो १०० टन ईंधन हवा में छोड़ना पड़ता। बी७७७ विमान का लैंडिंग का अधिकतम वजन २५० टन है। हालांकि, टेक-ऑफ के समय, यात्रियों और सामान सहित पूरे विमान का वजन लगभग ३४०-३५० टन है। विमान दो घंटे में फिर से उतरा, जिसका मतलब हवा में लगभग १०० टन ईंधन छोड़ना था; जिसकी लागत लगभग १ लाख रुपये प्रति टन है, जिसका मतलब है कि केवल ईंधन की बर्बादी की लागत १ करोड़ रुपये है.

'एक वरिष्ठ पायलट ने कहा, आईजीआई हवाई अड्डे पर अप्रत्याशित लैंडिंग और पार्किंग शुल्क, २०० से अधिक यात्रियों और चालक दल के लिए आवास, अगली उड़ान के लिए मुआवजा, पूर्ण निरीक्षण के बाद विमान को सेवा में वापस लाने के लिए ऑपरेटिंग क्रू की नई व्यवस्था जैसे अन्य खर्च हैं। एक वरिष्ठ अधिकारी का कहना है कि इस तरह की झूठी धमकी भरी कॉल से एयरलाइंस को करोड़ों रुपये का नुकसान होता है। पिछले रविवार से इस गुरुवार तक, एयरलाइंस को ४० से अधिक झूठे धमकी भरे कॉल मिले हैं। इससे एयरलइंस पर भारी आर्थिक प्रभाव पड़ रहा है। एयरलाइन अधिकारियों का अनुमान है कि अतिरिक्त लागत लगभग ६०-८० करोड़ रुपये है। एयर इंडिया के बी७७७ (वीटी-एएलएम) का उदाहरण लेते हुए विमान ने मंगलवार (१५ अक्टूबर) को शिकागो के लिए उड़ान भरी। बारह घंटे बाद, विमान, जिसमें २०० से अधिक लोग सवार थे, बम की धमकी के बाद कनाडा के शहर इकलुइट में उतरा।

विमान १५ अक्टूबर को सुबह ५:२१ बजे वहां उतरा। यहां से यात्रियों को दूसरी फ्लाइट से शिकागो भेजना था। हालांकि, यात्रियों को ले जाने वाली उड़ान में देरी होने के कारण एयरलाइन को भारी वित्तीय नुकसान हुआ। बी ७७७ के लिए औसत मासिक किराया ४ लाख रुपये से ६ लाख रुपये के बीच है; त्याचे दैनिक भाडे सुमारे $१७,००० आहे. उड़ान नहीं भरने का मतलब प्रति दिन $ १७,००० खोना है। विमान बिना किसी रुकावट के शिकागो पहुंच जाता। हालांकि, धमकी भरे कॉल के कारण विमान शिकागो नहीं पहुंच सका, और २०० से अधिक यात्री और चालक दल इकालुइट में फंसे हुए थे; दूरदराज के गांवों में उनके लिए आवास, भोजन और अन्य बुनियादी आवश्यकताओं की व्यवस्था करनी पड़ी। इसके बाद उन्हें कनाडाई वायु सेना के विमान से शिकागो ले जाया गया। कई लोगों ने कहा कि इस एक खतरे की कुल लागत १५-२० करोड़ रुपये से अधिक होगी, जिसमें ग्राउंडेड बी ७७७ की लागत भी शामिल है।

ऐसी घटनाओं पर लगाम लगाने के लिए अब सरकार कड़े कदम उठाने जा रही है. सिविल एविएशन मिनिस्टर के राममोहन नायडू (K Rammohan Naidu) ने कहा है कि हम ऐसी घटनाओं को लेकर गंभीर हैं. हम इंटरनेशनल गाइडलाइन्स का अध्ययन कर रहे हैं. ऐसी अफवाह फैलाने वालों को नो फ्लाई लिस्ट में डालने के अलावा कई और कदम भी उठाए जा सकते हैं. राममोहन नायडू ने कहा कि हमें ऐसी अफवाहों के चलते नुकसान झेल रही एयरलाइन्स और एविएशन इंडस्ट्री (Aviation Industry) को बचाने के लिए कड़े नियम बनाने होंगे.

रतन टाटा भारतीय उद्योग जगत के लिए एक धरोहर...

रतन टाटा का जीवन प्रेरणा से भरा हुआ है। उनके नेतृत्व, दृष्टिकोण, और समाज के प्रति उनकी प्रतिबद्धता उन्हें एक असाधारण व्यक्ति बनाते हैं। वे सिर्फ एक उद्योगपति नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने न केवल अपने व्यवसाय का, बल्कि समाज का भी कल्याण किया। उनकी सादगी, करुणा, और नैतिकता हमें यह सिखाती है कि जीवन में सफलता केवल पैसे और मुनाफे में नहीं, बल्कि समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाने में है। रतन टाटा के जीवन की इन अनकही और दिलचस्प कहानियों से हमें उनके व्यक्तित्व की गहराई और उनके दूरदर्शी नेतृत्व का आभास होता है। उनका जीवन प्रत्येक व्यक्ति के लिए प्रेरणादायक है, और उनका योगदान हमेशा याद किया जाएगा।

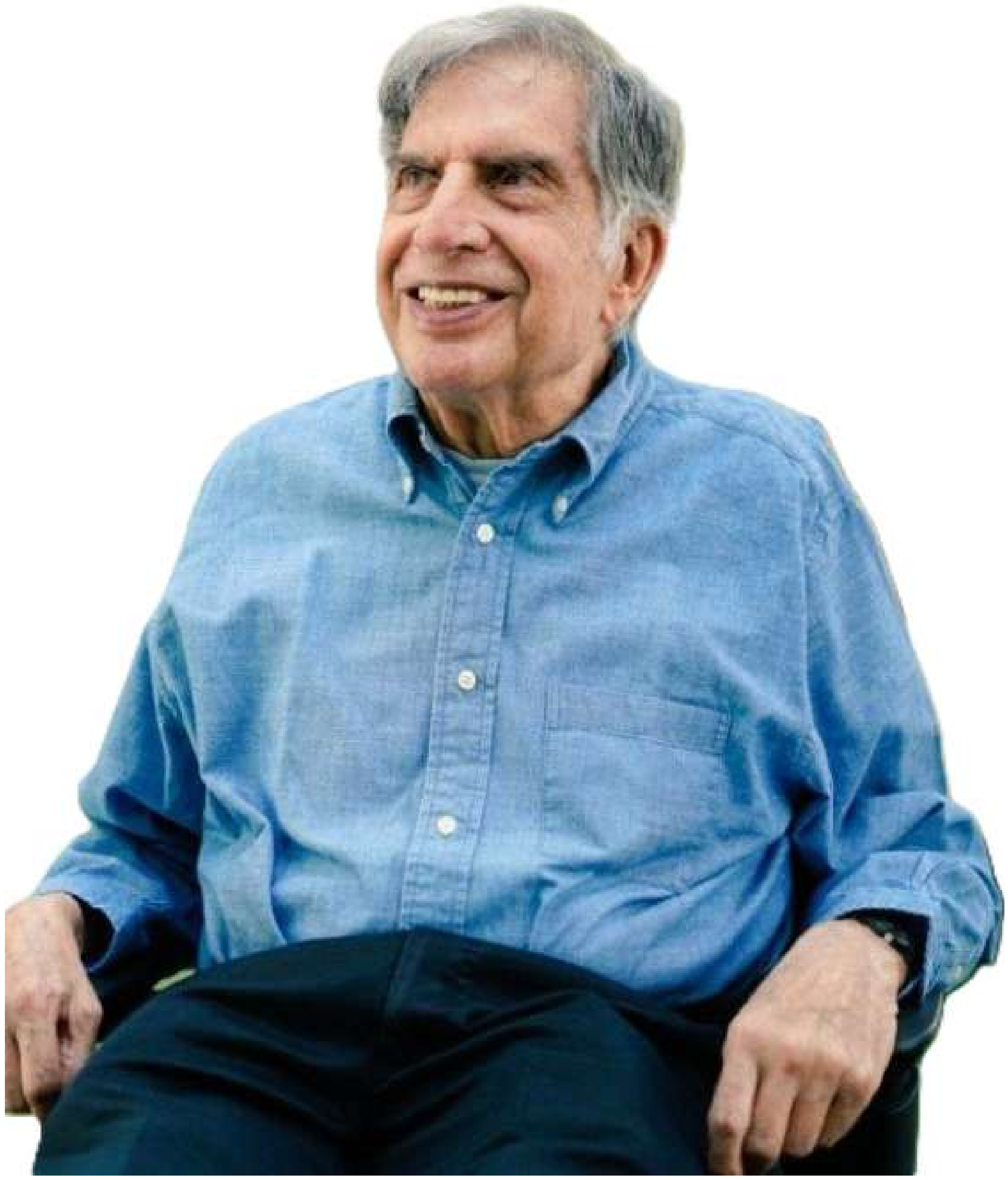

रतन टाटा, भारतीय उद्योगपति, परोपकारी और टाटा समूह के पूर्व अध्यक्ष, न केवल भारत में बल्कि पूरे विश्व में अपनी नेतृत्व क्षमता और समाज के प्रति समर्पण के लिए जाने जाते हैं। उनका जीवन संघर्ष, सफलता और विनम्रता का अद्वितीय उदाहरण है। टाटा समूह को एक नए मुकाम पर पहुंचाने वाले रतन टाटा को उद्योग जगत के एक आदर्श व्यक्ति के रूप में देखा जाता है।

प्रारंभिक जीवन और शिक्षाः

रतन टाटा का जन्म २८ दिसंबर १९३७ को मुंबई में एक प्रतिष्ठित पारसी परिवार में हुआ। वे टाटा परिवार की तीसरी पीढ़ी से हैं, जिन्होंने भारतीय उद्योग में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। रतन टाटा ने अपनी शुरुआती शिक्षा मुंबई के कैथेड्रल एंड जॉन कॉनन स्कूल से प्राप्त की और उसके बाद अमेरिका के कॉर्नेल विश्वविद्यालय से आर्किटेक्चर और इंजीनियरिंग की डिग्री हासिल की। बाद में, उन्होंने हार्वर्ड बिजनेस स्कूल से एडवांस्ड मैनेजमेंट प्रोग्राम पूरा किया।

टाटा समूह में योगदानः

रतन टाटा ने १९६२ में टाटा समूह के साथ अपना करियर शुरू किया। उन्होंने सबसे पहले टाटा स्टील के शॉप फ्लोर पर काम किया, जहाँ उन्होंने शारीरिक श्रम किया और कंपनी के कामकाज को जमीनी स्तर से समझा। यह अनुभव उनके नेतृत्व के गुणों को विकसित करने में सहायक रहा।

१९९१ में, जब रतन टाटा ने जे.आर.डी. टाटा से टाटा समूह की बागडोर संभाली, उस समय समूह को एक नए दृष्टिकोण की जरूरत थी। उनके नेतृत्व में टाटा समूह ने नई ऊंचाइयाँ छुईं और कई अंतरराष्ट्रीय अधिग्रहण किए, जिनमें टेटली (२००० में), कौरस स्टील (२००७ में), जैगुआर-लैंड रोवर (२००८ में) शामिल हैं। इन अधिग्रहणों ने टाटा समूह को एक वैश्विक पहचान दिलाई।

टाटा नैनोः आम आदमी की कार

रतन टाटा के जीवन का एक महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट था 'टाटा नैनो' - जो भारत की आम जनता के लिए किफायती कार के रूप में पेश की गई। १ लाख रुपये में कार उपलब्ध कराने का उनका सपना, जिसमें एक सामान्य परिवार भी कार का मालिक बन सके, ने दुनिया भर में सुर्खियाँ बटोरीं। भले ही नैनो का व्यावसायिक सफलता में संघर्ष रहा हो, लेकिन यह प्रोजेक्ट रतन टाटा के दूरदर्शी सोच और जनता की भलाई के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

विनम्रता और नेतृत्व की शैलीः

रतन टाटा को उनकी सादगी और विनम्रता के लिए जाना जाता है। वे हमेशा अपने कर्मचारियों के साथ एक समान व्यवहार करते हैं और अपने जीवन में सादगी का पालन करते हैं। जहाँ अधिकांश शीर्ष उद्योगपति भव्य जीवनशैली का अनुसरण करते हैं, वहीं रतन टाटा एक साधारण और जिम्मेदार जीवन जीते हैं। उनकी नेतृत्व शैली में नैतिकता और सम्मान को प्रमुख स्थान प्राप्त है, जो टाटा समूह के मूल्यों से मेल खाती है।

परोपकार और समाजसेवाः

रतन टाटा केवल एक सफल उद्योगपति ही नहीं, बल्कि एक महान परोपकारी भी हैं। उन्होंने शिक्षा, चिकित्सा, और ग्रामीण विकास जैसे क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर दान दिया है। उनकी परोपकारी संस्था, टाटा ट्रस्ट्स, भारत में कई सामाजिक कार्यों के लिए समर्पित है। रतन टाटा ने हमेशा इस बात पर जोर दिया है कि समाज को वापस देना एक कंपनी का सबसे बड़ा कर्तव्य है। उन्होंने चिकित्सा अनुसंधान, कैंसर के उपचार और ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा को प्रोत्साहन देने के लिए भारी निवेश किया है। उनका मानना है कि समाज के प्रति जिम्मेदारी निभाने से ही सच्ची सफलता प्राप्त होती है।

रतन टाटा का दूरदर्शी नेतृत्वः

रतन टाटा को हमेशा से एक दूरदर्शी नेता माना गया है। उन्होंने टाटा समूह को पारंपरिक व्यवसायों से निकालकर सूचना प्रौद्योगिकी, ऑटोमोबाइल्स, और स्टील जैसे उभरते क्षेत्रों में निवेश किया। उनके नेतृत्व

में टाटा समूह ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विस्तार किया, जिससे यह समूह दुनिया के सबसे सम्मानित और प्रतिष्ठित ब्रांडों में शामिल हो गया।

सेवानिवृत्ति और उसके बाद की भूमिका:

२०१२ में रतन टाटा ने टाटा समूह के अध्यक्ष पद से सेवानिवृत्ति ली, लेकिन उनकी सक्रियता आज भी बनी हुई है। वे अब भी टाटा ट्रस्ट्स और कई अन्य परोपकारी संस्थाओं के साथ जुड़े हुए हैं। सेवानिवृत्ति के बाद भी रतन टाटा नए स्टार्टअप्स और युवा उद्यमियों का समर्थन कर रहे हैं। उन्होंने भारत में उभरते हुए नए व्यवसायों और टेक्नोलॉजी स्टार्टअप्स में निवेश किया है, जिसमें Ola Electric, Paytm, और URanClap जैसे स्टार्टअप्स शामिल हैं।

प्रेरणादायक व्यक्तित्व:

रतन टाटा अपने जीवन में कई चुनौतियों का सामना करने के बावजूद हमेशा अपने सिद्धांतों और नैतिकता पर डटे रहे। उनका जीवन हमें सिखाता है कि व्यापार में सफलता सिर्फ मुनाफे से नहीं, बल्कि समाज के प्रति जिम्मेदारी निभाने से भी मापी जाती है। वे एक ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने भारतीय उद्योग को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया और समाज में सुधार के लिए अपना जीवन समर्पित किया।

सम्मान और पुरस्कार:

रतन टाटा को उनकी उपलब्धियों के लिए कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों से नवाजा गया है। उन्हें भारत सरकार द्वारा पद्म भूषण (२०००) और पद्म विभूषण (२००८) से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उनके द्वारा उद्योग और समाज में दिए गए अद्वितीय योगदान का प्रतीक है।

भारत के लिए रतन टाटा का आर्थिक दृष्टिकोण: समावेशी विकास और नैतिक व्यापार की दिशा

रतन टाटा, भारतीय उद्योगपति और टाटा समूह के पूर्व अध्यक्ष, का आर्थिक दृष्टिकोण भारत के विकास और समृद्धि के लिए विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण रहा है। उन्होंने अपने नेतृत्व में टाटा समूह को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाई, लेकिन उनके आर्थिक दृष्टिकोण में सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि उन्होंने हमेशा भारत के समावेशी विकास पर ध्यान केंद्रित किया। उनके व्यापारिक निर्णय केवल लाभ कमाने तक सीमित नहीं थे, बल्कि समाज, पर्यावरण और देश की दीर्घकालिक प्रगति के लिए थे।

१. समावेशी विकास पर जोर:

रतन टाटा का मानना था कि किसी भी राष्ट्र की प्रगति तब तक सार्थक नहीं होती, जब तक कि समाज के सभी वर्गों को इसमें समावेशित नहीं किया जाता। उन्होंने हमेशा यह सुनिश्चित किया कि टाटा समूह केवल बड़े शहरों और अमीर वर्गों पर ही ध्यान केंद्रित न करे, बल्कि ग्रामीण भारत और समाज के पिछड़े वर्गों के लिए भी अवसर पैदा करे। उनका आर्थिक दृष्टिकोण इस विश्वास पर आधारित था कि सभी के लिए समान अवसर उपलब्ध होने चाहिए, चाहे वह रोजगार के रूप में हो, शिक्षा हो, या फिर बुनियादी सुविधाओं का विकास।

२. नैतिक व्यापार और जिम्मेदारीपूर्ण उद्योग:

रतन टाटा हमेशा नैतिकता और पारदर्शिता के पक्षधर रहे हैं। उनके अनुसार, व्यापार का उद्देश्य सिर्फ मुनाफा कमाना नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी निभाना भी है। उनका मानना था कि अगर किसी व्यापार में नैतिकता और जिम्मेदारी नहीं है, तो वह दीर्घकालिक रूप से सफल नहीं हो सकता। टाटा समूह के अधीन कंपनियों में नैतिकता को प्राथमिकता दी गई, और यही कारण है कि टाटा समूह भारत का सबसे भरोसेमंद ब्रांड बना।

रतन टाटा ने कई मौकों पर बड़े सौदों को ठुकरा दिया, जब उन्होंने पाया कि वे सौदे नैतिक रूप से सही नहीं थे। उनका दृष्टिकोण स्पष्ट था कि सकारात्मक व्यापार प्रथाएँ ही व्यापार को दीर्घकालिक सफलता और समाज में स्थिरता प्रदान कर सकती हैं।

३. स्वदेशी उद्योग और आत्मनिर्भरता:

रतन टाटा का हमेशा मानना रहा है कि भारत को आत्मनिर्भर बनना चाहिए। उन्होंने स्वदेशी उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए कई पहल कीं। उनके नेतृत्व में टाटा समूह ने न केवल भारत में उत्पादन को बढ़ावा दिया, बल्कि तकनीकी विकास, अनुसंधान और नवाचार को भी प्राथमिकता दी। उनका लक्ष्य था कि भारत केवल एक उपभोक्ता बाजार न बने, बल्कि एक वैश्विक उत्पादक शक्ति बने।

उन्होंने मेक इन इंडिया के विचार को बढ़ावा दिया, और इसे तब से लागू करना शुरू किया, जब यह शब्दावली प्रचलित भी नहीं थी। टाटा नैनो इसका एक

उदाहरण है, जिसे रतन टाटा ने 'भारत की कार' के रूप में प्रस्तुत किया। उनका सपना था कि भारत के हर परिवार के पास किफायती कार हो, और उन्होंने इसे संभव भी किया। यद्यपि नैनो का व्यावसायिक सफलता कम रही, लेकिन इस परियोजना ने यह साबित किया कि भारतीय उद्यमशीलता और नवाचार से बड़े लक्ष्यों को हासिल किया जा सकता है।

४. कृषि और ग्रामीण विकास में योगदानः

रतन टाटा का दृष्टिकोण केवल शहरी विकास तक सीमित नहीं था। उन्होंने हमेशा इस बात पर जोर दिया कि भारत की आत्मा गाँवों में बसती है, और अगर भारत को सशक्त बनाना है, तो हमें ग्रामीण क्षेत्रों और कृषि क्षेत्र में निवेश करना होगा। टाटा ट्रस्ट्स के माध्यम से, उन्होंने कृषि और ग्रामीण विकास के लिए कई योजनाएँ चलाईं, जिनमें किसानों की आय बढ़ाने, सिंचाई की व्यवस्था, और कृषि आधारित उद्योगों को प्रोत्साहित करने पर जोर दिया गया।

रतन टाटा के इस दृष्टिकोण ने न केवल ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर पैदा किए, बल्कि कृषि क्षेत्र में नई तकनीकों को भी बढ़ावा दिया, जिससे किसानों की उत्पादन क्षमता में वृद्धि हुई।

५. अंतर्राष्ट्रीयकरण और भारतीय उद्योग की वैश्विक पहचानः

रतन टाटा ने भारतीय उद्योग को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाया। उनके नेतृत्व में टाटा समूह ने कई अंतरराष्ट्रीय अधिग्रहण किए, जिनमें टेटली (यूके), कौरस स्टील (यूके), और जैगुआर-लैंड रोवर (यूके) शामिल हैं। इन अधिग्रहणों ने भारतीय उद्योग की क्षमता को दुनिया भर में साबित किया और भारतीय व्यापार को एक नई पहचान दी।

उनका आर्थिक दृष्टिकोण यह था कि भारतीय कंपनियों को केवल घरेलू बाजार तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि वैश्विक बाजारों में भी प्रतिस्पर्धा करनी चाहिए। उनके इस दृष्टिकोण से टाटा समूह ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी जगह बनाई और भारत का गौरव बढ़ाया।

६. सतत विकास और पर्यावरण के प्रति प्रतिबद्धताः

रतन टाटा हमेशा पर्यावरण के प्रति सजग रहे हैं। उनके नेतृत्व में टाटा समूह ने ग्रीन टेक्नोलॉजी और सतत विकास पर ध्यान केंद्रित किया। उनका मानना

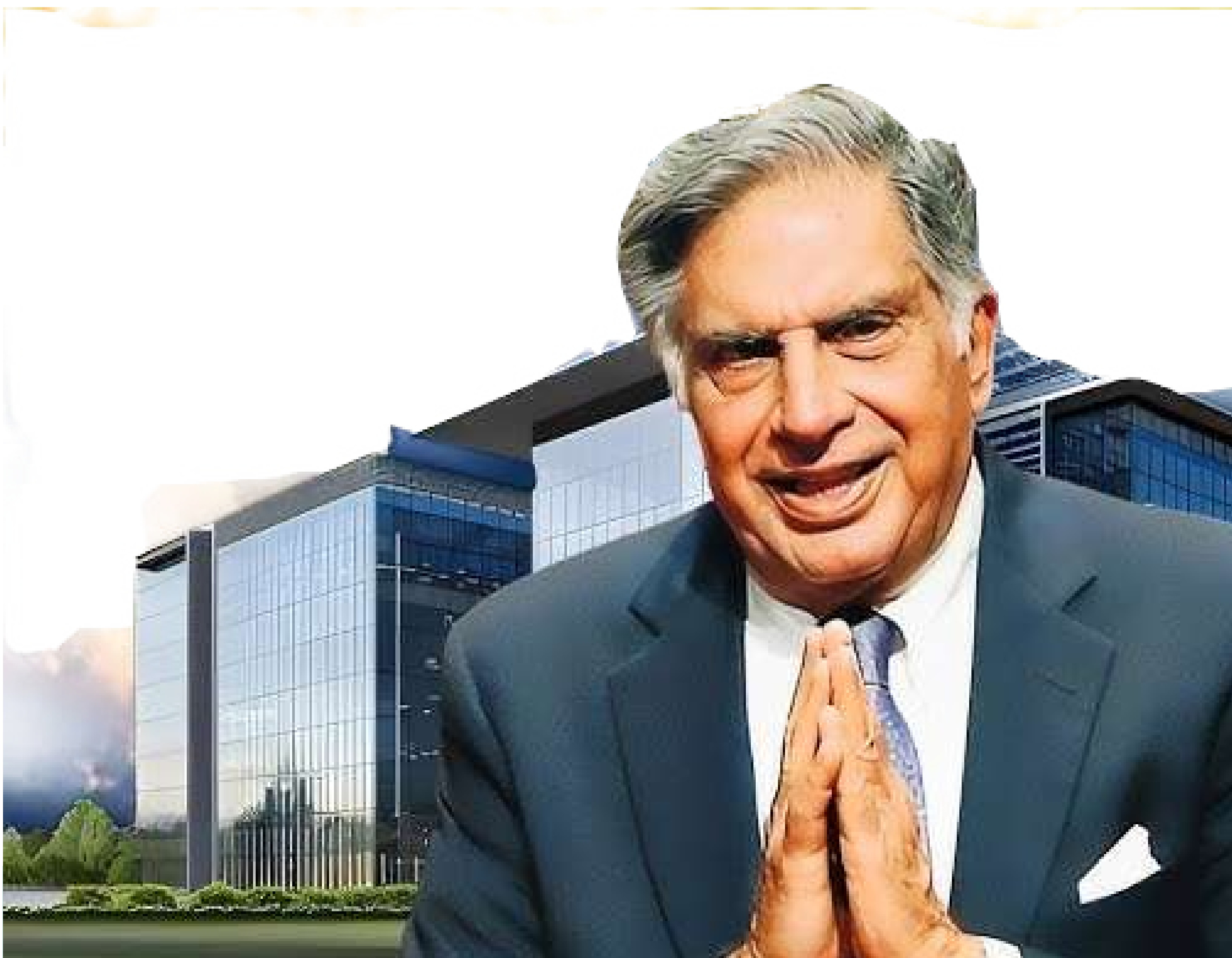

था कि विकास तभी सही मायने में प्रगति कहलाता है, जब वह पर्यावरण को नुकसान पहुँचाए बिना हो। उन्होंने टाटा समूह की कंपनियों में पर्यावरणीय नियमों का कड़ाई से पालन सुनिश्चित किया और कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी (CSR) को व्यापार का अभिन्न हिस्सा बनाया।

रतन टाटा के इस दृष्टिकोण से यह स्पष्ट होता है कि वे केवल आर्थिक विकास की बात नहीं करते थे, बल्कि सस्टेनेबल डेवलपमेंट को भी महत्व देते थे, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए एक बेहतर भविष्य सुनिश्चित करता है।

७. तकनीकी नवाचार और अनुसंधानः

रतन टाटा ने भारत में तकनीकी नवाचार और अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए। उनका मानना था कि अनुसंधान और विकास (R&D) के बिना कोई भी देश वैश्विक प्रतिस्पर्धा में आगे नहीं बढ़ सकता। टाटा समूह के अधीन कंपनियों में अत्याधुनिक तकनीकों का विकास किया गया और नवाचार को प्रोत्साहित किया गया।

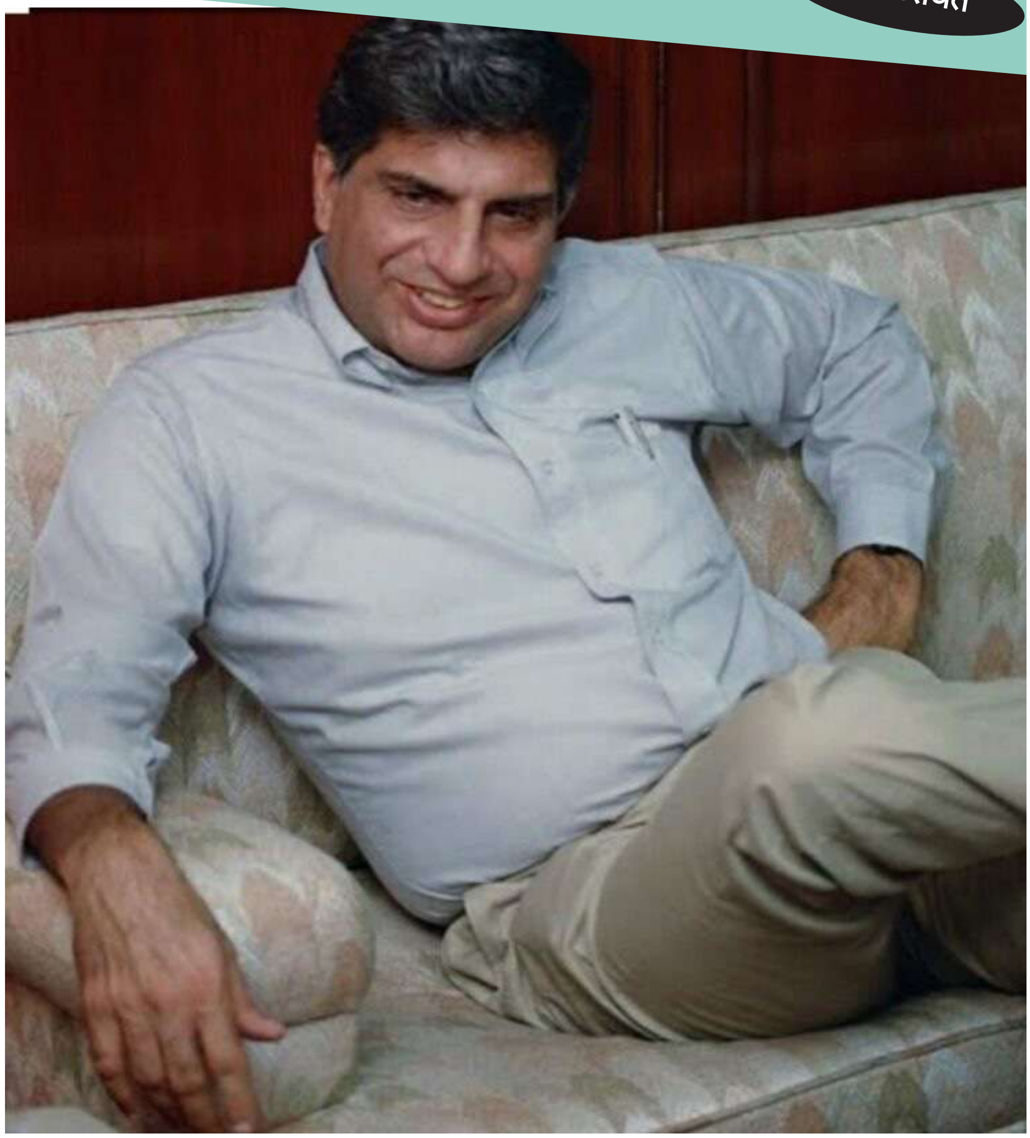

उदाहरण के तौर पर, टाटा मोटर्स ने न केवल पारंपरिक वाहनों का उत्पादन किया, बल्कि इलेक्ट्रिक वाहनों के विकास पर भी जोर दिया। यह रतन टाटा की दूरदर्शिता और नवाचार के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

८. नव उद्यमिता का समर्थनः

रतन टाटा सेवानिवृत्ति के बाद भी भारतीय अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। उन्होंने भारत में उभरते हुए स्टार्टअप्स और नव उद्यमियों का समर्थन किया है। Ola, Paytm, URanClap, और Lenskart जैसे स्टार्टअप्स में उन्होंने निवेश किया है, जिससे भारतीय उद्यमिता को बढ़ावा मिला है। उनका मानना है कि नए विचार और युवा उद्यमिता ही देश की आर्थिक प्रगति को गति दे सकते हैं।

रतन टाटा का आर्थिक दृष्टिकोण केवल लाभ अर्जित करने तक सीमित नहीं था। वे एक दूरदर्शी नेता हैं, जिन्होंने नैतिकता, समावेशी विकास, पर्यावरणीय जिम्मेदारी और तकनीकी नवाचार को हमेशा प्राथमिकता दी। उनका मानना है कि व्यवसाय का उद्देश्य समाज को समृद्ध और सशक्त बनाना है, और उनके इसी दृष्टिकोण ने भारत को आर्थिक रूप से आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनकी दूरदर्शिता और नैतिकता आधारित व्यापारिक नीतियाँ न केवल भारतीय उद्योग के लिए बल्कि पूरे देश के आर्थिक विकास के लिए प्रेरणादायक हैं। रतन टाटा का आर्थिक दृष्टिकोण एक ऐसे भारत का निर्माण करना है, जो आत्मनिर्भर हो, वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी हो, और हर वर्ग के लोगों के लिए विकास के अवसर प्रदान करे।

दिवाली 2024:
रोशनी का पर्व और उसकी महत्ता

दिवाली, जिसे दीपावली के नाम से भी जाना जाता है, भारत का सबसे प्रमुख और शुभ त्योहार है। यह त्योहार न केवल भारत में बल्कि विश्वभर में भारतीय समुदाय द्वारा बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। २०२४ में दिवाली ३१ नवंबर को मनाई जाएगी, और यह दिन हर साल की तरह हर्षोल्लास, उजाले, और आनंद का प्रतीक होगा। दिवाली का त्योहार मुख्यतः भगवान श्रीराम की अयोध्या वापसी से जुड़ा हुआ है। जब १४ वर्षों के वनवास और रावण के वध के बाद श्रीराम, माता सीता और भाई लक्ष्मण के साथ अयोध्या लौटे, तब नगरवासियों ने दीप जलाकर उनके स्वागत में पूरी नगरी को रोशनी से सजा दिया। यह दिन अंधकार पर प्रकाश और बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक माना जाता है। इस त्योहार का संबंध मां लक्ष्मी से भी है, जिन्हें धन और समृद्धि की देवी माना जाता है। दिवाली के दिन मां लक्ष्मी की पूजा की जाती है ताकि घर में धन, समृद्धि और सुख-शांति बनी रहे। व्यापारियों के लिए यह दिन विशेष होता है क्योंकि यह उनके नए वित्तीय वर्ष की शुरुआत का प्रतीक है।

दिवाली का त्योहार सदियों से हमारी संस्कृति, परंपरा, और सामाजिक ताने-बाने का हिस्सा रहा है। चाहे यह धार्मिक दृष्टिकोण से हो या सांस्कृतिक और सामाजिक स्तर पर, दिवाली हर किसी के जीवन में नई रोशनी और उत्साह का संचार करती है। २०२४ की दिवाली भी हर बार की तरह विशेष होगी, लेकिन इस बार इसे नई सोच और सामाजिक जागरूकता के साथ मनाने की जरूरत है। त्योहारों को मनाने का तरीका समय के साथ बदलता रहता है, और यह दोनों पीढ़ियों के अनुभवों और मूल्यों को दर्शाता है। जहाँ पुरानी पीढ़ी पारंपरिक रीति-रिवाजों और सामूहिकता पर जोर देती है, वहीं नई पीढ़ी आधुनिकता, पर्यावरणीय जागरूकता, और व्यक्तिगत प्राथमिकताओं के साथ त्योहारों का आनंद लेती है। दोनों दृष्टिकोणों में अपनी खासियतें हैं, और यह सामंजस्य बिठाकर त्योहारों को एक नई ऊंचाई पर ले जाने का अवसर हो सकता है।

ज्योतिषाचार्य डॉ. अरविंद मिश्र बताते हैं कि ३१ अक्टूबर २०२४ को सूर्योदय के समय पर चतुर्दशी तिथि रहेगी, इसके बाद दोपहर ०३:५२ से अमावस्या तिथि शुरू हो जाएगी जो १ नवंबर को शाम ०६:१६ बजे समाप्त होगी. दीपावली का त्योहार अमावस्या पर मनाया जाता है और अमावस्या ३१ और १ नवंबर दोनों दिन रहेगी. ज्योतिषाचार्य का कहना है कि अगर अमावस्या दोनों दिन प्रदोष को स्पर्श करें तो दूसरे दिन ही लक्ष्मी पूजन करना चाहिए. इसके अलावा अमावस्या और प्रतिपदा के युग्म को काफी शुभ और महाफलदायी माना गया है. ऐसे में ३१ अक्टूबर को नरक चतुर्दशी और १ अक्टूबर को दिवाली मनाना शास्त्र सम्मत है. लक्ष्मी पूजन १

नवंबर को ही किया जाना चाहिए.

लक्ष्मी पूजनः

छोटी दिवाली यानी नरक चतुर्दशी (रूप चतुर्दशी) का पूजन ३१ अक्टूबर को किया जाना चाहिए. शुभ समय शाम ६ बजे से ०८:२७ बजे तक रहेगा. वहीं दीपावली का पूजन १ नवंबर को किया जाना चाहिए. इस दिन लक्ष्मी पूजन का अतिशुभ समय ०६:२२ बजे से रात ०८:१९ बजे तक रहेगा. शुभ समय रात ०८:१९ बजे से १०:३३ बजे तक रहेगा.

सबसे पहले जिस स्थान पर पूजा करनी है, उसे अच्छे से साफ करें. इसके बाद आटे से चौक बनाएं फिर वहां एक चौकी रखें. चौकी पर स्वच्छ लाल कपड़ा बिछाएं. उस पर देवी लक्ष्मी और भगवान गणेश की मूर्तियों को रेशमी कपड़े और आभूषणों से सजाकर स्थापित करें. पहले भगवान गणेश की मूर्ति रखें और उनके दाहिने तरफ माता लक्ष्मी को बैठाएं.

आसन पर बैठें और अपने चारों ओर गंगाजल छिड़क लें. इसके बाद भगवान गणेश और माता लक्ष्मी के सामने दीप प्रज्जवलित करें. उन्हें रोली, अक्षत, फल, फूल, मिठाई, खील-बताशे आदि अर्पित करें. दक्षिणा चढ़ाएं. इसके बाद माता लक्ष्मी और गणपति के मंत्रों का जाप करें. फिर पूरे परिवार के साथ मिलकर आरती करें. इसके बाद शंख बजाएं. फिर सात घी के दीपक जलाकर मंदिर, घर के पूजा घर, अनाज रखने के स्थान पर, पानी के पास, तुलसी के पास, तिजोरी या धन के स्थान के पास और रसोई में रखें. इसके बाद बाकी के दीए जलाकर पूरे घर को सजाएं.

दिवाली का अर्थव्यवस्था पर प्रभावः

वाणिज्यिक महत्त्वः दिवाली का समय व्यापार और आर्थिक गतिविधियों के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। भारत में दिवाली के आसपास खरीदारी की मात्रा काफी बढ़ जाती है, खासकर सोना, चांदी, वस्त्र, और इलेक्ट्रॉनिक्स के क्षेत्र में। त्योहार के समय, बाजारों में उत्साह और चमक दिखाई देती है, जिससे छोटे और बड़े व्यापारियों को आर्थिक लाभ होता है।

ऑनलाइन शॉपिंग का प्रभावः आधुनिक युग में ऑनलाइन शॉपिंग प्लेटफार्म्स ने दिवाली को एक नई दिशा दी है। लोग अब आराम से घर बैठे, स्मार्टफोन या कंप्यूटर के जरिए, दिवाली के लिए कपड़े, मिठाइयाँ, सजावटी सामान, और उपहार खरीद सकते हैं। यह सुविधा लोगों को समय और पैसे दोनों बचाने में मदद करती है।

ग्रीन दिवाली की ओर बढ़ते कदमः

पिछले कुछ वर्षों में, पर्यावरणीय जागरूकता बढ़ने के साथ, लोगों में पटाखों से होने वाले प्रदूषण और स्वास्थ्य पर असर को लेकर चिंता बढ़ी है। अब सरकारें और सामाजिक संगठन लोगों को ग्रीन दिवाली मनाने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं। इसका मतलब हैः

पर्यावरण मित्र पटाखों का उपयोगः ये पटाखे कम ध्वनि और प्रदूषण उत्पन्न करते हैं।

प्राकृतिक सजावटः दिवाली की सजावट में कृत्रिम लाइट्स के बजाय मिट्टी के दीपक, प्राकृतिक रंगों से बनी रंगोली, और फूलों का उपयोग करना।

कम रोशनी वाली दिवालीः दिवाली पर अत्यधिक बिजली की खपत करने से बचना और ऊर्जा को बचाने के उपाय करना।

आधुनिक दिवाली में सामाजिक पहलूः

दिवाली के साथ कई सामाजिक संदेश भी जुड़े हुए हैं। इस त्योहार के दौरान लोग गरीब और जरूरतमंदों के साथ खुशी साझा करते हैं। विशेष रूप से अब कई लोग दिवाली पर गरीब बच्चों, अनाथालयों, और वृद्धाश्रमों में जाकर उपहार और मिठाइयाँ बाँटते हैं, जिससे यह त्योहार सचमुच 'सभी का' बन जाता है।

दिवाली और स्वास्थ्यः

पटाखों से होने वाले प्रदूषण के कारण श्वास संबंधी बीमारियाँ और एलर्जी बढ़ जाती हैं। इसलिए इस बार दिवाली पर कुछ बातों का ध्यान रखना जरूरी हैः

प्राकृतिक या ग्रीन पटाखों का उपयोग।

घरों में प्राकृतिक दीयों का उपयोग, जो न केवल सुंदर दिखते हैं, बल्कि पर्यावरण के लिए भी अच्छे होते हैं।

स्वस्थ भोजनः इस बार तली-भुनी मिठाइयों के बजाय घर पर बनी हल्की मिठाइयाँ और स्नैक्स खाएं, ताकि त्योहार के बाद स्वास्थ्य पर कोई बुरा प्रभाव न पड़े।

डिजिटल दिवालीः

डिजिटल तकनीक के विस्तार के साथ, अब दिवाली के समय लोग वर्चुअल दिवाली पार्टियों का आयोजन कर रहे हैं, खासकर तब, जब लोग अलग-अलग शहरों या देशों में रहते हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर ई-कार्ड्स, वर्चुअल पूजा, और ऑनलाइन दान जैसे विकल्पों का उपयोग करके भी लोग दिवाली का आनंद ले सकते हैं।

दिवाली के विशेष रिवाज और परंपराएँः

दीप जलानाः दिवाली का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है दीप जलाना। दीयों की रोशनी से घरों और गलियों को सजाया जाता है। यह प्रकाश अज्ञानता और अंधकार को मिटाने का प्रतीक है।

रंगोली बनानाः घरों के आंगन में सुंदर रंगोली बनाई जाती है, जो मां लक्ष्मी का स्वागत करने के लिए होती है।

मिठाइयाँ और उपहारः दिवाली पर मिठाइयों का आदान-प्रदान और उपहार देना शुभ माना जाता है। यह आपसी स्नेह और संबंधों को मजबूत करता है।

पटाखेः दिवाली पर पटाखे फोड़ना भी एक प्रमुख रिवाज है, लेकिन आज के समय में पर्यावरण और स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए लोगों को पटाखों से दूरी बनाने का आग्रह किया जा रहा है।

२०२४ की दिवाली कैसे विशेष होगी?

२०२४ की दिवाली में डिजिटल युग का बढ़ता प्रभाव देखने को मिलेगा। ऑनलाइन शॉपिंग, वर्चुअल दिवाली पार्टियां और ई-काड्र्स के माध्यम से त्योहार की खुशियों को साझा करने का नया तरीका लोकप्रिय हो रहा है। साथ ही, पर्यावरण संरक्षण को ध्यान में रखते हुए ग्रीन दिवाली का संदेश भी जोर पकड़ रहा है।

आज के समय में, दिवाली को केवल धार्मिक दृष्टि से ही नहीं बल्कि सामाजिक और पर्यावरणीय जिम्मेदारी के साथ मनाना महत्वपूर्ण है। हम सब मिल कर पटाखों के बिना, शांति, सद्भाव और प्रकृति के संरक्षण के साथ दिवाली मनाएं।

दिवाली के ऐतिहासिक और धार्मिक पहलूः

महाभारत और दिवालीः भगवान श्रीराम की अयोध्या वापसी के अलावा, दिवाली का संबंध महाभारत से भी जोड़ा जाता है। मान्यता है कि पांडव जब १२ वर्षों के वनवास और १ वर्ष के अज्ञातवास के बाद लौटे, तब हस्तिनापुर के लोगों ने दीप जलाकर उनका स्वागत किया।

समुद्र मंथनः दिवाली का एक और महत्वपूर्ण धार्मिक पक्ष समुद्र मंथन से जुड़ा हुआ है। ऐसा माना जाता है कि जब देवता और असुरों ने समुद्र मंथन किया, तब धन और वैभव की देवी लक्ष्मी प्रकट हुईं, और उसी दिन से उनकी पूजा दिवाली के दिन होती है।

दरअसल पौराणिक कथाओं के अनुसार इसी दिन भगवान विष्णु ने राजा महाबली को पाताल लोक का स्वामी बनाया था। जिसके बाद इंद्र ने स्वर्ग को सुरक्षित हाथों में जानकर प्रसन्नतापूर्वक दिवाली मनाई थी। इसी दिन श्री हरि विष्णु ने नरसिंह रूप धारणकर हिरण्यकश्यप का वध किया। श्री कृष्ण अवतार में भगवान ने नरकासुर नाम के क राक्षस का वध किया था, जिसके उपलक्ष्य में अगले दिन लोगों ने दिवाली का पर्व मनाया था। इसके अलावा इसी दिन समुद्रमंथन के बाद देवी लक्ष्मी व भगवान धन्वंतरि प्रकट हुए थे। दिवाली का त्योहार केवल धार्मिक नहीं बल्कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है। इस समय मौसम में बदलाव आना शुरू हो जाता है, और घरों की सफाई करना स्वास्थ्य के लिए अच्छा माना जाता है।

घरों में सफाई से वातावरण स्वच्छ होता है, जिससे रोगों का खतरा कम होता है। साथ ही, दीयों से निकलने वाला धुआं वातावरण में कीटाणुओं को नष्ट करने में सहायक होता है।

दिवाली की पाँच दिन की उत्सवधाराः

धनतेरस (२८ अक्टूबर २०२४)ः यह दिन समृद्धि और धन के लिए समर्पित है। लोग इस दिन सोना, चांदी, बर्तन, और अन्य मूल्यवान वस्तुएं खरीदते हैं।

नरक चतुर्दशी (२९ अक्टूबर २०२४)ः इसे छोटी दिवाली भी कहा जाता है। इस दिन भगवान कृष्ण द्वारा नरकासुर के वध की कथा मनाई जाती है।

लक्ष्मी पूजन (१ नवंबर २०२४)ः यह मुख्य दिवाली का दिन होता है, जब माता लक्ष्मी और भगवान गणेश की पूजा की जाती है।

गोवर्धन पूजा (२ नवंबर २०२४)ः इस दिन भगवान कृष्ण द्वारा गोवर्धन पर्वत उठाने की कथा का स्मरण किया जाता है।

भाई दूज (३ नवंबर २०२४)ः यह दिन भाई-बहन के रिश्ते को सम्मानित करने का होता है।

त्योहार

पुरानी पीढ़ी की परंपराएं और नई पीढ़ी का

त्योहारों को मनाने का तरीका पुराने और नए पीढ़ी के बीच समय के साथ बदलता गया है। यह बदलाव न केवल प्रौद्योगिकी की प्रगति के कारण हुआ है, बल्कि सामाजिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक परिवर्तनों का भी इसमें महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आइए हम समझते हैं कि किस प्रकार पुरानी और नई पीढ़ियाँ त्योहारों को मनाती हैं और उनके दृष्टिकोण में क्या अंतर हैः

पुरानी पीढ़ी - नई पीढ़ी का दृष्टिकोणः

परंपराओं का पालनः पुराने समय में त्योहारों को मनाने का मुख्य उद्देश्य पारंपरिक रीति-रिवाजों का पालन करना होता था। हर त्योहार का धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व होता था और उसे उसी अनुसार मनाया जाता था। उदाहरण के लिए, दिवाली पर घरों की गहन सफाई, मिट्टी के दीये जलाना, और पारंपरिक मिठाइयों को घर में बनाना आम बात थी। सामूहिकता और सामुदायिक भावना, पुरानी पीढ़ी के लोग त्योहारों को सामूहिकता के साथ मनाते थे। परिवार और समुदाय के लोग मिलकर पूजा-पाठ, आयोजन, और उत्सव में भाग लेते थे। संयुक्त परिवारों में त्योहारों का खास महत्व था क्योंकि यह अवसर परिवारों को एकजुट करता था।

पुरानी पीढ़ी के ल ोग त्योहारों को सादगी और मितव्ययिता के साथ मनाते थे। उपहार और सजावट सीमित होते थे, और त्योहारों में दिखावे या अतिरिक्त खर्च की तुलना में भावनाओं को अधिक महत्व दिया जाता था। आज की नई पीढ़ी के लिए त्योहारों का डिजिटलीकरण एक आम बात हो गई है। ऑनलाइन शॉपिंग, डिजिटल ग्रीटिंग कार्ड्स, और सोशल मीडिया पर त्योहारी बधाइयाँ देना नए दौर की प्राथमिकताएँ बन गई हैं। वर्चुअल दिवाली पार्टियां और डिजिटल पूजा के विकल्प भी अब नए रुझानों में शामिल हैं। नई पीढ़ी त्योहारों को व्यक्तिगत तरीके से मनाती है, जिसमें पारंपरिक रिवाजों के साथ आधुनिक तरीकों का समावेश होता है। पारंपरिक मिठाइयों की जगह आधुनिक स्नैक्स, और हाथों से बनी रंगोली की जगह LED लाइट्स और सजावट का प्रयोग आम हो गया है। पर्यावरणीय जागरूकता, नई पीढ़ी अब त्योहारों को पर्यावरण को ध्यान में रखते हुए मनाने पर जोर देती है। उदाहरण के लिए, ग्रीन दिवाली का कॉन्सेप्ट आजकल लोकप्रिय हो रहा है, जिसमें पर्यावरण-मित्र पटाखों का उपयोग, बिजली की खपत कम करने और प्लास्टिक-मुक्त सजावट पर ध्यान दिया जाता है।

सामाजिक संबंध और अंतरः

पुरानी पीढ़ी में सामुदायिक जुड़ावः पुराने समय में, समाज के सभी लोग त्योहार के समय एक-दूसरे से मिलते थे, एक साथ पूजा करते थे, और सामूहिक भोज का आयोजन होता था। पड़ोसियों और रिश्तेदारों के बीच सामूहिकता और आपसी सहयोग की भावना प्रबल होती थी। नई पीढ़ी में डिजिटल कनेक्शन, आज की पीढ़ी सोशल मीडिया, वॉट्सएप, और वर्चुअल प्लेटफॉर्म्स के जरिए त्योहारों की बधाई और आयोजन करती है। हालांकि यह लोगों को जोड़े रखने में सहायक है, लेकिन इससे व्यक्तिगत मेल-मिलाप में कमी आई है।

खरीदारी और उपहार देने की प्रवृत्तियाँः

पहले त्योहारों के लिए खरीदारी खासतौर पर बाजारों में जाकर की जाती थी। घर में हाथ से बने उपहार, मिठाइयाँ, और सजावट का विशेष महत्व होता था। नई पीढ़ी की ई-कॉमर्स आधारित खरीदारी अब ऑनलाइन शॉपिंग ने बाजारों की जगह ले ली है। फेस्टिव सीज़न में ई-कॉमर्स साइट्स पर भारी छूट और ऑफर्स दिए जाते हैं, और उपहारों को सीधे घर तक डिलीवर किया जाता है। यह सुविधा नई पीढ़ी के लिए समय और प्रयास बचाने का तरीका बन गई है।

परंपराओं में बदलावः

पुरानी पीढ़ी में रीतियों का कड़ाई से पालनः पुराने लोग हर त्योहार के रीति-रिवाजों का सख्ती से पालन करते थे, चाहे वह पूजा का तरीका हो या खास खानपान। उदाहरण के लिए, दिवाली पर लक्ष्मी-गणेश की विधिपूर्वक पूजा होती थी। नई पीढ़ी में लचीलापन नई पीढ़ी परंपराओं को नए दृष्टिकोण से देखती है। वे त्योहारों को अपनी सहूलियत के अनुसार अनुकूलित करते हैं। त्योहार का मुख्य उद्देश्य आनंद लेना होता है, भले ही वह पारंपरिक तरीकों से न हो।

U-Tropicana-Beach-Resort-in-Alibaug

One of the most beautiful resorts near Mumbai for family is the U Tropicana at Alibaug

गुलाब जामुन

सामग्रीः
खोया (मावा) - २५० ग्राम
मैदा - २ बड़े चम्मच
बेकिंग सोडा - १/४ चम्मच
चीनी - २ कप
पानी - १ कप
इलायची पाउडर - १/२ चम्मच
गुलाब जल - १ चम्मच
घी - तलने के लिए
विधिः

खोया को अच्छे से मसल लें और इसमें मैदा और बेकिंग सोडा मिलाएं। मुलायम आटा तैयार करें और छोटी-छोटी गोलियां बना लें। कढ़ाई में घी गर्म करें और धीमी आंच पर गुलाब जामुन को सुनहरा होने तक तलें। एक बर्तन में चीनी और पानी को मिलाकर चाशनी बनाएं। इसमें इलायची पाउडर और गुलाब जल डालें। तले हुए गुलाब जामुन को गरम चाशनी में डालें और १-२ घंटे के लिए छोड़ दें। स्वादिष्ट गुलाब जामुन तैयार है!

काजू कतली

सामग्रीः
काजू - २५० ग्राम
चीनी - १ कप
पानी - १/२ कप
घी - १ चम्मच
चांदी का वर्क - सजावट के लिए

विधिः काजू को पीसकर बारीक पाउडर बना लें। कढ़ाई में चीनी और पानी को मिलाकर चाशनी बनाएं। जब यह १ तार की चाशनी बन जाए तो इसमें काजू पाउडर डालें। धीमी आंच पर इस मिश्रण को लगातार चलाते रहें, जब तक कि यह गाढ़ा न हो जाए। इसमें थोड़ा घी मिलाएं और आटे जैसा बनाएं। अब इसे बेल कर एक समान मोटाई में फैलाएं और चांदी का वर्क लगाएं। ठंडा होने पर टुकड़ों में काटें और परोसें।

मठरी

सामग्रीः
मैदा - २ कप
अजवाइन - १/२ चम्मच
काली मिर्च पाउडर - १/२ चम्मच
नमक - स्वादानुसार
घी - १/४ कप
पानी - आवश्यकतानुसार
तेल - तलने के लिए

विधिः मैदा में अजवाइन, काली मिर्च पाउडर, नमक और घी डालकर अच्छे से मिलाएं।

थोड़ा-थोड़ा पानी डालते हुए सख्त आटा गूंथ लें। आटे से छोटी-छोटी लोइयां बनाएं और उन्हें बेलकर मठरी का आकार दें। कढ़ाई में तेल गरम करें और मठरी को धीमी आंच पर सुनहरा होने तक तलें। मठरी को ठंडा होने पर चाय के साथ परोसें।

लड्डू (बेसन के लड्डू)

सामग्रीः
बेसन - २ कप
घी - १ कप
चीनी पाउडर - १.५ कप
इलायची पाउडर - १/२ चम्मच
ड्राई फ्रूट्स (बादाम, काजू) - बारीक कटे हुए

विधिः कढ़ाई में घी गरम करें और उसमें बेसन डालकर धीमी आंच पर भूनें। बेसन को तब तक भूनें जब तक कि उसका रंग सुनहरा न हो जाए और उससे खुशबू न आने लगे। इसे ठंडा होने दें और फिर इसमें चीनी पाउडर, इलायची पाउडर और ड्राई फ्रूट्स मिलाएं। हाथ में थोड़ा मिश्रण लें और लड्डू का आकार दें।स्वादिष्ट बेसन के लड्डू तैयार हैं!

शकरपारे

सामग्रीः
मैदा - २ कप
सूजी - १/२ कप
घी - १/४ कप
चीनी - १ कप
पानी - १/२ कप
घी या तेल - तलने के लिए

विधिः मैदा और सूजी को मिलाएं, उसमें घी डालकर अच्छे से मिलाएं। थोड़ा पानी डालकर सख्त आटा गूंथ लें। आटे को बेल लें और छोटे-छोटे टुकड़ों में काट लें। कढ़ाई में घी या तेल गरम करें और शकरपारे को धीमी आंच पर सुनहरा होने तक तलें। एक बर्तन में चीनी और पानी मिलाकर चाशनी बनाएं। तले हुए शकरपारे को चाशनी में डालें और अच्छी तरह से मिलाएं। ठंडा होने पर परोसें। ये कुछ स्वादिष्ट और लोकप्रिय दिवाली व्यंजन हैं, जिन्हें आप अपने परिवार और दोस्तों के साथ बांट सकते हैं।

नमकपारे

सामग्रीः
मैदा - २ कप
नमक - स्वादानुसार
अजवाइन - १/२ चम्मच
घी - १/४ कप
पानी - आवश्यकता अनुसार
तेल - तलने के लिए

विधिः एक बर्तन में मैदा, नमक, अजवाइन और घी डालकर अच्छे से मिलाएं।

थोड़ा-थोड़ा पानी डालकर सख्त आटा गूंथ लें। आटे को बेल लें और चौकोर टुकड़ों में काट लें। कढ़ाई में तेल गरम करें और नमकपारे को धीमी आंच पर सुनहरा होने तक तलें। ठंडा होने पर एयरटाइट कंटेनर में रखें और दिवाली के समय परोसें।

सोहन पापड़ी

सामग्रीः
बेसन - १ कप
मैदा - १ कप
घी - १ कप
चीनी - २ कप
पानी - १ कप
इलायची पाउडर - १/२ चम्मच
कटे हुए ड्राई फ्रूट्स - १/४ कप

विधिः एक कढ़ाई में घी गरम करें और उसमें बेसन और मैदा डालकर धीमी आंच पर तब तक भूनें जब तक कि यह हल्का सुनहरा न हो जाए। एक दूसरी कढ़ाई में चीनी और पानी मिलाकर चाशनी बनाएं (२ तार की चाशनी)। भुने हुए मिश्रण को चाशनी में डालें और इसे अच्छी तरह मिलाएं। एक थाली में घी लगाकर मिश्रण को फैला दें और ऊपर से इलायची पाउडर और ड्राई फ्रूट्स छिड़कें। ठंडा होने पर सोहन पापड़ी के टुकड़े काट लें और परोसें।

रवा (सूजी) लड्डू

सामग्रीः
सूजी - २ कप
घी - १/२ कप
चीनी पाउडर - १ कप
दूध - १/४ कप
इलायची पाउडर - १/२ चम्मच
काजू और किशमिश - १/४ कप (कटे हुए)

विधिः एक कढ़ाई में घी गरम करें और उसमें सूजी डालकर हल्का सुनहरा होने तक भूनें।

भुनी हुई सूजी में इलायची पाउडर, चीनी और कटे हुए ड्राई फ्रूट्स डालें। अब इसमें थोड़ा-थोड़ा दूध डालें और मिश्रण को मिलाते रहें, जब तक यह लड्डू बनाने के लिए पर्याप्त सख्त न हो जाए। हाथों में थोड़ा मिश्रण लें और गोल-गोल लड्डू बनाएं। स्वादिष्ट रवा लड्डू तैयार हैं!

चकली

सामग्रीः
चावल का आटा - २ कप
बेसन - १/२ कप
तिल - १ चम्मच
अजवाइन - १/२ चम्मच
लाल मिर्च पाउडर - १ चम्मच
हींग - १ चुटकी
नमक - स्वादानुसार
घी या तेल - २ चम्मच (मोयन के लिए)
पानी - आवश्यकता अनुसार
तेल - तलने के लिए

विधिः एक बड़े बर्तन में चावल का आटा, बेसन, तिल, अजवाइन, लाल मिर्च पाउडर, हींग और नमक मिलाएं। इसमें घी या तेल डालकर अच्छे से मिक्स करें। अब थोड़ा-थोड़ा पानी डालते हुए मुलायम आटा गूंथ लें। चकली के साँचे में आटा भरें और तेल गरम होने पर चकली के आकार में तलें। चकली को धीमी आंच पर सुनहरी और कुरकुरी होने तक तलें। चकली को ठंडा होने दें और फिर एयरटाइट डिब्बे में स्टोर करें।

खस्ता कचौरी

सामग्रीः

भरावन के लिएः

मूंग दाल - १/२ कप (भिगोई हुई)

सौंफ - १/२ चम्मच

जीरा - १/२ चम्मच

हींग - चुटकीभर

धनिया पाउडर - १ चम्मच

लाल मिर्च पाउडर - १/२ चम्मच

नमक - स्वादानुसार

आटे के लिएः

मैदा - २ कप

घी - १/४ कप

नमक - स्वादानुसार

पानी - आवश्यकतानुसार

तेल - तलने के लिए

विधिः मैदा, नमक और घी को मिलाकर सख्त आटा गूंथ लें और इसे कुछ देर के लिए ढककर रख दें। एक पैन में सौंफ, जीरा और हींग को भूनें। फिर मूंग दाल और मसाले डाल कर अच्छे से मिलाएं। अब आटे से छोटी-छोटी लोइयां बनाएं और उनके अंदर तैयार भरावन भरकर कचौरी बनाएं। कढ़ाई में तेल गरम करें और कचौरियों को धीमी आंच पर कुरकुरी और सुनहरी होने तक तलें। गरमा गरम खस्ता कचौरी तैयार है, इसे हरी चटनी या इमली की चटनी के साथ परोसें।

सेव

सामग्रीः

बेसन - २ कप

हल्दी पाउडर - १/४ चम्मच

लाल मिर्च पाउडर - १ चम्मच

नमक - स्वादानुसार

अजवाइन - १/२ चम्मच

तेल - २ चम्मच (मोयन के लिए)

पानी - आवश्यकता अनुसार

तेल - तलने के लिए

विधिः बेसन में हल्दी, लाल मिर्च पाउडर, नमक, अजवाइन और तेल डालकर अच्छे से मिलाएं। थोड़ा-थोड़ा पानी डालकर मुलायम आटा तैयार करें। सेव के साँचे में आटा भरें और गरम तेल में मध्यम आंच पर सेव बनाएं। सेव को हल्का सुनहरा और कुरकुरा होने तक तलें। ठंडा होने के बाद सेव को एयरटाइट डिब्बे में रखें।

चिवड़ा (नमकीन)

सामग्रीः

पोहा (पतला) - २ कप

मूंगफली - १/२ कप

सूखे नारियल के टुकड़े - १/४ कप

किशमिश - २ चम्मच

करी पत्ता - १०-१२ पत्ते

राई - १/२ चम्मच

काजू- आवश्यकता अनुसार

हल्दी पाउडर - १/२ चम्मच

लाल मिर्च पाउडर - १/२ चम्मच

नमक - स्वादानुसार

चीनी - १ चम्मच (वैकल्पिक)

तेल - २ चम्मच

विधिः सबसे पहले पोहे को धीमी आँच पर सूखा भून लें ताकि वह कुरकुरा हो जाए। एक कढ़ाई में तेल गरम करें और उसमें राई और करी पत्ता तड़का दें। फिर मूंगफली, सूखे नारियल के टुकड़े डालकर सुनहरा होने तक भूनें। अब हल्दी, लाल मिर्च पाउडर, नमक और चीनी डालें और अच्छे से मिलाएं। भुने हुए पोहे को इस मिश्रण में डालकर हल्के हाथ से मिलाएं। चिवड़ा को ठंडा होने दें और एयरटाइट डिब्बे में स्टोर करें।

SOFAS

Comfortable seating you can share!

FROM ₹9,500

Wholesale Furniture Market
Ulhasnagar,Mumbai

सस्ते फर्नीचर के 5 थोक बाजार
फर्नीचर खरीदिए आधे दामों पर
एक से बढ़कर एक एंटीक आइटम

Contact: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in

मेष राशि

मेष राशि के जातकों के लिए नवंबर महीने की शुरुआत चिंता और परेशानियों से मुक्ति पाने के साथ होगी। इस दौरान आपके अटके कार्य किसी प्रभावी व्यक्ति की मदद से पूरे होंगे। आप अपने करियर-कारोबार आदि से जुड़ी समस्याओं का समाधान खोजने में कामयाब हो जाएंगे। इस दौरान किये गये प्रयासों का शुभ फल आपको माह के दूसरे सप्ताह से दिखाई देने लगेगा। इस दौरान आपका अपने कार्यक्षेत्र पर दबदबा कायम रहेगा और कारोबार में आप मनचाहा लाभ कमा सकेंगे। यात्राएं शुभ साबित होंगी। माह के मध्य तक आपका बिजनेस नई उंचाईयों को छूता नजर आएगा। कारोबार विस्तार की योजनाएं सफल साबित होंगी। पैसों की किल्लत से बचने के लिए धन का प्रबंधन करके चलना उचित रहेगा।

वृषभ राशि-

इस माह आपको अपने करियर-कारोबार के सिल सिले में लंबी अथवा छोटी दूरी की कई यात्राएं करनी पड़ सकती है। नौकरीपेशा लोगों की कार्यक्षेत्र में काफी व्यस्तता बनी रहेगी। हालांकि सुखद पक्ष यह है कि आपके द्वारा की गई मेहनत का आपको पूरा फल मिलेगा। कारोबारियों को माह की शुरुआत में आशा से कम लाभ हो सकता है लेकिन दूसरे सप्ताह से स्थितियां आपके पक्ष में बनती हुई बनती नजर आएंगी। इस दौरान सत्ता-सरकार और कोर्ट-कचहरी से जुड़े मामलों में अपेक्षा के अनुसार सफलता मिल `गी। माह की शुरुआत में आपको अचानक से कुछ चीजों पर बड़ी धनराशि खर्च करनी पड़ सकती है। आपको पैसों की किल्लत न हो, इससे बचने के लि ए धन का प्रबंधन करके चलना उचित रहेगा। माह के मध्य में आप अपने इष्टमित्रों एवं वरिष्ठ लोगों की मदद से करियर और कारोबार में अप्रत्याशित सफल ता प्राप्त कर सकते हैं।

मिथुन राशि-

मिथुन राशि के जातकों को माह के पूर्वार्ध में घर और बाहर दोनों जगह लोगों के साथ तालमेल बिठाकर चलना उचित रहेगा। माह के मध्य में आपके जीवन में बड़ा बदलाव देखने को मिल सकता है। यदि आप नौकरीपेशा व्यक्ति हैं और आप लंबे समय से अपनी नौकरी में बदलाव करने की सोच रहे थे तो इस दौरान आपको अच्छा अवसर मिल सकता है। इस दौरान आपको कारोबार में अच्छी प्रगति एवं लाभ होता नजर आएगा। कुल मिलाकर इस दौरान आपकी करियर और कारोबार में अच्छी पकड़ देखने को मिलेगी। लोग आपके निर्णयों की तारीफ करेंगे। इस दौरान आप जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपना बेस्ट देने में कामयाब होंगे। माह के उत्तरार्ध का समय थोड़ा प्रतिकूल रह सकता है। इस दौरान आपको लोगों के साथ बेवजह विवाद करने से बचते हुए सिर्फ और सिर्फ अपने लक्ष्य पर फोकस करने की आवश्यकता रहेगी।

कर्क राशि-

कर्क राशि के जातकों के लिए नवंबर महीने की शुरुआत थोड़ा उतार-चढ़ाव से भरा रहने वाला है। माह के मध्य में आपको आर्थिक दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है। यदि आप उच्च शिक्षा की प्राप्ति के लिए प्रयासरत हैं तो आपको इस संबंध में माह के उत्तरार्ध तक ही सफलता मिल पाएगी। माह के तीसरे सप्ताह में आपको कारोबार में लाभ की प्राप्ति तो होगी लेकिन इस दौरान आप अपनी सुख-सुविधा से जुड़ी चीजों पर खुले हाथ से खर्च भी करेंगे। रिश्ते-नाते को बेहतर बनाने के लिए नवंबर महीने की शुरुआत में अपनों के लिए थोड़ा समय अवश्य निकालें। इस दौरान लाइफ पार्टनर अथवा लव पार्टनर के साथ किसी बात को लेकर गलतफहमियां पैदा हो सकती हैं। हालांकि माह के मध्य तक आप संवाद के जरिए इसे दूर दूर करने में अंततः कामयाब हो जाएंगे। नवंबर के महीने में आपको अपने रिश्तों को बेहतर बनाए रखने के लिए आपको अहंकार करने से बचना होगा।

सिंह राशि-

सिंह राशि के जातकों को नवंबर के महीने में अपनी वाणी और व्यवहार में विनम्रता बनाए रखने की आवश्यकता रहेगी। इस माह यदि एक कदम पीछे करने पर चीजें बनती हों तो उसे बनाने में बिल्कुल न हिचकिचाएं। यदि आप ऐसा करने में कामयाब रहते हैं तो नवंबर महीने की शुरुआत में आने वाली बड़ी मुश्किलों को आसानी से दूर कर लेंगे। व्यवसाय से जुड़े लोगों को माह के पूर्वार्ध में आय और व्यय में संतुलन साधने की आवश्यकता रहेगी। नवंबर के दूसरे सप्ताह में नौकरीपेशा व्यक्तियों पर अचानक से कामकाज का अतिरिक्त बोझ आ सकता है, जिसे पूरा करने के लिए उन्हें अधिक परिश्रम और प्रयास करना पड़ सकता है। इस दौरान आपको भूमि-भवन, वाहन आदि के क्रय-विक्रय के लिए बड़ी धनराशि खर्च करनी पड़ सकती है। माह के मध्य में आपको कारोबार में अच्छा लाभ मिलेगा।

कन्या राशि-

इस माह आपके सोचे हुए कार्य समय पर पूरे होते हुए नजर आएंगे और आपको घर और बाहर दोनों जगह लोगों का सहयोग और समर्थन मिलेग। माह की शुरुआत से ही आपको सौभाग्य का साथ मिल ता हुआ नजर आएगा। ऐसे में करियर और कारोबार में आपको मनचाही सफलता और आर्थिक लाभ की प्राप्ति होगी। यदि आप लंबे समय से अपने कारोबार का विस्तार करने की सोच रहे थे तो इस माह आपकी यह मनोकामना पूरी हो जाएगी। यदि आप लंबे समय से बेरोजगार चल रहे थे तो रोजी-रोजगार की दिशा में बड़ी सफलता हाथ लग सकती है। माह के मध्य में नौकरीपेशा लोगों का कार्यक्षेत्र में कद और पद बढ़ सकता है। इस दौरान आपको किसी दूसरी संस्था से अच्छा आफर आ सकता है। हालांकि करियर और कारोबार में किसी भी बड़े बदलाव को करने से पहले अपने शुभचिंतकों की सलाह लेना न भूलें। माह के उत्तरार्ध में व्यवसाय से जुड़ी यात्राएं शुभ एवं लाभप्रद

साबित होंगी।

तुला राशि-

तुला राशि के जातकों के लिए नवंबर का महीना काफी महत्वपूर्ण साबित होने जा रहा है। इस माह आपके द्वारा लिये गये हर छोटे-बड़े फैसले का आपके आने वाले जीवन पर काफी असर पड़ेगा। माह की शुरुआत में आप अपने करियर-कारोबार को नई दिशा देने का प्रयास कर सकते हैं। खास बात यह कि ऐसा करते समय आपको स्वजनों का पूरा सहयोग और समर्थन मिलेगा। इस दौरान आप जीवन से जुड़ी बड़ी से बड़ी समस्याओं का सामाधान आसानी से खोजने में कामयाब हो जाएंगे। कुल मिलाकर इस माह आप अपने करियर और कारोबार को चमकाने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे और आपको आपकी मेहनत का पूरा फल भी मिलेगा। माह के मध्य में आपको किसी योजना आथवा कारोबार में किया निवेश बड़ा लाभ दिला सकता है। इस दौरान आपकी आर्थिक स्थिति काफी मजबूत रहेगी।

वृश्चिक राशि-

माह की शुरुआत में आपके द्वारा की गई मेहनत और प्रयास का फल उम्मीद से कम मिलेगा, जिसके चलते आपके मन में हताशा के भाव बने रहे सकते हैं। माह की शुरुआत में करियर और कारोबार के सिलसिले में लंबी अथवा छोटी दूरी की यात्रा संभव है। यात्रा थकान भरी और उम्मीद से कम फलदायी रहेगी। इस दौरान नौकरीपेशा लोगों को कार्यक्षेत्र में अपने गुप्त शत्रुओं से खूब सावधान रहने की आवश्यकता रहेगी क्योंकि वे आपके काम और आपकी छवि को बिगाड़ने का षडयंत्र रच सकते हैं। माह के पूर्वार्ध में आपको कारोबार में काफी उतार-चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है। इस दौरान आय के मुकाबले व्यय की अधिकता रहेगी, जिसके चलते आपको आर्थिक दिक्कतों का भी सामना करना पड़ सकता है। माह के उत्तरार्ध में इष्टमित्रों और परिजनों के सहयोग से आप अपने जीवन से जुड़ी समस्याओं का काफी हद तक सामाधान निकालने में कामयाब हो जाएंगे।

धनु राशि-

धनु राशि के जातकों के लिए नवंबर का महीना थोड़ा उतार-चढ़ाव लिए रहने वाला है। इस माह आप कभी घी घना तो कभी सूखा चना तो कभी वो भी मना जैसी स्थितियों से गुजर सकते हैं। माह की शुरुआत में आपको आर्थिक चिंता घेरे रहेगी। इस दौरान अचानक आपके सिर पर कुछेक बड़े खर्च आ जाएंगे, जिसे पूरा करने के लिए आपको उधार लेने की नौबत आ सकती है। करियर-कारोबार की दृष्टि से आपको पूरे माह सचेत रहने की आवश्यकता रहेगी। नवंबर महीने के पूर्वार्ध में नौकरीपेशा लोगों को कार्यक्षेत्र में अनचाहे बदलाव का सामना करना पड़ सकता है। इस दौरान आपके विरोधी सक्रिय रहेंगे और आपके कामकाज में बाधा डालने का प्रयास कर सकते हैं। माह के मध्य में आपको कामकाज के सिलसिले में लबी अथवा छोटी दूरी की यात्रा करनी पड़ सकती है। इस दौरान आप अपनी क्षमता से अधिक जिम्मेदारी लेने का रिस्क उठा सकते हैं, जिसके पूरा न होने पर आपको अपमानित होना पड़ सकता है। व्यवसाय की दृष्टि से नवंबर के मध्य का समय आपके लिए शुभ साबित होगा। इस दौरान आप अपने कारोबार में मनचाहा लाभ उठा सकेंगे। यदि आप अपनी नौकरी अथवा व्यवसाय में बदलाव का प्लान बना रहे हैं तो आपको इसके लिए उचित समय आने का इंतजार करना उचित रहेगा।

मकर राशि-

मकर राशि के जातकों के लिए नवंबर महीने की शुरुआत थोड़ी आपाधापी भरी रह सकती है। इस दौरान मकर राशि के जातकों को सोचे हुए कार्यों को समय पर पूरा करने के लिए अधिक परिश्रम और और भागदौड़ करनी पड़ सकती है। माह की शुरुआत में भूमि-भवन से जुड़े मामले आपकी चिंता का कारण बनेंगे। पैतृक संपत्ति की प्राप्ति में अड़चनें आ सकती है। इस दौरान आपकी पिता के साथ किसी बात को लेकर अनबन हो सकती है। माह के पूर्वार्ध में करियर-कारोबार से जुड़ी समस्याएं और खराब सेहत को लेकर मन परेशान रहेगा। इस दौरान स्वास्थ्य संबंधी किसी भी दिक्कत को इग्नोर न करें अन्यथा अस्पताल के चक्कर तक लगाने पड़ सकते हैं। माह के पूर्वार्ध में आपको अपनी सेहत और सामान का विशेष ख्याल रखना होगा अन्यथा शारीरिक पीड़ा के साथ आर्थिक हानि भी झेलनी पड़ सकती है। विशेष रूप से यात्रा आदि के दौरान अपने सामान का विशेष ख्याल रखें। यदि आप पार्टनरशिप में कारोबार करते हैं तो माह के दूसरे सप्ताह में साझेदार के साथ किसी बात को लेकर मतभेद हो सकता है। इस दौरान आपको धन का लेनदेन और कागज संबंधी कार्य करते समय खूब सावधानी बरतने की आवश्यकता रहेगी। मकर राशि के जातकों के लिए नवंबर महीने का उत्तरार्ध थोड़ा राहत भरा रहेगा। इस दौरान आपके लंबे समय से अटके कार्य किसी प्रभावी व्यक्ति की मदद से पूरे होंगे। बेरोजगार लोगों को रोजगार की प्राप्ति होगी। धन लाभ से आर्थिक स्थिति मजबूत होगी।

कुंभ राशि-

इस माह आपको तमाम तरह की समस्याओं से न जूझना पड़े और मनमाफिक सफलता की प्राप्ति हो, इसके लिए आपको शुरुआत से अपने समय, धन, उर्जा आदि का प्रबंधन करके चलना होगा। नवंबर महीने के पहले सप्ताह में आपको करियर-कारोबार के लिए लंबी अथवा छोटी दूरी की यात्रा करनी पड़ सकती है। यात्रा सुखद एवं लाभप्रद साबित होगी। इस दौरान आपके प्रभावी लोगों के संबंध स्थापित होंगे, जिनकी मदद से भविष्य में लाभदायक योजनाओं से जुड़ने का अवसर प्राप्त होगा। इस दौरान जहां व्यवसाय से जुड़े लोगों को उम्मीद से कहीं ज्यादा कारोबार में लाभ प्राप्त होगा वहीं नौकरीपेशा लोगों की आय के अतिरिक्त स्रोत बनेंगे। नवंबर महीने के मध्य का समय करियर-कारोबार की दृष्टि से चुनौती भरा रह सकता है। इस दौरान आपको अपने कंपटीटर से कड़ा मुकाबला करना पड़ सकता है। हालांकि मुश्किल भरे समय में आपके शुभचिंतक एवं परिजन आपकी मदद के लिए हमेशा साथ खड़े रहेंगे। जिनकी मदद से अंततः आप सभी चुनौतियों से पार पाने में कामयाब हो जाएंगे। नवंबर महीने के उत्तरार्ध का समय रोजी-रोजगार की दृष्टि से अत्यंत ही शुभ साबित होगा। इस दौरान बेरोजगार लोगों को रोजगार की प्राप्ति होगी। कारोबार में खासा मुनाफा होगा। कुल मिलाकर आर्थिक स्थिति मजबूत होगी।

मीन राशि-

मीन राशि के जातकों के लिए नवंबर का महीना मिश्रित फलदायी है। इस माह साझेदारी में व्यवसाय करने वालों को अपने पार्टनर की तरफ से कुछेक मुश्किलें आ सकती हैं। आपका साझेदार कारोबार में खलल डाल सकता है। इस माह आपको उन लोगों से उचित दूरी बनाकर चलने की आवश्यकता होगी जो अक्सर नकारात्मकता की बात करते हैं। नवंबर महीने की शुरुआत में जोखिम भरी योजनाओं में भूलकर भी धन निवेश न करें अन्यथा आर्थिक हानि झेलनी पड़ सकती है। नौकरीपेशा लोगों को भी इस दौरान कार्यक्षेत्र में अपना काम बेहतर तरीके से समय पर पूरा करने की कोशिश करनी चाहिए अन्यथा आप अपने बॉस के गुस्से के शिकार हो सकते हैं।माह के मध्य तक आपके सिर पर कामकाज का खासा दबाव बना रहेगा। इस दौरान व्यवसाय से जुड़े लोगों को बाजार में आई मंदी से जूझना पड़ सकता है। नवंबर महीने का तीसरा सप्ताह आपके लिए थोड़ा राहत भरा रह सकता है। इस दौरान करियर और कारोबार पटरी पर आता हुआ नजर आएगा। इस दौरान रोजी-रोजगार के सिलसिले में की गई यात्राएं शुभ एवं लाभप्रद साबित होंगी। संतानपक्ष की उपलब्धि से आपका मान-सम्मान बढ़ेगा। सेहत और संबंध की दृष्टि से नवंबर महीने के पूर्वार्ध का समय थोड़ा प्रतिकूल रहने वाला है। इस दौरान जहां पुरानी बीमारी के दोबारा उभरने से शारीरिक पीड़ा बनी रहेगी, वहीं स्वजनों की उपेक्षा से मन चिंतित और दुःखी रहेगा।

सफेद रेगिस्तान और सांस्कृतिक धरोहर कच्छ

कच्छ गुजरात का एक अनूठा और प्रसिद्ध जिला है। यह क्षेत्र भारत का सबसे बड़ा जिला है और अपनी भौगोलिक विविधता और सांस्कृतिक समृद्धि के कारण पर्यटकों के बीच बेहद लोकप्रिय है। गुजरात के कच्छ जिसके उत्तर पूर्व में कच्छ का रन स्थित है। यह एक नमकीन, दलदली और वीरान जगह है। यह पश्चिमी मध्य भारत से शुरू होकर दक्षिणी पाकिस्तान की सीमा को स्पर्श करता है। प्राचीन समय में यह अरब सागर का भाग था लेकिन अधिक भूकंप आने के कारण यह स्थल समुद्र तट से हल्का ऊपर आ गया है और चारों तरफ से बंद हो गया है।

रण ऑफ कच्छ एक बड़ा सफेद नमक का रेगिस्तान है, जो मानसून के बाद सूख जाता है और एक विशाल सफेद समुद्र की तरह दिखता है। यह दुनिया के सबसे बड़े नमक रेगिस्तानों में से एक है। रण में पर्यटक सूर्योदय और सूर्यास्त के समय सफेद रेगिस्तान की खूबसूरती का आनंद लेते हैं। नवंबर से फरवरी तक कच्छ में रण उत्सव मनाया जाता है, जिसमें पर्यटक स्थानीय हस्तशिल्प, लोक संगीत, नृत्य, ऊंट की सवारी और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आनंद लेते हैं। रण उत्सव के दौरान पर्यटक पारंपरिक कच्छी भोजन और संस्कृति का अनुभव कर सकते हैं।

कच्छ की संस्कृति बहुत समृद्ध और रंग-बिरंगी है। यहां के लोग पारंपरिक कच्छी वस्त्र पहनते हैं और हस्तशिल्प, खासकर कढ़ाई, बंधनी (टाई-डाई), और मिट्टी की कला के लिए जाने जाते हैं। यहां के

लोक नृत्य और संगीत जैसे गरबा, रास और तिमली बहुत प्रसिद्ध हैं। कच्छ के लोग पारंपरिक त्योहारों जैसे नवरात्रि, मकर संक्रांति, और होली को बहुत धूमधाम से मनाते हैं। कच्छ का सफर संस्कृति, प्राकृतिक सुंदरता और रोमांच का अद्वितीय संगम है, जहां हर पर्यटक को कुछ नया और खास अनुभव होता है।

मुख्य पर्यटन स्थल

धोलावीराः धोलावीरा कच्छ में स्थित एक महत्वपूर्ण पुरातात्विक स्थल है, जहां सिंधु घाटी सभ्यता के अवशेष पाए गए हैं। यह जगह इतिहास और पुरातत्व में रुचि रखने वाले लोगों के लिए बहुत खास है।

भुजः कच्छ का प्रमुख शहर भुज है, जो कच्छ के इतिहास और संस्कृति का केंद्र है। यहां आप आइना महल, कच्छ संग्रहालय, प्राग महल, और भुजिया किला जैसी ऐतिहासिक जगहों का दौरा कर सकते हैं।

मांडवी बीचः मांडवी एक शांत समुद्र तट है, जो अपने साफ पानी और सुंदर वातावरण के लिए जाना जाता है। यहां पर्यटक ऊंट की सवारी, वाटर स्पोर्ट्स और बीच के आसपास बने शानदार महलों का आनंद ले सकते हैं।

कालोडूंगरः यह कच्छ का सबसे ऊंचा पहाड़ है,

जहां से रण का अद्भुत दृश्य दिखाई देता है। यहां से सफेद रेगिस्तान का नजारा बेहद शानदार होता है।

वन्य जीवन और कच्छ का रण

कच्छ का रण विभिन्न प्रकार के वन्य जीवों का घर है। यहां आप वाइल्ड ऐस सैंक्चुरी में जंगली गधों, भेड़ियों, लोमड़ियों, और कई अन्य जानवरों को देख सकते हैं। रण में कई प्रकार के प्रवासी पक्षी जैसे फ्लेमिंगो, क्रेन और पेलिकन भी देखे जा सकते हैं, जिससे यह पक्षी प्रेमियों के लिए भी एक आकर्षक स्थल बन जाता है।

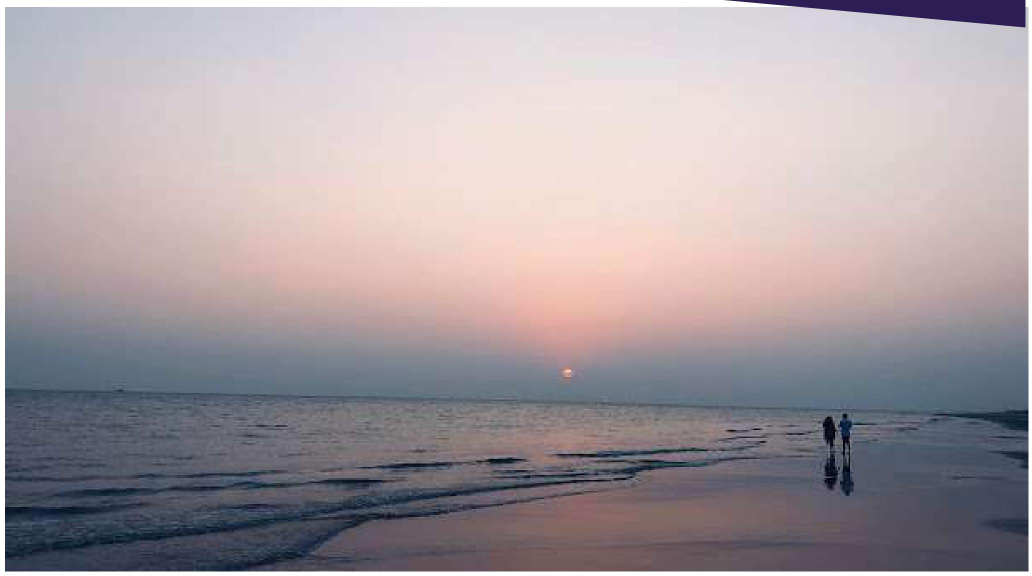

कच्छ का खानपान

कच्छ की प्रसिद्ध खाने की चीजों में धोकला, फाफड़ा, हांडी खिचड़ी, कच्छी दाल, और सेव तमेटा शामिल हैं। यहां का खाना थोड़ा तीखा होता है और गुजराती थाली में कई प्रकार की चीजें मिलती हैं।

यहां की मिठाइयों में मोहनथाल, कच्छी हलवा और घेवर विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं।

कच्छ कैसे पहुंचें

हवाई मार्गः कच्छ का निकटतम हवाई अड्डा भुज है, जो देश के प्रमुख शहरों से जुड़ा हुआ है।

रेल मार्गः भुज रेलवे स्टेशन भारत के अन्य हिस्सों से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है।

सड़क मार्गः गुजरात का सड़क नेटवर्क कच्छ तक अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है। आप अहमदाबाद से भुज तक बस या टैक्सी द्वारा पहुंच सकते हैं।

कच्छ घूमने का सबसे अच्छा समय

कच्छ घूमने के लिए सबसे अच्छा समय नवंबर से फरवरी तक का होता है, जब रण उत्सव आयोजित किया जाता है और मौसम ठंडा व सुहावना होता है।

कच्छ में रहने और खर्च की जानकारीः

रहने की व्यवस्था (Accommodation):

कच्छ में आपके बजट और सुविधा के आधार पर कई प्रकार की रहने की व्यवस्था उपलब्ध है, खासकर रण उत्सव के दौरान।

टेंट सिटाr (Tent City, **रण उत्सव में)**

रण उत्सव के समय, रण के पास टेंट सिटी बनाई जाती है, जहां पर्यटकों के लिए विभिन्न प्रकार के लग्जरी टेंट्स होते हैं। ये टेंट्स अलग-अलग श्रेणियों में उपलब्ध होते हैंः

प्रिमियम और डीलक्स टेंट्सः इनमें सभी आधुनिक सुविधाएं होती हैं जैसे एसी, निजी बाथरूम, फर्नीचर, भोजन की व्यवस्था और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का हिस्सा बनने का मौका।

खर्चः एक रात का खर्च लगभग ₹७,००० से

₹१५,००० प्रति व्यक्ति (डिपेंडिंग ऑन लग्जरी लेवल और सीजन) हो सकता है। यह पैकेज भोजन, सांस्कृतिक गतिविधियां और साइटसीइंग भी शामिल करता है।

(ख) होटेल्स और रिसॉर्ट्स (Hotels and Resorts)

कच्छ के प्रमुख शहरों जैसे भुज और धोलावीरा में विभिन्न प्रकार के होटेल्स और रिसॉर्ट्स उपलब्ध हैं। यहां आप अपने बजट के अनुसार ठहर सकते हैं:

लक्जरी होटेल्स: ५-स्टार या ४-स्टार होटेल्स में ठहरने की सुविधा और सेवाएं उच्च श्रेणी की होती हैं।

खर्च: ₹४,००० से ₹१०,००० प्रति रात।

मिड-रेंज होटेल्स: ३-स्टार होटेल्स या अच्छे रिसॉर्ट्स जहां साफ-सुथरी व्यवस्था और अच्छा भोजन उपलब्ध होता है।

खर्च: ₹२,००० से ₹५,००० प्रति रात।

बजट होटेल्स और गेस्ट हाउस: यदि आपका बजट कम है, तो कच्छ में कई छोटे होटेल्स और गेस्ट हाउस भी हैं।

खर्च: ₹८०० से ₹२,००० प्रति रात।

(ग) होमस्टे (Homestays)

अगर आप स्थानीय कच्छी संस्कृति का अनुभव करना चाहते हैं, तो कच्छ के कई गांवों में होमस्टे उपलब्ध हैं। यह कच्छ के लोगों के साथ रहने और उनकी संस्कृति को नजदीक से समझने का एक अच्छा तरीका है।

खर्च: ₹१,००० से ₹३,००० प्रति रात, जिसमें स्थानीय भोजन और मेहमाननवाजी शामिल होती है।

२. खाने का खर्च (इदद् ण्दूे):

कच्छ में खाने का खर्च आपके खाने की पसंद और जगह के अनुसार बदलता है।

लक्जरी होटेल्स और रिसॉर्ट्स: यहां आप बढ़िया गुजराती थाली या अंतरराष्ट्रीय भोजन का आनंद ले सकते हैं। एक व्यक्ति का भोजन लगभग ₹५०० से ₹२,००० तक हो सकता है।

मिड-रेंज रेस्टोरेंट्स: यहां आप अच्छे स्थानीय और पारंपरिक भोजन का आनंद ₹३०० से ₹७०० प्रति व्यक्ति में ले सकते हैं।

लोकल ढाबा और स्ट्रीट फूड: कच्छ में कई छोटे रेस्टोरेंट और ढाबे हैं जहां आपको स्वादिष्ट गुजराती खाना मिल सकता है। यहां भोजन का खर्च ₹१०० से ₹३०० प्रति व्यक्ति हो सकता है। स्ट्रीट फूड और स्थानीय स्नैक्स जैसे फाफड़ा, ढोकला, और कच्छी दाबेली बहुत लोकप्रिय हैं।

३. यात्रा का खर्च (Travel Costs):

स्थानीय परिवहन: आप कच्छ के भीतर स्थानीय परिवहन के लिए बसें, ऑटो-रिक्शा, और टैक्सी का उपयोग कर सकते हैं। ऑटो-रिक्शा और टैक्सी का किराया यात्रा की दूरी के आधार पर ₹१०० से ₹५०० के बीच हो सकता है।

कार रेंटल: यदि आप अधिक स्वतंत्रता चाहते हैं, तो आप कार किराए पर भी ले सकते हैं, जिसका दैनिक किराया ₹१,५०० से ₹३,००० तक हो सकता है (ड्राइवर और फ्यूल चार्जेस को मिलाकर)।

पैकेज टूर: यदि आप रण उत्सव के दौरान आते हैं, तो कई टूर ऑपरेटर्स पूरा पैकेज देते हैं जिसमें साइटसीइंग, ट्रांसपोर्ट और ठहरने का खर्च शामिल होता है। यह पैकेज ₹१०,००० से ₹३०,००० प्रति व्यक्ति के आसपास हो सकता है, आपकी यात्रा की अवधि और सुविधाओं के आधार पर।

४. कुल खर्च का अनुमान (Total Estimated Cost):

बजट यात्रा: यदि आप बजट यात्रा कर रहे हैं, तो २-३ दिन की यात्रा में प्रति व्यक्ति लगभग ₹५,००० से ₹१०,००० का खर्च हो सकता है, जिसमें होटेल, भोजन और साइटसीइंग शामिल है।

मिड-रेंज यात्रा: मिड-रेंज होटेल्स, आरामदायक भोजन, और रण उत्सव में भाग लेने के लिए प्रति व्यक्ति ₹१०,००० से ₹२०,००० का खर्च हो सकता है।

लक्जरी यात्रा: यदि आप लक्जरी टेंट सिटी या ५-स्टार होटेल्स में रुकते हैं और सभी सुविधाओं का आनंद लेते हैं, तो प्रति व्यक्ति ₹२०,००० से ₹४०,००० या उससे अधिक का खर्च हो सकता है।

'श्रीदेवी कपूर चौक'

दिवंगत एक्ट्रेस श्रीदेवी के सम्मान में मुंबई के लोखंडवाला के एक जंक्शन को 'श्रीदेवी कपूर चौक' का नाम दिया गया है। श्रीदेवी जब जीवित थीं, तब इसी मार्ग पर वॉक करती थीं। उनकी अंतिम यात्रा भी यहीं से होकर गुजरी थी। इसके अलावा इसी मार्ग पर स्थित ग्रीन एकर्स टावर में श्रीदेवी रहा करती थीं। श्रीदेवी के पति और मशहूर फिल्म मेकर बोनी कपूर ने अपनी छोटी बेटी खुशी कपूर और वेटरन एक्ट्रेस शबाना आजमी की मौजूदगी में इस चौक का अनावरण किया। बता दें, BMC और स्थानीय लोग की अनुशंसा और सहमति पर ही इस जगह को श्रीदेवी चौक का नाम दिया गया है।

श्रीदेवी का निधन २४ फरवरी को रात करीब ११.३० बजे दुबई के जुमैरा एमिरेट्स टावर होटल के रूम नंबर २२०१ में हुआ था। हालांकि, इंडिया में यह खबर २५ फरवरी की रात करीब २ बजे पहुंची। २० फरवरी को श्रीदेवी पति बोनी कपूर के भांजे मोहित मारवाह की शादी में शामिल होने दुबई गई थीं। शादी के बाद २२ फरवरी को कपूर परिवार मुंबई लौट आया, लेकिन श्रीदेवी वहीं रुक गईं। दो दिन बाद यानी २४ फरवरी को बोनी श्रीदेवी को सरप्राइज करने के लिए दोबारा दुबई पहुंचे। वे उन्हें डिनर पर ले जाना चाहते थे। पति-पत्नी ने करीब आधे घंटे बात की और फिर श्रीदेवी फ्रेश होने बाथरूम में चली गईं। लेकिन जब १५ मिनट तक वे बाहर नहीं आईं तो बोनी ने उन्हें दो-तीन बार आवाज दी। उसके बाद भी जवाब नहीं मिला तो उन्होंने बाथरूम में जाकर देखा। श्रीदेवी बाथटब में डूबी पड़ी थीं। शुरुआती दौर में मामला कार्डियक अरेस्ट का बताया गया।

१९८३ में आई फिल्म 'सदमा' और 'हिम्मतवाला' से श्रीदेवी को पहचान मिली। अपने ५१ साल लंबे फिल्मी करियर में श्रीदेवी ने कई एक्टर्स के साथ काम किया। इनमें कमल हासन, जितेन्द्र, ऋषि कपूर, सनी देओल, अनिल कपूर, अमिताभ बच्चन, मिथुन, विनोद खन्ना जैकी श्रॉफ, संजय दत्त, सलमान खान, शाहरुख खान और अक्षय कुमार जैसे एक्टर्स शामिल हैं।

शाहरुख खान ने छोड़ी स्मोकिंग

अभिनेता शाहरुख खान ने शनिवार, २ नवंबर को अपने ५९वें जन्मदिन पर एक प्रशंसक कार्यक्रम में धूम्रपान छोड़ने के बारे में बात की। जब उनके प्रशंसक उनके फैसले का जश्न मना रहे थे, तो कुछ ने धूम्रपान छोड़ने का इरादा भी व्यक्त किया। हालांकि, शाहरुख ने कहा कि वह इस संबंध में खुद को रोल मॉडल नहीं मानते हैं, क्योंकि उन्होंने ३० वर्षों तक बहुत ज़्यादा धूम्रपान किया है। कार्यक्रम के एक वीडियो में प्रशंसकों ने अपने आदर्श के पदचिन्हों पर चलने की प्रतिबद्धता व्यक्त की। जवाब में, शाहरुख ने कहा, 'जब जब ज़िंदगी में जैसा अच्छा लगे वो करो... मैं कोई ऐसा रोल मॉडल नहीं हूं... (जो भी आपको सही लगे, वही करें। मैं कोई रोल मॉडल नहीं हूं)।'

परोपकारी अच्युतानंद

कीस, विश्व का प्रथम और सबसे बड़ा डीम्ड विश्वविद्यालय बन चुका है। कीस भारत का वास्तविक तीर्थस्थल तथा व्यावहारिक रुप से शांतिनिकेतन बन चुका है। लगभग ६० वर्षों का प्रो.अच्युत सामंत का विदेह जीवन सत्य, अहिंसा, त्याग और तपस्या की अमर गाथा है। आदिवासी लोगों, जरुरतमंद लोगों और गरीबों के लिए तो वे दानवीर कर्ण बन चुके हैं। वे सभी के जीवन के सच्चे पथप्रदर्शक हैं। वे निष्काम भाव से नर सेवा को नारायण सेवा मानकर प्रतिदिन १६-१६ घण्टे काम करते हैं।

ओड़िशा की राजधानी भुवनेश्वर स्थित दो विश्वविख्यात शैक्षिक संस्थाओं कीट-कीस, जो आज कीट-कीस दो डीम्ड विश्वविद्यालय बन चुकी हैं, के संस्थापक तथा आदिवासी बाहुल्य कंधमाल के पूर्व सांसद महान् शिक्षाविद् प्रो.अच्युत सामंत शैक्षिक क्रांति के प्रणेता एवं निष्काम लोकसेवा के मसीहा हैं। वे मानवता के अग्रदूत हैं। कौन बनेगा करोड़पति के अनुसार वे एक निष्काम कर्मयोगी हैं। श्रीमद्भागवत के अनुसार सच्चा और निष्काम कर्मयोगी वह होता है जो समाज से जितना लेता है उससे कहीं अधिक समाज को लौटा देता है। ६० वर्षीय प्रो. अच्युत सामंत अबतक अपने जीवनकाल में जो कुछ भी शिक्षा, स्वास्थ्य, खेल, ओड़िया भाषा, साहित्य, कला, संस्कृति, सिनेमा तथा विज्ञान के माध्यम से दे चुके हैं वह न भूतो न ही भविष्यत् है।

भारत समेत विश्व के अलग-अलग विश्वविद्यालयों से मानद की कुल ६० डॉक्टरेट की डिग्री उन्हें मिल चुकी है जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि उनकी ख्याति कितनी है। वे हंसमुख, सहृयस, मृदुभाषी, अति सरल और सहज स्वभाव के एक मिलनसार व्यक्ति हैं। उनका जीवन एक खुली किताब है जिसका प्रत्येक पन्ना करुणा, दया, सहयोग, सहानुभूति, प्रेम, आत्मीयता और ऑर्ट ऑफ गिविंग का प्रत्यक्ष संदेश है। उनके मन में आदिवासी बच्चों के लिए, गरीबों और समाज के कमजोर वर्ग के लोगों के सर्वांगीण विकास के लिए अथाह अपनापन है, करुणा है, संवेदना है, समर्पण है और त्याग है।

निःस्वार्थ मानव सेवा करने के लिए और उसके लिए हमेशा अवसर ढूढना-उनकी सहज मनोवृत्ति है। वे एक सहृदय व्यक्ति हैं। वे रुके बिना और थके बिना मानवसेवा, समाजसेवा और लोकसेवा करते रहते हैं। उनका जीवन सेवा-भावना का यथार्थ आदर्श है। वे आदिवासी समुदाय के अनाथ , वंचित गरीबों, साधनहीनों और उपेक्षित बच्चों के लिए जीवित मसीहा हैं। वे उनके लिए अपनी ओर से (अपनी विश्वविख्यात संस्था कीस के माध्यम से) निःशुल्क समस्त आवासीय सुविधाओं के साथ-साथ उत्कृष्ट शिक्षा प्रदान करते हैं तथा आदिवासी बच्चों का सर्वांगीण विकास कर उन्हें देश का चरित्रवान, जिम्मेवार, कर्तव्यपरायण तथा ईमानदार नागरिक बनाते हैं। इसीलिए उनकी विश्वविख्यात संस्था कीस आज सच्चरित्र और देशहित के लिए जिम्मेदार मानव निर्माण करनेवाली एकमात्र शैक्षिक संस्था बन चुकी है जहां पर मानव गढ़े जाते हैं।

कीस, विश्व का प्रथम और सबसे बड़ा डीम्ड विश्वविद्यालय बन चुका है। कीस भारत का वास्तविक तीर्थस्थल तथा व्यावहारिक रुप से शांतिनिकेतन बन चुका है। लगभग ६० वर्षों का प्रो.अच्युत सामंत का विदेह जीवन सत्य, अहिंसा, त्याग और तपस्या की अमर गाथा है। आदिवासी लोगों, जरुरतमंद लोगों और गरीबों के लिए तो वे दानवीर कर्ण बन चुके हैं। वे सभी के जीवन के सच्चे पथप्रदर्शक हैं। वे निष्काम भाव से नर सेवा को नारायण सेवा मानकर प्रतिदिन १६-१६ घण्टे काम करते हैं। वे दीन-हीनों, झुग्गी-झोपड़ी में रहनेवाले गरीब लोगों, निरीह लोगों के साक्षात दिव्य पुरुष हैं। वे एक संवेदनशील व्यक्ति हैं। वे लोगों पर विश्वास करते हैं इसीलिए दूसरों से वे हमेशा विश्वास भी पाते हैं। उनके व्यक्तित्व का एक विलक्षण गुण यह है कि वे संतों के भी संत हैं। उनके समस्त गुण आदर्श महात्माओं के गुण हैं क्योंकि वे सरल,सहज,आत्मीय और सहृदय बनकर गरीबों की भलाई के लिए जो सोचते हैं, वहीं अपने कर्म में भी उतारे हैं। वे तन,मन और धन से प्रतिदिन सेवा करते हैं।

उनकी कथनी और करनी में कोई अंतर नहीं हैं। उनका त्यागी और मनस्वी जीवन आदर्श, अनुकरणीय और वंदनीय है। वे अपने अच्छे कार्यों की छाप दूसरों पर अमिट रुप से छोड़ देते हैं। वे लोगों के दिलों पर राज करते हैं। वे अपनी सेवा-धुन के भी पक्के हैं। अगर कोई उनको कटु शब्द भी कहता है तो उसे वे चुपचाप हंसते-हंसते सह लेते हैं। श्रीमद्भागवत के अनुसार वे आध्यात्मिक जीवन जीते हैं। वे मानवता के आलोकपुरुष हैं। वे हमेशा जगत गुरुओं, संत-महात्माओं, आचार्यों, ब्राह्मणों तथा विद्वानों का आदर करते हैं। उनका यह मानना है कि सच कह देना ही सत्य नहीं है और झूठ कह देना ही झूठ नहीं है। जिससे लोगों का सबसे अधिक हित हो वह वाणी सत्य है और जिस वाणी से सबसे अधिक किसी को दुख और कष्ट पहुंचे वह झूठ है। वे सेवा-समर्पण भाव से जनसेवा, लोकसेवा, मानवसेवा, गुरुसेवा, जगन्नाथ सेवा तथा हनुमान सेवा करते हैं। भारतवर्ष की वर्तमान युवा पीढ़ी और कारपोरेट जगत के भामाशाहों के तो प्रो.अच्युत सामंत आदर्श हैं,रोल मॉडल हैं। सभी उनके पदचिह्नों पर चलने के लिए संकल्प लेते हैं।

-अशोक पाण्डेय

अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के कल्याणार्थ संसदीय पैनल द्वारा कीट-कीस का हुआ अध्ययन दौरा

हाल ही में डॉ. फग्गन सिंह कुलस्ते के नेतृत्व में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के कल्याणार्थ संसदीय स्थायी समिति (२०२४-२५) ने कीट-कीस रविवार को केआईआईटी और केआईएसएस का अध्ययन दौरा किया। समिति के सदस्यों ने कीट डीम्ड विश्वविद्यालय के विभिन्न परिसरों का दौरा किया और कलिंगा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज (कीस डीम्ड विश्वविद्यालय) में भी कई विभागों का निरीक्षण किया। कीस के लगभग ४०,००० आदिवासी छात्र-छात्राओं की एक सभा को संबोधित करते हुए, डॉ. कुलस्ते ने कहा कि वे भारत और विदेशों में कई संस्थानों का दौरा किये हैं लेकिन कीस जैसा कुछ कभी उन्होंने कहीं नहीं देखा।

यहां के छात्रों द्वारा प्रदर्शित ऊर्जा और कौशल वास्तव में दूसरों के लिए प्रेरणादायक है। 'एक ही स्थान पर इतने सारे बच्चों को शिक्षित करना और साथ ही उनकी प्रतिभा का पोषण करना एक महत्त्वपूर्ण कार्य है।' उन्होंने आदिवासी छात्रों को निःशुल्क मिलनेवाली उत्कृष्ट शिक्षा और खेल में उत्कृष्ट प्रदर्शन के सुअवसर वह भी बच्चों की आदिवासी संस्कृति और परंपराओं को संरक्षित रखकर उन्हें हरप्रकार से सक्षम बनाने के लिए संस्थान के प्रयासों की सराहना की है। कीस भारत के लिए एक आश्चर्य और एक आदर्श संस्थान है। अन्य राज्यों को इस मॉडल को दोहराना चाहिए, और संसदीय समिति देश भर में कीस मॉडल को लागू करने की दिशा में काम करेगी-ऐसा डॉ. कुलस्ते ने कहा।

समिति की एक अन्य सदस्य, सांसद प्रतिमा मंडल ने अपनी प्रशंसा व्यक्त करते हुए कहा, कि वे कीस का दौरा कर कीस से बहुत प्रभावित हैं। शिक्षा सामाजिक और राष्ट्रीय विकास का एकमात्र मार्ग है और कीस आदिवासी समुदायों की शिक्षा और समग्र विकास को बढ़ावा देने में एक उदाहरण स्थापित करता है। इस संस्थान में आना एक दिव्य अनुभव जैसा है क्योंकि उन्होंने इन बच्चों के चेहरे पर भगवान जगन्नाथ के दर्शन किए। कार्यक्रम के आरंभ में कीट और कीस के संस्थापक प्रो.डॉ. अच्युत सामंत ने स्वागत भाषण दिया जबकि कीस डीम्ड विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर दीपक कुमार बेहरा ने धन्यवाद दिया।

आईआईटी भुवनेश्वर द्वारा वार्षिक खेल महोत्सव अश्वमेध का आयोजन

भुवनेश्वर, ४ नवंबर २०२४: भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) भुवनेश्वर का वार्षिक खेल महोत्सव, अश्वमेध, २ से ३ नवंबर २०२४ तक आयोजित किया गया था। यह कार्यक्रम स्पोर्ट्स काउंसिल ऑफ स्टूडेंट्स जिमखाना, आईआईटी भुवनेश्वर द्वारा आयोजित किया गया था। अश्वमेध के

चौथे संस्करण में दर्शकों की संख्या, प्रतियोगिताओं, कार्यक्रमों और ई-स्पोर्ट्स में भागीदारी में तेजी से वृद्धि देखी गई, जिससे यह ओडिशा के सबसे बड़े कॉलेज खेल उत्सवों में से एक बन गया। उत्सव में बास्केटबॉल, टेबल टेनिस, लॉन टेनिस, शतरंज, भारोत्तोलन, फुटबॉल, वॉलीबॉल, बैडमिंटन और अन्य खेल शामिल थे, जिसमें पूर्वी क्षेत्र के लगभग २३ कॉलेजों और संस्थानों के ७५० से अधिक खिलाड़ियों ने भाग लिया। प्रोफेसर श्रीपाद कर्मलकर, निदेशक, आईआईटी भुवनेश्वर ने उद्घाटन समारोह की शोभा बढ़ाई और गेंद को घुमाया। उन्होंने विद्यार्थियों को खेल भावना बनाए रखने के लिए प्रोत्साहित किया। उद्घाटन समारोह में प्रोफेसर राजेश रोशन दाश, डीन-स्टूडेंट अफेयर्स, डॉ. कोदंडा राम मंगीपुड़ी, स्टूडेंट जिमखाना के अध्यक्ष और डॉ. बंकिम चंद्र मंडल, खेल और खेल के संकाय सलाहकार भी उपस्थित थे। फेस्ट के मुख्य समन्वयक श्री अभिषेक जाखड़ ने कार्यक्रम का सफलतापूर्वक संचालन किया। उल्लेखनीय है कि पिछले वर्षों की तरह, आईआईटी भुवनेश्वर ने दो दिवसीय कार्यक्रम के अंत में फिर से चैंपियनशिप ट्रॉफी बरकरार रखी।

माननीय ओम बिड़ला द्वारा कीट स्कूल ऑफ पब्लिक पॉलिसी उद्घाटित

'भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है और इसकी विविधता ही इसकी ताकत है। एक अच्छी तरह से तैयार की गई सार्वजनिक नीति एक मजबूत राष्ट्र की नींव है, दुनिया अब 'वसुधैव कुटुम्बकम' या 'दुनिया एक परिवार है' के सिद्धांत पर आधारित शांति को बढ़ावा देने वाली नीतियों के लिए भारत की ओर देख रही है। उनके अनुसार वैश्विक मंच पर आज भारत की स्थिरता और प्रगति का डंका बज रहा है।उनके अनुसार आर्थिक और सामाजिक संपन्नता के माध्यम से ही देश स्थिरता की ओर आगे बढ़ सकता है। उन्होंने देश को आगे बढ़ाने में हर नागरिक के योगदान की आवश्यकता पर जोर दिया।

भारत के लोकसभा के स्पीकर माननीय ओम बिरला द्वारा गत रविवार को बतौर समारोह के मुख्य अतिथि कीट स्कूल ऑफ पब्लिक पॉलिसी उद्घाटित हो गया। उन्होंने अपने सारगर्भित संबोधन में भारत की लोकतांत्रिक प्रणाली की ताकत और पारदर्शी नीतियों की सराहना की। नागरिक-केंद्रित नीतियों की वकालत की जिसमें सभी हितधारकों को शामिल किया जाए, समान अधिकार सुनिश्चित किए जाएं और लोगों के प्रति जवाबदेह हों। अवसर पर हजारों की संख्या में उपस्थित शिक्षाविदों, नीति निर्माताओं, न्यायाधीशों और कीट के छात्र-छात्रों को संबोधित करते हुए मान्यवर बिड़ला जी ने देश के भविष्य को आकार देने में सार्वजनिक नीति के महत्त्व पर जोर दिया। उन्होंने कहा, 'भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है और इसकी विविधता ही इसकी ताकत है। एक अच्छी तरह से तैयार की गई सार्वजनिक नीति एक मजबूत राष्ट्र की नींव है, दुनिया अब 'वसुधैव कुटुम्बकम' या 'दुनिया एक परिवार है' के सिद्धांत पर आधारित शांति को बढ़ावा देने वाली नीतियों के लिए भारत की ओर देख रही है।

उनके अनुसार वैश्विक मंच पर आज भारत की स्थिरता और प्रगति का डंका बज रहा है।उनके अनुसार आर्थिक और सामाजिक संपन्नता के माध्यम से ही देश स्थिरता की ओर आगे बढ़ सकता है। उन्होंने देश को आगे बढ़ाने में हर नागरिक के योगदान की आवश्यकता पर जोर दिया। मान्यवर स्पीकर ने आदिवासियों और हासिए पर पड़े लोगों को सशक्त बनाने में उनके दृष्टिकोण और प्रयासों के लिए कीट-कीस के संस्थापक प्रो.डॉ. अच्युत सामंत की उन्मुक्त कण्ठ से सराहना की।

अपने संबोधन में सम्मानित अतिथि ओडिशा विधान सभा अध्यक्षा सुरमा पाढ़ी ने भविष्य के नेताओं को आकार देने और समृद्ध ओडिशा के लिए नीतियाँ बनाने में इस नए स्कूल की महत्त्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने अपने संबोधन में कहा, 'विकसित ओडिशा के लिए अच्छी नीति और मजबूत नेतृत्व आवश्यक है। यह स्कूल समय की मांग है। 'स्कूल आगामी शैक्षणिक सत्र से एक वर्षीय मास्टर प्रोग्राम की पेशकश करेगा। ज्ञान भागीदार भारतीय विश्व मामलों की परिषद और संयुक्त राष्ट्र प्रणाली स्टाफ कॉलेज हैं। ओडिशा प्रदेश सरकार के उपमुख्यमंत्री श्री के वी सिंहदेव ने शिक्षा में डॉ. सामंत के योगदानों की सराहना की। उन्होंने कहा, 'सार्वजनिक नीति लोगों के लिए है, व्यक्तिगत लक्ष्यों के लिए नहीं। ओडिशा भाग्यशाली है कि अच्युत सामंत शिक्षा के लिए काम कर रहे हैं।' ओडिशा के कानून, निर्माण और आबकारी मंत्री पृथ्वीराज हरिचंदन ने नए सार्वजनिक नीति स्कूल को 'कीट के मुकुट में एक और पंख' बताया। इक्वाडोर के पूर्व उपराष्ट्रपति ओटो रेमन सोननहोल्ज़नर स्पर ने मजबूत संस्थानों के निर्माण में विविधता के लिए विश्वास और सम्मान के महत्व पर

जोर दिया।

उद्घाटन समारोह में इटली के ट्यूरिन में संयुक्त राष्ट्र प्रणाली स्टाफ कॉलेज के निदेशक डॉ. जाफर जावन जैसे प्रमुख लोगों ने भी भाषण दिए, जिन्होंने स्कूल के शुभारंभ को 'कीट और भारत के लिए एक कीर्तिमान' बताया। उन्होंने सामाजिक परिवर्तन के प्रति समर्पण के लिए डॉ. सामंत की प्रशंसा की और सामाजिक परिवर्तन के लिए नेल्सन मंडेला परियोजना पर भविष्य के सहयोग सहित संयुक्त राष्ट्र और केआईआईटी के बीच चल रही साझेदारी पर प्रकाश डाला। भुवनेश्वर लोकसभा सांसद श्रीमती अपराजिता

षाड़ंगी ने डॉ. सामंत की असाधारण उपलब्धियों पर जोर देते हुए एक प्रेरक भाषण दिया। उन्होंने प्रो.सामंत की विनम्रता और शिक्षा के प्रति समर्पण की सराहना करते हुए कहा, 'अच्युत सामंत ने जो हासिल किया है, उसे हासिल करने के लिए एक पूरा जीवन पर्याप्त नहीं है। प्रो. सामंत ने दिखाया है कि जीवन का हर पल महत्वपूर्ण है।'

श्रीमती षाड़ंगी ने नए पब्लिक पॉलिसी स्कूल के महत्त्व पर भी प्रकाश डाला, जो ६० छात्रों को एक वर्षीय पाठ्यक्रम प्रदान करेगा। 'सार्वजनिक नीति अनिवार्य रूप से वह है जो सरकार करना या न करना चुनती है। जैसा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने २०१४ में कहा था, 'मैं न्यूनतम सरकार और अधिकतम शासन चाहता हूं।' उन्होंने कहा, 'यह लक्ष्य सही नीति डिजाइन के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है, और मुझे विश्वास है कि यह स्कूल उस यात्रा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।'

भारत में संयुक्त राष्ट्र के रेजिडेंट कोऑर्डिनेटर शोम्बी शार्प ने भी नए स्कूल के वैश्विक प्रभाव पर जोर दिया। उन्होंने डॉ. सामंत के दूरदर्शी नेतृत्व की प्रशंसा करते हुए कहा, 'यह संस्थान वैश्विक ज्ञान में योगदान देगा और कल के नेताओं को बढ़ावा देगा।' भारतीय विश्व मामलों की परिषद में अतिरिक्त सचिव नूतन कपूर महावर ने स्कूल को एक समयबद्ध पहल के रूप में वर्णित किया जो भारतीय शासन और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों दोनों को आकार देगा। उन्होंने कहा, 'यह स्कूल समकालीन मांगों के लिए एक दूरदर्शी प्रतिक्रिया है। यह विश्व नेताओं के बीच गहरे गठजोड़ को बढ़ावा देगा।'

पद्मश्री और फिल्म निर्माता डॉ. चंद्रप्रकाश द्विवेदी ने कहा कि सार्वजनिक नीतियां ऐसी होनी चाहिए जो राष्ट्र के कल्याण के लिए प्रतिबद्ध हों, जबकि केआईआईटी स्कूल ऑफ लॉ के प्रोफेसर एमेरिटस डॉ. एल एन मित्रा ने कहा कि, स्कूल भविष्य के नीति निर्माताओं को तैयार करेगा जो राष्ट्र के भाग्य को आकार देंगे। प्रो. डॉ. अच्युत सामंत ने मंतस्थ सभी विशिष्ट मेहमानों का संक्षिप्त परिचय देते हुए अपने संस्थानों को मिली मान्यता के लिए आभार व्यक्त किया और कहा कि भारत के लोकसभा के मान्यवर स्पीकर का कीट-कीस

का यह दूसरा दौरा है। प्रो. सामंत ने शिक्षा के माध्यम से सामाजिक उत्थान के लिए अपनी प्रतिबद्धता दोहराई जिसे संसद सहित विभिन्न नेताओं ने स्वीकार किया है। कार्यक्रम में कीट के कुलाधिपति डॉ. अशोक परीजा, कुलपति प्रोफेसर सरनजीत सिंह, एशिया सोसाइटी पॉलिसी इंस्टीट्यूट के वरिष्ठ निदेशक अक्षय माथुर सहित अन्य गणमान्य मौजूद थे। अवसर पर कटक मारवाड़ी समाज, भुवनेश्वर गुजराती समाज, मारवाड़ी महिला समिति, बिस्वास भुवनेश्वर के प्रतिनिधियों आदि ने भारत के लोकसभा के स्पीकर को अपनी-अपनी संस्थाओं की ओर से संवर्द्धित किया। ओड़िशा के नामचीन मधुकुंज कंपनी समूह के पितामह सज्जन अग्रवाल तथा कंपनी के निदेशक रामावतार अग्रवाल ने ओम बिड़ला जी को भगवान जगन्नाथ की चांदी की प्रतिमा भेंटकर उन्हें सम्मानित किया। आयोजन यादगार रहा।

लोक आस्था का महापर्वः छठ

भारत के इस इकलौते छठ महापर्व में एकसाथ सूर्य,जल और वायु तीनों की पूजा होती है।

लोक आस्था के चार दिवसीय कठोरतम महापर्व छठ का सर्वप्रथम शुभारंभ बिहार प्रांत से ही हुआ जिसे पहली बार पवित्र नदी गंगा के तट पर सामूहिक अर्घ्य से शुभारंभ हुआ था। आज भारत के सभी मेट्रो सिटीज से लेकर विदेशों में भी प्रतिवर्ष कार्तिक शुक्ल पक्ष की चतुर्थी से आरंभ होकर कार्तिक शुक्ल पक्ष की सप्तमी तक चलता है। यह कठोरतम महापर्व पूरी आस्था तथा विस्वास के साथ मनाया जाता है। गौरतलब है कि भारतवर्ष में जितने भी पर्व-त्यौहार मनाये जाते हैं उनमें एकमात्र छठ महापर्व ही ऐसा है जो कठोरतम महापर्व है जिसमें व्रतधारी महिलाएं और पुरुष ३६ घण्टे तक निराजल रहकर यह महापर्व मनाते हैं।

इस महापर्व का पौराणिक, सामाजिक तथा व्यक्तिगत महत्त्व भी है।भुवनेश्वर की पंजीकृत सामाजिक कल्याण संस्था विस्वास भुवनेश्वर के नये अध्यक्ष इंजीनियर राजकुमार के अनुसार पहली बार २०२४ के छठ महापर्व की शुरुआत ०५ नवंबर से नहाय-खाय,०६ नवंबर को खरना, ०७नवंबर को सूर्यदेव के सायंकालीन प्रथम सामूहिक अर्घ्य से तथा ०८ नवंबर को भोर के अंतिम अर्घ्य से हो रही है।सामूहिक अर्घ्य के लिए भुवनेश्वर बालीयात्रा मैदान के समीप कुआखाई छठघाट पर ७-८ नवंबर को भगवान सूर्यदेव के क्रमशः प्रथम एवं अंतिम अर्घ्य हेतु सभी प्रकार की तैयारियां पूरी हो चुकी हैं। इस वर्ष बिस्वास,भुवनेश्वर के अध्यक्ष इंजीनियर राजकुमार ने पहली बार इस सामूहिक आयोजन को सफल बनाने के लिए बिस्वास,भुवनेश्वर की महिला समिति तथा युवा वींग का भी गठन किया है जिनके सामूहिक सहयोग से इस वर्ष का दोनों सामूहिक अर्घ्य दान शानदार सफलता के साथ संपन्न होगा ऐसी उम्मीद की जा रही है।

इस कठेरतम महापर्व को प्रकृति के प्रत्यक्ष

देवता भगवान सूर्यदेव की बहन छठ परमेश्वरी की पूजा का भी महापर्व कहा जाता है। बिहार के औरंगाबाद जिले में पूरे भारत का इकलौता छठ पूजा मंदिर भी है जहां पर छठव्रती पहले दिन नहाय-खाय,दूसरे दिन खरना, तीसरे दिन शाम को भगवान सूर्यदेव को सायंकालीन पहला अर्घ्य देते हैं तथा चौथे दिन भोर में उगते हुए सूर्यदेन को अंतिम अर्घ्य देकर पारन करते हैं अर्थात् अपना व्रत तोड़ते हैं। छठ व्रतकरनेवालों को छठ परमेश्वरी संतान का आशीष देती हैं। चर्मरोगी को चर्मरोगों से मुक्त करतीं हैं।

कुमारी कन्याओं को सुंदर,कुलीन तथा धनवान पति का आशीर्वाद देतीं हैं।सभी छठव्रतियों की मनोकामना भगनान सूर्यदेव तथा उनकी बहन छठ परमेश्वरी अवश्य पूरी करतीं हैं। ऐसा कहा जाता है कि भगवान श्रीराम और माता सीता ने भी छठ पूजन किया था। महाभारत काल में कुंती ने भी संतान प्राप्ति के लिए छठ व्रत किया था। इसीलिए उनका पुत्र कर्ण सूर्यदेव का बहुत बड़ा भक्त था।द्रौपदी ने भी छठव्रत की थी। प्रियवंद नामक एक भक्त ने पुत्र प्राप्ति के लिए पहली बार छठ व्रत किया था। थी। ओडिशा की राजधानी भुवनेश्वर में भी लगभग तीन दशकों से छठ पूजा घर-घर तथा सामूहिक रुप से की जाती है जबकि ओड़िशा के राउरकेला,कटक तथा पारादीप आदि शहरों में लगभग चार दशकों से छठ महापर्व मनाया जाता है।

इस महापर्व के मनाने का एकमात्र आधार एकसाथ सूर्य,जल और वायु तीन की पूजा होती है।कहते हैं कि भगवान सूर्यदेव धरती के एकमात्र प्रत्यक्ष देव हैं जिनकी पूजा डुबते और उगते हुए दोनों रुपों में की जाती है।भुवनेश्वर में बिस्वास के सौजन्य से इसबार भी छठ के ठेकुआ प्रसाद के फ्री वितरण की व्यवस्था भुवनेश्वर बालीयात्रा मैदान के समीप कुआखाई छठघाट पर ०८ नवंबर को भोर में की गई है।

-अशोक पाण्डेय

लिंगराज ग्रेनाइट्स, क्ले टाइम्स बिजनेस अवार्ड से सम्मानित

ओडिशा की राजधानी भुवनेश्वर के पटिया स्थित लिंगराज ग्रेनाइट्स के क्ले को एक बार फिर टाइम्स बिजनेस अवार्ड से सम्मानित किया गया है। यह अवार्ड लिंगराज ग्रेनाइट्स के क्ले को ओडिशा के नंबर १ शोरूम के रूप में मान्यता प्रदान करता है। पिछले साल भी टाइम्स ऑफ इंडिया द्वारा प्रतिष्ठित टाइम्स इंटीरियर ट्रांसफॉर्मेशन अवार्ड के रूप में लिंगराज ग्रेनाइट्स के क्ले की उपलब्धी को मान्यता दी गई थी। भुवनेश्वर की राजधानी स्थित एक निजी होटल में आयोजित एक समारोह के बीच लिंगराज ग्रेनाइट्स के संस्थापक गजानंद शर्मा ने अपने अन्य निदेशक आनंद मोला तथा अन्य के साथ ग्रहण किया।इस सम्मान को ग्रहण करने के बाद गजानंद शर्मा ने टाइम्स ऑफ इण्डिया समूह के प्रति आभार जताया। उन्होंने एवार्ड मिलने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए अपने सतत संघर्ष, लगन, त्याग, ग्रेनाइट की उत्कृष्टता, नवाचार और ग्राहक संतुष्टि को मूल श्रेय दिया। गौरतलब है कि कंपनी के मालिक गजानंद शर्मा का सामाजिक दायित्व भी अति उल्लेखनीय और प्रशंसनीय हैं ।

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

प्रतियोगिता नंबर-८९

सभी के लिए सुनहरा अवसर!

दीजिए आसान से सवालों का जवाब और

जीतिये 1,000/- का नकद इनाम!

१. किसका गुणसूत्र संतान में लिंग निर्धारण के लिए उत्तरदायी है?

२. किस अनुच्छेद के तहत विधि के समक्ष समानता वर्णित है?

३. शिवाजी के मंत्रिमंडल को क्या कहा जाता है?

४. शिवाजी ने किस भाषा को राजभाषा बनाया?

५. 'तरणेतर मेला' किस राज्य का प्रसिद्ध मेला है?

६. चंद्रमा पर गुरुत्वाकर्षण का मान पृथ्वी पर के गुरुत्वाकर्षण के मात्रा का कितना है?

७. कौन भारत का अंतिम वायसराय था?

८. भारत की कौन-सी पंचवर्षीय योजना में खादी एवं ग्रामीण उद्योग आयोग की स्थापना की गयी थी?

९. 'आर्य समाज' की स्थापना किस वर्ष की गई?

१०. 'क्षमावाणी' किस धर्म से संबंद्ध त्योहार है?

११. शून्य में स्वतंत्र रूप से गिरने वाली वस्तुओं का त्वरण क्या होता है?

१२. किस अनुच्छेद में लोक नियोजन के विषय में अवसर की समता प्रदान की गई है?

१३. किस विधि द्वारा मिश्रण में उपस्थित घटकों का पृथक्करण किया जाता है?

१४. किसने 'आर्य समाज' की स्थापना की?

१५. 'नवरोज' किन लोगों का नव वर्ष दिवस है?

१६. सौरमंडल का सबसे छोटा उपग्रह कौन-सा है?

१७. रोहिणी श्रेणी के प्रथम उपग्रह का प्रक्षेपण किस वर्ष किया गया?

१८. तृतीय पंचवर्षीय योजना का काल क्या था?

१९. किसने कहा विदेशी राज चाहे कितना अच्छा क्यों न हो, स्वदेशी राज की तुलना में कभी अच्छा नहीं हो सकता?

२०. 'उगादी उत्सव' किस राज्य में मनाया जाता है?

आपके द्वारा सही जवाब की पहेली इस माह की २५ तारीख तक डाक द्वारा हमारे कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए। भरी गयी पहेली का रिजल्ट लॉटरी सिस्टम द्वारा निकाला जाएगा। विजेता के नाम और सही हल अगले माह के अंक में प्रकाशित किये जाएंगे। परिजन विजेता बच्चे का फोटो व उसका पहचान पत्र लेकर हमारे कार्यालय में आएं और मुंबई के बाहर रहने वाले विजेता अपने पहचान पत्र की सत्यापित प्रति डाक या मेल से निम्न पते पर भेजें।

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. , Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane, PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in, mangsom@rediffmail.com
Website: swarnimumbai.com

नामः..

पूरा पताः ....

....

....

....

फोन नं.: ....

ऑनलाइन गेमिंग के जाल में युवा ...

पिछले कुछ दिनों में जेईई की परीक्षा अच्छे अंकों से पास करने वाले युवक हिमांशु मिश्रा का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ है। कारण एक ही है। हिमांशु महादेव बेटिंग ऐप और ऑनलाइन गेम्स के इतने आदी थे कि २२ साल की उम्र में उन पर ९६ लाख रुपये से भी ज्यादा का कर्ज हो गया था। ऑनलाइन गेम की लत के कारण उनके परिवार ने उनसे नाता तोड़ लिया था। जब उनके पिता की मृत्यु हुई, तो वह अपने पिता को अंतिम सम्मान भी नहीं दे सके। उसकी मां ने घोषणा की है कि उसका उसके साथ कोई संबंध नहीं है। वह यह भी कह रहा है कि अगर मैं सड़क पर मर भी जाऊं तो भी परिवार मुझे देखने नहीं आएगा। एक समूह का कहना है कि हिमांशु झूठ बोल कर और सहानुभूति हासिल करके लोगों से पैसे वसूलता है। दूसरे लोग उसकी ईमानदारी की तारीफ कर रहे हैं। लेकिन मामला झूठा हो या सच, वायरल हुए वीडियो के नीचे जो कई टिप्पणियां थीं, वे अधिक महत्वपूर्ण हैं। क्योंकि इसमें लिखा है कि हमने भी इस तरह से ऑनलाइन गेमिंग से पैसे गंवाए हैं। लोगों ने कहा है कि मैंने ८०,००० खो दिए हैं, मैंने १२ लाख खो दिए हैं, मैंने १५ लाख डूब गए हैं। इससे पता चलता है कि हिमांशु का मामला चाहे झूठा हो या सच, कई युवा ऑनलाइन गेमिंग और जुए का शिकार हो रहे हैं।

आज हर किसी के पास मोबाइल फोन और इंटरनेट है। इसमें ऑनलाइन गेमिंग और जुए के विज्ञापन भी हैं। उन विज्ञापनों में एक सेलिब्रिटी का चेहरा दिखाया गया है और वे कहते हैं कि मैंने ५० रुपये, १०० रुपये डाले और ५०,००० रुपये जीते, १ लाख रुपये जीते। कुछ विज्ञापन आंकड़ा और भी बड़ा दिखाते हैं। मेरा मतलब है, मैं शुरू में १०० रुपये का भुगतान कर रहा था। उन्होंने एक लाख खेले और जीते। युवा पीढ़ी स्वाभाविक रूप से ऐसे विज्ञापनों की ओर आकर्षित होती है। इन दिनों सोशल मीडिया पर दूसरे लोगों की रील और वीडियो देखने के बाद युवाओं को लगता है कि उनका भी यही रवैया होना चाहिए या फिर वे इसके प्रति आकर्षित होते हैं। लेकिन वे अपने शौक पूरे नहीं कर सकते क्योंकि उनके पास पर्याप्त पैसा नहीं है। फिर ऐसे विज्ञापनों को देखकर कम समय में जल्दी पैसा कमाने का प्रलोभन होता है।

यूट्यूब पर भी कई वीडियो हैं जिनमें गेमिंग चैनल चलाने वाले यूट्यूबर्स अक्सर कहते हैं कि मैं ऑनलाइन गेम खेलकर महीने में इतना कमा लेता हूं। मैंने उस पैसे का इस्तेमाल एक लक्जरी कार खरीदने के लिए किया, विदेश यात्रा की। अन्य युवा लोग तुरंत इससे प्रभावित होते हैं। वे गेम देखते और डाउनलोड करते हैं। या अगर कोई लिंक शेयर करता है, तो वे लिंक के माध्यम से ऐप डाउनलोड करते हैं।

या फिर ऐप नहीं होने पर ये गेम किसी वेबसाइट के जरिए खेले जाते हैं। यह शुरू में नए उपयोगकर्ताओं को आकर्षित करने के लिए अपने गेमिंग वॉलेट में स्वागत बोनस के रूप में कुछ राशि जमा करता है। यह आपके बटुए में दिखाई देता है लेकिन आप इसे हटा नहीं सकते। लेकिन आप इसका इस्तेमाल शुरुआत में गेम खेलने के लिए कर सकते हैं। जब आप खेलना शुरू करते हैं, तो आप हर समय नहीं जीतते हैं। कभी-कभी आप हार जाते हैं। हारने वाला सोचता है कि चलो चलते हैं, मेरा पैसा कहां था ... अगर यह चला गया है, तो यह चला गया है। अब मैं एक बार अपने पैसे से खेलता हूं। फिर जब वह एक गेम जीतता है, तो वह अधिक पैसा जीतना चाहता है। फिर युवा ज्यादा पैसों से गेम खेलने लगते हैं। धीरे-धीरे उन्हें इसकी आदत हो जाती है। फिर एक गेम हारने के बाद, सट्टे लगाने के बाद, वे पैसे की वसूली के लिए पैसे के साथ बार-बार गेम खेलना शुरू कर देते हैं। और यहीं से वे उस ऑनलाइन गेम में फंसने लगते हैं।

अगर वे एक दिन नहीं खेलते हैं, तो वे घबरा जाते हैं, वे हर समय चिड़चिड़े होने लगते हैं। और यदि आपके पास पैसे खत्म हो जाते हैं, तो आप घर से पैसे मांगना शुरू कर देते हैं, यदि आप नहीं करते हैं, तो आप इसे बाहर से लेते हैं, आदि। आगे चलकर यह इतना ऊंचा हो जाता है कि जल्दी अमीर बनने के नाम पर सिर पर कर्ज का पहाड़ चढ़ जाता है। लेकिन जब तक आपको अपनी गलती का एहसास होता है, तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। फिर मानसिक तनाव है। कभी-कभी वे आत्महत्या भी कर लेते हैं। कुछ जगहों पर अपहरण और हत्या के मामले भी सामने आए हैं।

जानकारों के मुताबिक आज की युवा पीढ़ी का झुकाव पारंपरिक जुए से ज्यादा ऑनलाइन जुए की तरफ है, क्योंकि पारंपरिक गैंबलिंग को पुलिस और परिवार की नजरों से बचकर सुरक्षित जगह जाना पड़ता था। यदि आप क्लब जाना चाहते हैं और खेलना चाहते हैं, तो आयु प्रतिबंध है। इस ऑनलाइन गेमिंग, गैंबलिंग में आप घर, कॉलेज, ऑफिस से कहीं भी खेल सकते हैं। आयु प्रतिबंध के बावजूद, बच्चे अपने माता-पिता के आधार कार्ड और पैन कार्ड का उपयोग करते हैं।

Ram Creations
Jewelry & Gifts
28974 Orchard Lake Rd, Farmington Hills | ramcreations.com | (248) 851-1400

WORLD PLAYER
WORLD PLAYER MENSWEAR
MEGABUY ₹149-499
SAVE ₹ 100
MENS 100% CORDUROY 16 WALE WASHED SHIRTS MRP ₹ 599
MEGABUY ₹ 499
SAVE ₹ 100
MENS 100% COTTON SEMI FORMAL SHIRTS MRP ₹ 599
MEGABUY ₹ 499
SAVE ₹ 100
MENS FORMAL TROUSERS MRP ₹ 699
MEGABUY ₹ 599

U-Tropicana-Beach-Resort-in-Alibaug

One of the most beautiful resorts near Mumbai for family is the U Tropicana at Alibaug

'अधूरी मोहब्बत'

सर्दियों की एक ठंडी शाम थी। कोहरे से ढके शहर में हर चीज़ जैसे धीमी हो चली थी। ऋषभ, जो एक मिडिल क्लास परिवार का लड़का था, अपनी चाय का कप लिए बालकनी में खड़ा था। उसके दिल में एक अजीब सा सूनापन था, जिसे वो समझ नहीं पा रहा था। वो कॉलेज के दिनों को याद कर रहा था, जब उसकी जिंदगी में खुशी और रंग भरने वाली एक लड़की आई थी–अनन्या।

अनन्या एक जिंदादिल लड़की थी, जिसकी हंसी में दुनिया की सारी खुशियां समा जाती थीं। दोनों की मुलाकात कॉलेज के पहले दिन ही हुई थी। अनन्या ने आते ही ऋषभ से कहा था, 'तुम हमेशा इतने चुपचाप क्यों रहते हो? ज़िंदगी को महसूस करो, इसे जीने का नाम है।'

ऋषभः 'शायद, ज़िंदगी ने कभी हंसने की वजह ही नहीं दी।'ऋषभ, जो अक्सर शांत रहता था, अनन्या के इस बेबाक अंदाज़ से हक्का-बक्का रह गया था। धीरे-धीरे उनकी मुलाकातें बढ़ने लगीं और ऋषभ की जिंदगी में एक नई रोशनी सी फैल गई।

वक्त बीतता गया और दोनों के बीच दोस्ती गहरी होती गई। ऋषभ की हर छोटी-बड़ी बात अनन्या जानती थी और अनन्या के हर सुख-दुख का साथी ऋषभ बन गया था। अनन्याः 'तुम्हें पता है, जब तुम मुस्कुराते हो, तो दुनिया थोड़ी और खूबसूरत लगने लगती है।'

ऋषभ (हल्की मुस्कान के साथ)ः 'और जब तुम हंसती हो, तो मेरी दुनिया पूरी हो जाती है।' पर शायद उनकी किस्मत में साथ रहना नहीं लिखा था। कॉलेज के आखिरी साल में अनन्या की शादी तय हो गई।

ऋषभ ने अनन्या से बात करने की कोशिश की, लेकिन अनन्या ने बस इतना कहा, 'मेरे पास कोई और रास्ता नहीं है। मेरे परिवार की खुशियां मेरे लिए सबसे ज्यादा अहमियत रखती हैं।' शादी के दिन, ऋषभ दूर खड़ा देखता रहा, उसकी आंखों में आंसू थे, लेकिन दिल में दुआ थी कि अनन्या हमेशा खुश रहे। अनन्या ने जाते-जाते ऋषभ को देखा और उसकी आंखों में वो अधूरी मोहब्बत साफ नजर आ रही थी, जो कभी अल्फ़ाज़ में नहीं बयां हो पाई थी। ऋषभ (मन में): 'शायद यही मोहब्बत है–उसकी खुशी में अपनी खुशी देखना, भले ही वो तुम्हारी ना हो सके।' समय बीतता गया। ऋषभ ने अनन्या से कभी संपर्क नहीं किया, लेकिन उसकी यादें उसके साथ हमेशा रहीं। वो हर दिन अनन्या की हंसी को याद करता, उसकी बातें, उसकी खामोश मोहब्बत। और इस तरह ऋषभ की जिंदगी में वो सूनापन हमेशा के लिए घर कर गया। कहते हैं, सच्ची मोहब्बत कभी पूरी नहीं होती। शायद ऋषभ और अनन्या की कहानी भी एक अधूरी मोहब्बत की मिसाल बनकर रह गई।

अनन्या के घरवालों ने उसकी मर्जी के बिना ही एक अमीर परिवार के लड़के से उसकी शादी तय कर दी थी। जब ऋषभ को ये खबर मिली, तो उसे लगा जैसे किसी ने उसकी जिंदगी से सारी खुशियां छीन ली हों। शादी की खबर सुनने के बाद ऋषभः 'तुम मुझसे दूर जा रही हो, फिर भी लगता है कि मैं तुम्हें रोक नहीं सकता।' अनन्या (आंखों में आंसू लिए): 'मैं रुकना चाहती हूं, पर मेरे पास कोई और रास्ता नहीं है। कुछ फैसले दिल से नहीं, दिमाग से लेने पड़ते हैं।'

ऋषभ ने अनन्या से बात करने की कोशिश की, लेकिन अनन्या ने बस इतना कहा, 'मेरे पास कोई और रास्ता नहीं है। मेरे परिवार की खुशियां मेरे लिए सबसे ज्यादा अहमियत रखती हैं।'

शादी के दिन, ऋषभ दूर खड़ा देखता रहा, उसकी आंखों में आंसू थे, लेकिन दिल में दुआ थी कि अनन्या हमेशा खुश रहे। अनन्या ने जाते-जाते ऋषभ को देखा और उसकी आंखों में वो अधूरी मोहब्बत साफ नजर आ रही थी, जो कभी अल्फ़ाज़ में नहीं बयां हो पाई थी। ऋषभ (मन में): 'शायद यही मोहब्बत है–उसकी खुशी में अपनी खुशी देखना, भले ही वो तुम्हारी ना हो सके।'

समय बीतता गया। ऋषभ ने अनन्या से कभी संपर्क नहीं किया, लेकिन उसकी यादें उसके साथ हमेशा रहीं। वो हर दिन अनन्या की हंसी को याद करता, उसकी बातें, उसकी खामोश मोहब्बत। और इस तरह ऋषभ की जिंदगी में वो सूनापन हमेशा के लिए घर कर गया।

कहते हैं, सच्ची मोहब्बत कभी पूरी नहीं होती। शायद ऋषभ और अनन्या की कहानी भी एक अधूरी मोहब्बत की मिसाल बनकर रह गई।

वक्त धीरे-धीरे चलता रहा। ऋषभ ने अनन्या से मिलने की हर उम्मीद छोड़ दी थी, लेकिन उसके दिल में एक कोना हमेशा अनन्या के नाम ही रहा। उसने अपनी जिंदगी में कई बदलाव किए–नौकरी में तरक्की की, अपने माता-पिता की जिम्मेदारियां निभाई, लेकिन अनन्या की यादें उसे कभी पूरी तरह से आगे बढ़ने नहीं देती थीं।

एक दिन, जब ऋषभ की मां की तबीयत अचानक बिगड़ गई, उसे शहर के बड़े अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा। उस अस्पताल में कदम रखते ही, उसे अनन्या की याद फिर से आ गई, क्योंकि वो जानता था कि अनन्या अब एक डॉक्टर थी। लेकिन उसने सोचा कि इतने सालों में शायद वो उसे भूल चुकी होगी, और उसकी जिंदगी में आगे बढ़ चुकी होगी।

उस शाम, जब ऋषभ अस्पताल के कॉरिडोर में बैठा हुआ था, उसकी नजर अचानक किसी पर पड़ी। सफेद कोट में, बालों को ढीले जूड़े में बांधे, और चेहरे पर वही मासूम मुस्कान–वो अनन्या ही थी। ऋषभ का दिल जोर से धड़कने लगा। उसे यकीन नहीं हुआ कि इतने सालों बाद वो फिर से अनन्या के सामने खड़ा था।

अनन्या की नजर भी ऋषभ पर पड़ी। कुछ पलों के लिए वो ठहर सी गई। उसकी आंखों में आश्चर्य और खुशी का मिला-जुला भाव था। दोनों एक-दूसरे की ओर बढ़े, लेकिन उनके बीच में जैसे वक्त की एक दीवार खड़ी थी, जिसे पार करना मुश्किल था।

'कैसे हो, ऋषभ?' अनन्या ने धीरे से पूछा, मानो उनकी सारी पुरानी बातें अचानक सामने आ गई हों।

'ठीक हूं... और तुम?' ऋषभ ने कहा, लेकिन उसकी आवाज में वो पुरानी चाहत छुपी हुई थी, जो उसने कभी अनन्या से नहीं कही थी।

अनन्या ने थोड़ी देर चुप रहकर कहा, 'मैं ठीक हूं। जिंदगी तो बस चलती रही, जैसे तुम्हारी चल रही है।'

दोनों के बीच फिर से खामोशी छा गई, लेकिन इस खामोशी में वो सारे अनकहे जज़्बात थे जो उनके दिलों में दबे हुए थे। ऋषभ ने हिम्मत जुटाकर पूछा, 'क्या तुम खुश हो अनन्या? वो खुशी, जो तुम हमेशा चाहती थीं?'

अनन्या ने आंखें नीची कर लीं। कुछ पलों के बाद उसने कहा, 'शायद खुशी और सुकून में फर्क होता है, ऋषभ। मैंने सुकून तो पा लिया, लेकिन खुशी... वो शायद कहीं खो गई।'

ऋषभ ने उसकी आंखों में झांका। उसने देखा कि वो अनन्या, जो हमेशा मुस्कराती रहती थी, आज अंदर से टूटी हुई थी। दोनों के दिलों में वो पुरानी बातें फिर से जाग उठीं। लेकिन अनन्या ने जल्दी से खुद को संभाला। उसने अपनी शादीशुदा जिंदगी के बारे में ज्यादा कुछ नहीं बताया, लेकिन उसकी आंखों में वो दर्द साफ झलक रहा था जिसे वो साल ों से छुपा रही थी।

'मैंने तुमसे कभी पूछा नहीं, लेकिन क्या तुम्हारी शादी... तुम्हारे पति?' ऋषभ ने धीमे स्वर में कहा।

अनन्या ने हल्के से सिर हिलाया और बोली, 'वो

Contact: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in

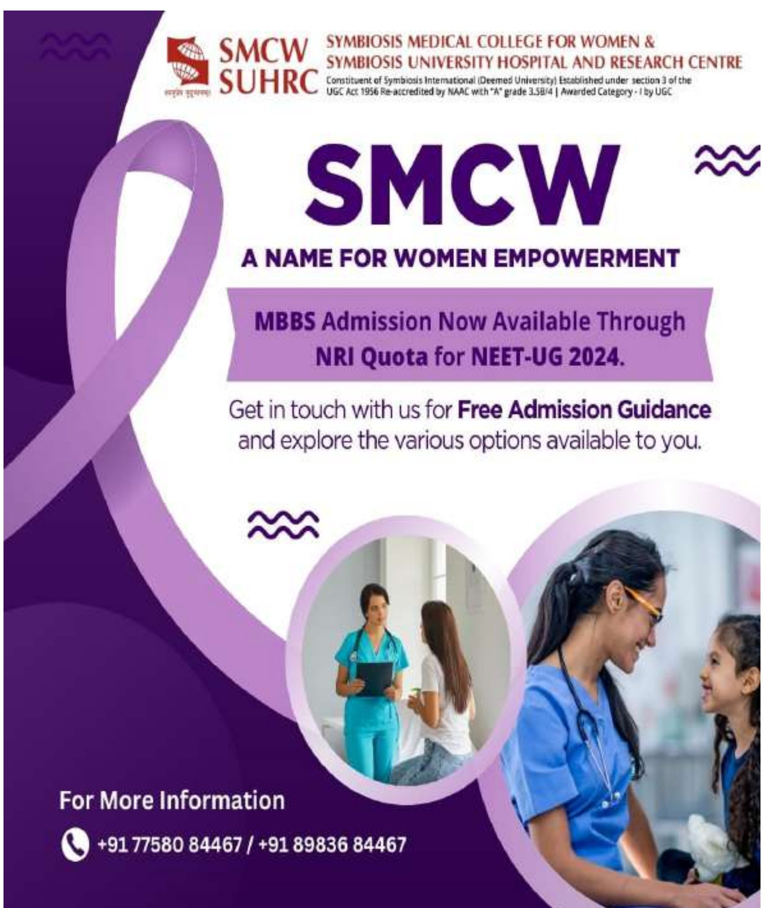

Contact: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in

अच्छा इंसान है, लेकिन शायद मैं कभी अपने दिल की बात उसे समझा नहीं पाई।'

ऋषभः 'अगर वक्त और हालात अलग होते, तो क्या हम साथ होते?'

अनन्या (आंखों में नमी लिए): 'कभी-कभी साथ रहकर भी लोग दूर होते हैं, और दूर रहकर भी मोहब्बत कभी खत्म नहीं होती। तुम मेरे दिल में हमेशा रहोगे, चाहे हम साथ हों या नहीं।'

इस बात ने ऋषभ के दिल में एक हलचल पैदा कर दी। उसने अनन्या की आंखों में देखा, और उस पुरानी, अधूरी मोहब्बत का अहसास फिर से जाग उठा। लेकिन इस बार दोनों के बीच वक्त और हालात की दीवार थी, जिसे पार करना शायद नामुमकिन था।

उस रात, जब ऋषभ अस्पताल से वापस जा रहा था, उसके मन में अनगिनत सवाल और भावनाएं उमड़ने लगीं। क्या मोहब्बत सिर्फ पाने का नाम है, या कभी-कभी उसे जाने देना भी सच्ची मोहब्बत होती है?

ऋषभ ने सोचा कि शायद उनके रिश्ते का यही अंत होना था–एक अधूरी, मगर सच्ची मोहब्बत। अनन्या अब उसकी जिंदगी का हिस्सा नहीं थी, लेकिन उसकी यादें हमेशा के लिए उसकी जिंदगी का हिस्सा बन गई थीं।

और इस तरह, अनन्या और ऋषभ की कहानी अधूरी रह गई, लेकिन उस अधूरेपन में भी एक अजीब सी खूबसूरती थी। वे दोनों जानते थे कि उनका प्यार सच्चा था, भले ही वो एक-दूसरे के नहीं हो सके।

यह कहानी एक अधूरी मोहब्बत की थी, जो कभी खत्म नहीं हुई–वो प्यार जो हमेशा दिल में छुपा रहा, लेकिन कभी ज़िंदगी का हिस्सा नहीं बन सका।'

\- सी. सुधा

काँसे का गिलास

फिर एक बार क्या हुआ कि गिलास गुम गया। सुबह उठे तो गिलास मिला ही नहीं। मेरी माँ ने उनको स्टील के गिलास में चाय दे दी। वो अपना नियम से उठीं, माँ ने चिलमची में कुल्ला वुल्ला करवाया। जाप वाप करके वो चाय पीने बैठीं। हाथ में गिलास लिया। देखा तो दूसरा गिलास, बोलीं - मैं नहीं पीती, ये लश्कारे वाले गिलास में, मुझे तो मेरा वाला गिलास दो। - ही ही, जैसे चिल्की का मेरा वाला गिलास... दादी कोई बच्चा थीं? चिल्की को मजा आ रहा था। - हाँ, बूढ़े बच्चे तो एक ही जैसे होते हैं। अब उन्होंने जैसे जिद ठान ली - चाय पीनी है तो उसी गिलास में। चाय पड़ी पड़ी ठंडी हो गई। पूरा घर छान मारा। कहीं गिलास का अता पता नहीं। ऐसे अलादीन के जिन की तरह गायब हो गया। - तो बोलना था, चिल्की ने हाथ लंबा घुमा कर अभिनय के साथ कहा - खुल जा सिमसिम... पर दादी, वो गिलास टूटता तो नहीं था न। - टूटता तो नहीं था पर गुम तो हो जाता था न बच्चे। तो हम सब बच्चे लग गए उस गिलास को ढूँढ़ने में। ऊपर नीचे सारा घर खँगाल मारा। चारपाइयों के नीचे, आँगन में, छत की मुंडेर पर, कुएँ की जगत पर, अमरूद सीताफल के पेड़ के पास। पर गिलास तो ऐसा गायब हुआ कि बस। उनको खाना दिया। मेरी माँ ने मिन्नतें कीं कि झाई जी, आप खाना शुरु तो करो, पानी पीने तक गिलास मिल जाएगा। खाना तो गिलास में नहीं खाते न! पर उनकी तो एक ही रट। मेरा गिलास, मेरा गिलास।

बड़ा खूबसूरत गिलास था वह। रंगबिरंगे डिजाइन वाला प्लास्टिक का पारदर्शी गिलास - जिसकी दो तहों के बीच कैद नीले पानी में सुनहरे हरे फूल पत्ते और तैरती मछलियाँ थीं। गिलास गिरने से तड़क गया था और उसके भीतर की सारी खूबसूरती जमीन पर बड़ी बेरहमी से बिखरी पड़ी थी ।

पूरे रसोई घर में फैली चमकीली पन्नियाँ और रंगीन पानी में तैरती प्लास्टिक की रंगबिरंगी मछलियाँ साफ की जा चुकी थीं पर वह थी कि बुक्का फाड़ कर रोए जा रही थी। वह यानी चिल्की। छह साल की चिल्की। मेरी पोती।

- बस्स! अब चुप्प! बहुत हो गया! काफी देर प्यार से समझा चुकने के बाद मैंने अपने स्वर में आए डाँट डपट के भाव को बेरोकटोक उस तक पहुँचने दिया।

- पहले शोभाताई को डाँटो, उसने मेरा गिलास क्यों तोड़ा! रसोई में काम करती शोभा तक ले चलने के लिए वह मेरा हाथ पकड़ कर खींचने लगी।

- पहले तेरे पापा को न डाँटूँ जिसने इतना महँगा गिलास तुझे ला कर दिया? मैंने उसके पापा और अपने बेटे निखिल के प्रति अपनी नाराजगी जताई।

उसकी रुलाई एकाएक और तेज हो कर कानों को अखरने लगी।

- उफ! अब क्या हो गया। मेरा धीरज जवाब दे रहा था। - पापा ने नहीं, वह सुबकने लगी। सुबकती रही। फिर धीरे से बोली, यह ममा ने ला कर दिया था। ममा यानी नेहा। मेरी बहू। मैं सकते में आ गई। वह जिसके नाम से हम सब अपना पल्ला बचा कर चलते थे, जैसे वह अछूत हो, इसी तरह जब-तब हमारे ठहरे हुए संसार को तहस नहस करने चली आती थी।

नेहा को इस घर से गए एक साल होने को आया था पर चिल्की उसे भूलती नहीं थी। कभी लाल हेअर क्लिप, कभी जयपुरी जूतियाँ, कभी टपरवेअर का टिफिन बॉक्स, कभी डोनल्ड डक की मूठ वाली छतरी, कभी बालों पर टँगा सनग्लास - चिल्की के सामने किसी न किसी बहाने से उसकी प्यारी ‘ममा’ आ कर ठहर जातीं और हमारे ‘हुश हुश’ करने के बावजूद ओझल होने का नाम नहीं लेती।

अब चिल्की पर नाराज होना संभव नहीं था। उसका ध्यान गिलास से हटाना अब दूसरे नंबर पर चला गया था। सुबकती हुई चिल्की को मैंने अपनी

Good Vibes Onion Hairfall Control Oil I Strengthening I Hair Growth I No Parabens, No Sulphates, No Mineral Oil, No Animal Testing (100 ml)

Good Vibes Argan Oil Hairfall Control Vitalizing Serum I Frizz Control, Shine, Stregthening I No Parabens, No Sulphates, No Animal Testing (50 ml)

- हाँ, बड़ी जिंदादिल थीं वो। अपनी सेहत का बड़ा ख्याल रखती थीं! शाम की चाय के साथ कुछ नमकीन खातीं जैसे चिवड़ा या निमकी या आगरे का दालमोठ - दालमोठ उनको बहुत पसंद था तो क्या करतीं - हथेलियों पे जो चिकनाई लगी रह जाती, उसको सबकी नजरें बचा कर हाथों और पैरों में रगड़ लेतीं। एक बार हम बच्चों ने उन्हें ऐसा करते देख लिया। - छिः छिः छिः छिः, हमने कहा, दादी ये मिर्च मसालेवाला तेल रगड़ते हो, गंदा नहीं लगता? जलन नहीं होती? उन्होंने हम बच्चों को पास बिठाया, बोलीं - अब कौन उठ के हाथ धोए। इस तरह एक पंथ दो काज होते हैं। - वो कैसे, झाई जी? हम पूछते तो कहतीं - देखो, ये... जो हमारे हाथों पैरों में रोएँ हैं न , ये छोटे छोटे रोएँ, ये हमारे शरीर के दीए हैं, दीपक हैं। जैसे दीयों को जलने के लिए तेल की जरुरत होती है न, वैसे ही इन्हें जलाए रखना है तो इनमें तेल डालना पड़ेगा। तभी तो ये गरम रहते हैं, खुश हो जाते हैं। देखो, ये चहक गए ना! जब ये दीये बुझ जाते हैं तो शरीर ठंडा हो जाता है और बंदा सफर पे निकल जाता है। सफर पे... यानी उनका मतलब था मर जाता है...

बाँहों की ओट में ले लिया। चिल्की मेरे करीब सिमट आई और बड़ों की तरह रुलाई रोकने की कोशिश में उसकी हिचकियाँ तेज हो गईं।

- सुन बेटा! एक कहानी सुनाऊँ तुझे? सुनेगी? चिल्की को बहलाने का अमोघ अस्त्र था यह!

- पहले मेरा वो... सुंदरवाला ब्ल्यू गिलास... चिल्की गिलास से हटने को तैयार नहीं थी।

एकाएक वह गिलास दुबारा टूटा और उसकी जगह एक चमकते हुए काँसे के गिलास ने ले ली - सँकरी पेंदी और चौड़े मुँहवाला एक लंबासा काँसे का गिलास... गिलास न हो, फूलदान हो जैसे।

- अरे बेटा, गिलास की ही कहानी तो सुना रही हूँ तुझे। सुनेगी नहीं, रानी बेटी?

- बोलो, उसने जैसे मुझ पर एहसान किया, सिर हिला कर हामी भर दी।

- तब मैं तेरी ही तरह छह साल की थी। इत्ती छोटी। चिल्की जैसी।

- हुँह, झूठझू ! वह सिसकी तोड़ती बोली, आप इत्ते छोटे कैसे हो सकते हो?

- तो क्या मैं पचास साल की ही पैदा हुई थी - इत्ती बड़ी? अच्छा चल, मैं छह की नहीं, सोलह साल की थी, ठीक? मैं ठहाका मार कर हँस दी।

मैं अपने बचपन में पहुँच गई जहाँ निवाड़वाली मंजियों (यों खटिया) के बीच खड़िया से आँगन में इक्का-दुक्का आँक कर मैं शटापू टप्पे वाला खेल खेलती थी। मुझे हँसी आ गई।

वह मेरी पीठ पर धपाधप धौल जमाने लगी, हँसो मत! कहानी सुनाओ।

वह होंठों को एक कोने पर जरा-सा खींचकर मुस्कुराई। बिल्कुल अपनी माँ की तरह। उसके चेहरे पर नेहा दिखाई देने लगी।

हाँ, तो मैं छोटी थी, चिल्की जितनी छोटी नहीं, उससे थोड़ी सी बड़ी। घर में मैं थी, मेरे ढेर सारे बड़े भाई-बहन थे, माँ और बाबूजी थे। बाबूजी की माँ भी थीं। यानी मेरी दादी। बहुत बहुत बूढ़ी थीं वो, पता है कितने साल की?

- कितने...?

- नब्बे से ऊपर।

- नब्बे से ऊपर मतलब?

- मतलब नाइंटी। बहुत ही गोरी-चिट्टी। छोटी-सी, नाटी-सी। पर बड़ी सेहतमंद। ...गोरी इतनी कि उँगली गाल पे रखो तो लाली दब के फैल जाए..... पर थीं बिल्कुल सींकसी सलाई। चलती थीं तो ऐसे जैसे हवा में सूखा पत्ता उड़ता है। चलती क्या थीं, दौड़ती थीं जैसे पैरों में किसी ने स्प्रिंग फिट कर दिए हों... हों

- ये तो आप मेरी बात कर रहे हो!... नहीं सुननी मुझे कहानी...। चिल्की बिसूरने लगी।

- लो, मेरी तो याददाश्त ही कमजोर होती जा रही है। हाँ, साल भर की चिल्की ने भी जब चलना सीखा तो चलती नहीं, हीं दौड़ती थी... हम उसे बताते थे कि चिल्की, तेरे पैरों में किसी ने स्प्रिंग फिट कर दिए हैं।

- हाँ, तो बुढ़ापे में आदमी बच्चों जैसी हरकतें करने लगता है। हम उन्हें कहते, दादी, सोटी लाठी ले कर चलो नहीं तो गिर जाओगी पर वो कहाँ सुननेवाली। कुढ़ कर कहतीं - सोटी ले कर चले तेरी सास, सोटी ले कर चलें मेरे दुश्मन, मुझे सोटी की लोड़ (जरूरत) नईं... उन्हें सोटी लेकर चलने में शरम आती थी। छोटा सा कद था और पीठ झुकी हुई नहीं थी। सीधी चलती थीं। चलती क्या थीं, उड़ती थीं। किसी की बात नहीं सुनती थीं। फिर क्या होना था...

- हाँ... गिर गईं? चिल्की की आँखों में कौतूहल था।

- हाँ, गिरना ही था न! बच्चे भी बात नहीं मानते तो चोट तो लगती है ना?

चिल्की ने सिर हिलाया - मैंने भी ममा की बात नहीं मानी थी तो ये देखो...

चिल्की के जेहन में अब भी जख्म ताजा थे। उसने अपनी बाईं आँख बंद कर पलक पर उँगली गड़ा दी। आँख के ऊपर भौंह से लगे हुए छह टाँकों के निशान उभर आए थे। उस दिन निखिल के ऑफिस से घर में नया फर्नीचर आया था। फर्नीचर, जो उसके ऑफिस के लिए पुराना हो चुका था और वहाँ के कर्मचारियों को औने पौने भाव में बेचा जा रहा था। निखिल ने सोफा, दीवान और बीच की मेज खरीद ली थी। बर्मा टीक की बड़ी खूबसूरत मेज थी। चिल्की ने ज्यों ही नया सोफा देखा, लगी उस पर कूदने। नेहा चिल्लाती रही कि मेज के कोने नुकीले हैं, उन्हें गोल करवाना है, कूद मत नहीं तो लगेगा आँख पे।

उसने तीन बार टोका और तीनों बार चिल्की और जोर से सोफे के डनलप पर कूदी। बस, पैर जरा सा मुड़ा और सीधे जा गिरी मेज के कोने पर। चिल्की की बाईं आँख लहूलुहान। कमरे में खून ही खून। नेहा ने देखा और लगी चीखने। कहा था न, सुनती तो है ही नहीं। उसको उठा कर दौड़े अस्पताल। सबकी जान साँसत में। चोट गहरी थी पर आँख बच गई थी। छह टाँके लगे। वह मेज उठा कर परछत्ती पर रखवा दिया। जब तक यह बड़ी नहीं हो जाती,

Festive Collection
WELCOME THE FESTIVITIES WITH A BURST OF GLAMOUROUS COLOUR
SHOP NOW
www.festivacollection.com

यह मेज अब वहीं रहेगा, निखिल बड़बड़ाता रहा और नेहा उसे कोसती रही - अपने दफ्तर का यह कूड़ा-कचरा उठा कर घर लाने की जरूरत क्या थी! जमीन पर गद्दे और गाव तकिए थे तो सोफे के बगैर भी घर कितना खुला खुला लगता था। अब कमरे में चलना मुहाल हो गया है। कहीं कुछ सस्ता देखा नहीं कि उठा कर घर में डाल दो। घर न हुआ, स्टोररूम हो गया। चिल्की तो उस दिन के बाद से कुछ सँभल कर चलने लगी। फिर कभी उसे टाँके नहीं लगे। पर दादी तो एक बार गिरीं तो फिर नहीं उठीं। कूल्हे की हड्डी चटक गई थी। डेढ़ महीने टाँग पर वजन बँधा रहा। हड्डी की तरेड़ तो ठीक हो गई पर जब तक हड्डी जुड़ती, टाँगें बिस्तर पर पड़े पड़े सूख गईं। अब टाँगों ने उनका वजन उठाने से इनकार कर दिया था।

- फिर?

- फिर क्या! बड़ी मुसीबत! हमेशा उड़ती-फिरती दादी बिस्तर से जा लगीं। ऊपर से उनकी जिद कि अब तो वजन उतर गया है, अब बिस्तर पर उनको पॉट नहीं चाहिए। उनके लिए शहर से दो कुर्सियाँ मँगवाई गईं। एक पॉटवाली, एक पहिएवाल ी जिस पर बिठा कर उन्हें दिन में एक बार अमरूद और सीताफल के पेड़ के पास ले जाना पड़ता - किस अमरूद को थैली लगानी है, कौन सा सीताफल पक गया है, कौन-सा अमरूद बंदर आधा खा गया है, सब की खोज-खबर रखती थीं वो ... कौन-सी चाची कितने दिनों से हालचाल पूछने नहीं आयी... कौन आके बार बार उनसे उनकी उमर पूछता है...

- कितने साल की थीं वो?

- उन्हें अपनी ठीक ठीक उम्र कहाँ मालूम थी ...वो तो ऐसे बताती थीं, जनरल डायर ने गोलियाँ चलवाई थीं तो उन्होंनें नाड़े वाली सलवार पहनना शुरू कर दिया था... गांधी जी का भाषण सुनके घर पहुँची तो तेरे दादाजी की नई नौकरी लगने की चिट्ठी आई थी ... उनकी हर याद किसी न किसी बड़ी घटना से जुड़ी थी... कोई उनसे कहता कि झाई जी, आप तो नब्बे टाप गए हो तो उन्हें बड़ा बुरा ल गता, कहतीं - नहीं, अभी तीन महीने बाकी है। मैं नब्बे की हुई नहीं और मुझे सब नब्बे की बताते हैं। और हो भी गई तो क्या, नब्बे से ऊपर आदमी जीना बंद कर देता है

क्या? कोई उम्र पूछ लेता तो चिढ़ जातीं। एक बार तो एक रिश्तेदार से भिड़ गईं। उन्होंनें उम्र पूछी तो बहुत धीरे से उनसे बोलीं - पहले तू बता, तू कितने साल का है। उसे सुनाई नहीं दिया। उसने कहा - क्या पूछा आपने? तो कहती है - अब तू मुझसे इतनी आहिस्ते पूछ। मैं तुझसे ज्यादा अच्छा सुन लेती हूँ, मैं बिना चश्मा लगाए जपुजी साहिब का पाठ कर लेती हूँ फिर तू सत्तर का हुआ तो क्या और मैं नब्बे की दहलीज पे पहुँची तो क्या। लोग जब खुद ऊँचा सुनने लगते हैं तो सारी दुनिया उन्हें बहरी दिखाई देती है। चिल्की ने खिलखिल हँसना शुरु किया - आपकी दादी बहुत जोक मारती थीं। हैं न?

- हाँ, बड़ी जिंदादिल थीं वो। अपनी सेहत का बड़ा ख्याल रखती थीं! शाम की चाय के साथ कुछ नमकीन खातीं जैसे चिवड़ा या निमकी या आगरे का दालमोठ - दालमोठ उनको बहुत पसंद था तो क्या करतीं - हथेलियों पे जो चिकनाई लगी रह जाती, उसको सबकी नजरें बचा कर हाथों और पैरों में रगड़ लेतीं। एक बार हम बच्चों ने उन्हें ऐसा करते देख लिया। - छिः छिः छिः छिः, हमने कहा, दादी ये मिर्च मसालेवाला तेल रगड़ते हो, गंदा नहीं ल गता? जलन नहीं होती? उन्होंने हम बच्चों को पास बिठाया, बोलीं - अब कौन उठ के हाथ धोए। इस तरह एक पंथ दो

काज होते हैं। - वो कैसे, झाई जी? हम पूछते तो कहतीं - देखो, ये... जो हमारे हाथों पैरों में रोएँ हैं न , ये छोटे छोटे रोएँ, ये हमारे शरीर के दीए हैं, दीपक हैं। जैसे दीयों को जलने के लिए तेल की जरुरत होती है न, वैसे ही इन्हें जलाए रखना है तो इनमें तेल डालना पड़ेगा। तभी तो ये गरम रहते हैं, खुश हो जाते हैं। देखो, ये चहक गए ना! जब ये दीये बुझ जाते हैं तो शरीर ठंडा हो जाता है और बंदा सफर पे निकल जाता है। सफर पे... यानी उनका मतलब था मर जाता है... हमने कहा, पर ये नमकीन तेल क्यों लगाते हो, नहाते समय तेल की मालिश किया करो तो कहती थीं, वो तो मैं तेरी माँ से छुपा के करती हूँ, कड़वे तेल की शीशी रख छोड़ी है गुसलखाने में। माँ मना करतीं हैं क्या? हम पूछते, तो कहतीं - नहीं , मजाल उसकी कि मुझे मना करे पर तेरी माँ ने देख लिया तो सोचेगी नहीं, बुड्ढी के पैर कबर में लटके हैं और शरीर के मल्हार हो रहे हैं... कहकर अपनी ही बात पर खिलखिला कर हँसतीं। - ममा भी मुझे हर संडे को तेल की मालिश करके नहलाती थीं। ममा को तो मसाजवाली आंटी आके मसाज करती थीं। ममा तो पूरी नंगू हो

जाती थी... चिल्की फिर हँसने लगी।

मैंने लंबी साँस भरी। इस लड़की ने कैसी याददाश्त पाई है, नहीं तो बच्चे कहाँ इतना याद रखते हैं चार-पाँच साल की उम्र होती क्या है। माँ की कितनी कितनी तस्वीरें इसके जेहन में दर्ज हैं।

एकाएक चिल्की का चेहरा बुझ गया - ममा अब कभी मिलने नहीं आएगी, दादी? चिल्की का स्वर रुआँसा हो गया। चिल्की को इतनी देर तक कहानी सुना सुना कर फुसलाना बेकार गया था।

- आएगी क्यों नहीं! आएगी न!

- कब? चिल्की की आँखों की नमी पर आँखें टिका पाना मुश्किल था - अब तो फोन भी नहीं करती।

पहले कर लिया करती थी - दस-पंद्रह दिन में एक बार। उस दिन निखिल ने ही डाँट दिया - क्यों फोन करती हो बार-बार? उसे इस तरह परेशान करने से फायदा! अगर बेटी के लिए तुम्हारे मन में जरा भी माया-ममता बची रह गई है तो वह तुम्हें भूल सके, इसमें हमारी मदद करो। सात समंदर पार से अपनी आवाज सुना-सुना कर उसे हलकान मत करो। निखिल की आवाज में कड़वाहट थी और नेहा को कड़वाहट पसंद नहीं थी। उसने फोन पटक दिया और उसके बाद फिर कभी ब्लैंक कॉल तक नहीं आया। समय के साथ साथ रिश्ते धुँधलाने की कोशिश में थे।

- अच्छा, वो गिलास की बात तो रह ही गई, चिल्कू?

- अरे हाँ, चिल्की मेरे झाँसे में आ कर वापस चहक उठी, वो गिलास की कहानी तो आपने सुनाई ही नहीं...

- वो गिलास तो दादी का था न बेटा, इसलिए तुझे पहले दादी की बात तो सुनानी थी न!

- नहीं नहीं, अब आप गिलास की कहानी सुनाओ।

- हाँ, तो दादी के पास एक गिलास था। काँसे का गिलास। - काँसा क्या होता है, दादी?

मैंने आसपास नजर दौड़ाई। कोने में एक फूल दान था - काँसे का। देख, ऐसा होता है काँसा। इसके गिलास भी बनते हैं।

- वो गिर जाए तो टूटता नहीं? चिल्की की आँखों में लुभा लेनेवाली मासूमियत थी।

- काँसा बहुत नाजुक होता है। उसे फूल भी कहते हैं। जोर से गिरे तो टूट भी जाता है पर दादी का गिलास बड़ा मजबूत था। खास तरह की बनावट थी उसकी, गिरे तो भी टूटता नहीं था।

- रिश्तों को इस तरह मत तोड़ो नेहा! कैरियर बनाने के बहुत सारे मौके आएँगे। निखिल नहीं चाहता तो मत जाओ। साम-दाम-दंड-भेद हर तरह से उसे समझाने की कोशिश की थी मैंने । कम से कम चिल्की के बारे में सोचो, वह माँ के बगैर रह पाएगी?

स्पेशल ऑफर के साथ

क़ाजल फुट वेयर

हमारे यहां सभी प्रकार के फुटवेयर उपलब्ध है

कर्जत स्टेशन के पास (वेस्ट)

आशापुरा ज्वैलर्स

सोने-चांदी के गहनों के व्यापारी

शिवाजी रोड, शहाड़ फाटक, उल्हासनहर-४
फोनः ०२५१-२७०९९६२

- क्यों, बाप के बगैर नहीं रहती क्या जब निखिल शिप पर चले जाते हैं - छह-छह महीने नहीं लौटते! - नेहा भड़क गई थी - इस तरह के मौके बार-बार नहीं आते लेकिन आप लोग हैं कि मेरा साथ देना ही नहीं चाहते! बीसेक दिन बेहद तनाव में गुजरे... बाद में निखिल ने हमें बीच में बोलने से टोक दिया। पता चला, कैरियर और जॉब का तो बहाना था, इसकी तह में नेहा और निखिल की आपसी अनबन थी। जिस दिन नेहा को जाना था, वह चिल्की से मिलने आई थी। एक बार उसे भीगी आँखों से प्यार किया, फिर चिल्की को गोद से उतार कर ऐसे एहतियात से रखा जैसे कोई 'हैंडल विद केअर' सामान जमीन पर रखता है। बच्चों की छठी इंद्रिय बहुत तेज होती है। गोद से उतरते ही चिल्की ने सिसकियाँ ले लेकर रोना शुरू कर दिया था और नेहा ने उसे दुबारा भींच भीं लिया था। माँ के आलिंगन की गर्माहट से चिल्की पिघल गई थी। कभी गलती से भी नेहा के नाम के साथ निखिल कोई विशेषण जड़ देता तो चिल्की फौरन टोक देती - मेरी ममा को ऐसे मत बोलो। ममा अच्छी है। 'अच्छी' को वह जोर दे कर बोलती।

सहसा चिल्की मुझे जमीन पर लौटा लाई - दादी, ये तो हमारे घर से आया है ना?

- क्या? क्या आया है तेरे घर से?

- ये। ये। ये। वह दौड़ कर फूलदान के पास जा कर खड़ी हो गई - ये दादी, ये तो हमारे घर में था ना।

मैं भीतर तक हिल गई। कितनी जल्दी दुनियावी चीजें बच्चों को भी अपनी चपेट में ले लेती हैं।

मैंने अपने को फौरन समेटा - पर ये घर भी तो तेरा है न। नहीं है?

- ये तो पापा का घर है, चिल्की ने फतवा दिया।

- अच्छा बाबा, ठीक है। ये पापा का, वो तेरा। मेरा कोई घर नहीं। मैंने रोनी सूरत बना ली।

- नहीं नहीं, अच्छी दादी, ये तो आपका घर है। पापा का भी और ... उसने मेरे गले में बाँहें डाल दीं - और मेरा भी। चिल्की अचानक अपनी उम्र से बड़ी हो गई थी और चहक कर अब मुझे झाँसा दे रही थी। मैं उसकी समझदारी पर हतप्रभ थी। यह बच्चों की नई पीढ़ी है। हमारे समय से कितनी अलग - व्यावहारिक और डिप्लोमेट।

नेहा के जाने के बाद तीन चार महीने घर वहीं बना रहा था। चिल्की को वही घर अच्छा लगता था क्योंकि वहाँ से उसका स्कूल नजदीक था और जब तब उसकी सहेलियाँ खेलने आ जाती थीं। पर मेरे लिए दो घरों को चलाना बहुत मुश्किल था और जिस तरह नेहा छोड़ कर गई थी, उसके हृदय परिवर्तन की गुंजाइश बहुत कम थी। देर सबेर उस घर को समेटना ही था, निखिल को फिर लंबे दौरे पर जाना था इसलिए हमने उस घर को समेटने का फैसला लिया। चिल्की को उस घर से आने के लिए राजी करना टेढ़ा काम था। उसका कमरा हमने वैसा का वैसा वहाँ से शिफ्ट कर इस घर में हूबहू तैयार कर दिया था पर चिल्की थी कि न अपना घर भूलती थी, न कमरा और न उसे जिसने कमरा बड़े मन से बनाया था।

- पर दादी का भी एक घर था। ठीक? मैंने कहानी के छूटते जाते सिरे को थामा।

- हाँ, और उनका वो गिलास ... चिल्की कहानी सुनने की मुद्रा में फिर बैठ गई।

- तो दादी उस गिलास में ही सुबह पानी पीती थीं, थीं फिर उसमें चाय, फिर नाश्ते के साथ गिलास भर दूध, फिर खाने के साथ पानी, फिर शाम की चाय, फिर...

- क्यों, उनके घर में और गिलास नहीं था? चिल्की ने यह सवाल बिल्कुल चिल्की की तरह ही किया।

- नहीं, गिलास तो बहुत थे बेटा पर उनको वही गिलास पसंद था। हम सब बच्चे उसको पटियाला गिलास कहते थे। साइज में इत्ता...आ बड़ा था न इसलिए गिलास का खूब मजाक भी उड़ाते थे। कहते थे - दादी, आप गिलास को ले कर ऊपर कैसे जाओगे?

- ही ही ही ही... चिलकी खिलखिला कर हँस दी, फिर क्या बोला आपकी दादी ने?

- कहने लगीं - हट पागल, गिलास वाले तो ऊपर ही हैं, वहाँ गिलास क्या करना है ले जा कर।

इसे तो यहाँ वालों के लिए छोड़ जाना है जैसे वो मेरे लिए छोड़ गए थे। हम बच्चे उनसे मजाक करते, पूछते - झाईजी आप मरोगे कब? वो हँसतीं - तेरे घर पोता होगा तब! उन्हें क्या पता था, मेरे घर पोता नहीं, पोती होगी - चिल्की जैसी... मैंने चिल्की के गाल पर हल्की सी चपत लगाई।

- आपके दादाजी नहीं थे?

- दादाजी थे न - ऊँचे लंबे पठान जैसे। बड़े रोबदार। लेकिन वह पहले ही सफर पर निकल गए थे - दादी को अकेला छोड़ कर। वैसे तो दादा और दादी की आपस में कभी पटरी नहीं बैठती थी, दोनों में छत्तीस का आंकड़ा था - एक पूरब जाए तो दूसरा पच्छिम। दोनों एक दूसरे की टाँग खींचते रहते थे पर एक दूसरे के बगैर रह भी नहीं सकते थे इसलिए जब दादाजी मर गए तो सबको लगा कि अब तो दादी भी ज्यादा दिन जिंदा नहीं रहेंगी पर हुआ उल्टा... दादा के जाने के बाद तो दादी का नक्शा ही बदल गया। हमेशा चुप रहने वाली गिट्ठी सी दादी खूब पटर पटर बोलने लगीं, हर शनीचर-इतवार हवन सत्संग में हाजरी लगाने लगीं, कलफ लगी कड़क साड़ियाँ पहनने लगीं। दादी पोते पोतियों के साथ खूब मसखरी करतीं, खूब कहानियाँ सुनातीं... जैसे मैं चिल्की को सुना रही हूँ।

चिल्की बड़ी बूढ़ियों की तरह दोनों गालों पर मुट्ठियाँ टिकाए बैठी रही।

-लेकिन अपने मरने की पूरी तैयारी उन्होंने कर रखी थी। कहतीं - मेरी ये सोने की चूड़ियाँ मेरी बिट्ठो को देना, बिट्ठो मेरी बुआ का नाम था। ये कान के बुंदे मेरी पोती को, ये सोने की चेन दूसरी पोती को, ये करधन .... ये भी बिट्ठो को और ये मेरी आखिरी निशानी ये गिलास... ये भी बिट्ठो को...

माँ और बाबू जी हँसते - सबकुछ तो आपने भैनजी को दे दिया, हमारे लिए तो कुछ भी नहीं रखा... तो कहतीं - अच्छा, जो चीज उसे पसंद न आए वो तू रख लेना।

- आपकी बुआ को बहुत प्यार करती थीं वो?

- सब माँएँ करतीं हैं - मेरी जबान पर आया पर मैंने बात पलट दी - हाँ , बुआ तो उनकी लाड़ली थीं। अच्छा, तो वो हम बच्चों को पास बिठा कर कहतीं तुम लोग भगवान जी को बोलो - अब हमारा दादी से जी भर गया है, अब उसे अपने पास बुला लो, वो अपना बोरिया बिस्तरा बाँध के बैठी है, तुम्हारा रस्ता देख रही है। पर दादी, आप मरना क्यों चाहते हो? हम बच्चे उनसे पूछते। वो कहतीं - मेरी दादी कहा करती थीं...

- माय गॉड, उनकी एक और दादी थीं?

- एक और मतलब? दादी की दादी नहीं हो सकतीं? ... जा, मैं नहीं सुनाती कहानी।

- अच्छा, सॉरी सॉरी, क्या कहती थीं उनकी दादी?

- उनकी दादी कहा करती थीं... 'टुरदा फिरदा लोया, बै गया ते गोया, लम्मा पया ते मोया।'

- इसका क्या मतलब होता है दादी?

- हाँ, फिर वो मतलब समझातीं - चलता फिरता आदमी लोहे जैसा मजबूत होता है, जो वो बैठ गया

3 Austrian Diamond
Jewellery Sets
(3AUD2)
M.R.P. : ₹1,099
Only At
₹499

तो गोबर गणेश और लेट गया तो मरे बराबर।

कहतीं - मैं तो अब लेट गई, अब उठने की उम्मीद भी नहीं, तो मरे बराबर होने से मरना बेहतर। है न? उनको और कोई तकलीफ तो थी नहीं।

बस, टाँगें सूख गई तो चलने फिरने से रह गईं। बाकी उनका हाजमा एकदम दुरुस्त, बदन पे झुर्रियाँ नहीं, याददाश्त ऐसी कि पचास साल पहले किसके घर क्या खाया, वो उनको याद और खाना बिल्कुल टाइम से खाना - बिना घड़ी देखे बोलती थीं - अब चाय का टेम हो गया, अब खाना लगा दो। आँगन में धूप की ढलती परछाईं से समय का अंदाजा लगा लेती थीं। उनकी निवाड़ की मंजी जरा ढीली होने लगती तो कहतीं - कस दो।

कोई आता, झट उकड़ूँ हो कर कुहनी के बल आधी उठ जातीं। उन्हें मना करते, झाईजी, आप बैठे रहो, क्यों खटाक से उठ जाते हो। कहतीं - लेटे लेटे मेरी पीठ को बड़ी गरमी लगती है। मेरी पीठ हवा माँगती है।

- पीठ की कोई जबान होती है फिर पीठ माँगती कैसे है? चिल्की हँसने लगी फिर बोली - पर दादी, आप गिलास को क्यों भूल जाते हो बार बार?

ओफ! चिल्की गिलास की कहानी के बगैर मुझे छोड़ने नहीं वाली थी! मैं उसे बार बार भुलावे में डालने की कोशिश करती थीं पर वह मेरी उँगली पकड़ कर मुझे फिर गिलास तक ले आती थी।

- हाँ तो वे उसी गिलास में सुबह से रात तक की हर पीने वाली चीज पीती थीं। पानी, चाय, दूध, लस्सी, शरबत, अटरम शटरम सब कुछ उसी काँसे के गिलास में।

- फिर?

- फिर एक बार क्या हुआ कि गिलास गुम गया। सुबह उठे तो गिलास मिला ही नहीं। मेरी माँ ने उनको स्टील के गिलास में चाय दे दी। वो अपना नियम से उठीं, माँ ने चिलमची में कुल्ला वुल्ला करवाया। जाप वाप करके वो चाय पीने बैठीं। हाथ में गिलास लिया। देखा तो दूसरा गिलास, बोलीं

- मैं नहीं पीती, ये लश्कारे वाले गिलास में, मुझे तो मेरा वाला गिलास दो।

- ही ही, जैसे चिल्की का मेरा वाला गिलास... दादी कोई बच्चा थीं? चिल्की को मजा आ रहा था।

- हाँ, बूढ़े बच्चे तो एक ही जैसे होते हैं। अब उन्होंने जैसे जिद ठान ली - चाय पीनी है तो उसी गिलास में। चाय पड़ी पड़ी ठंडी हो गई। पूरा घर छान मारा। कहीं गिलास का अता पता नहीं। ऐसे अलादीन के जिन की तरह गायब हो गया।

- तो बोलना था, चिल्की ने हाथ लंबा घुमा कर अभिनय के साथ कहा - खुल जा सिमसिम... पर दादी, वो गिलास टूटता तो नहीं था न।

- टूटता तो नहीं था पर गुम तो हो जाता था न बच्चे। तो हम सब बच्चे लग गए उस गिलास को ढूँढ़ने में। ऊपर नीचे सारा घर खँगाल मारा।

चारपाइयों के नीचे, आँगन में, छत की मुंडेर पर, कुएँ की जगत पर, अमरूद सीताफल के पेड़ के पास। पर गिलास तो ऐसा गायब हुआ कि बस।

उनको खाना दिया। मेरी माँ ने मिन्नतें कीं कि झाई जी, आप खाना शुरु तो करो, पानी पीने तक गिलास मिल जाएगा। खाना तो गिलास में नहीं खाते न! पर उनकी तो एक ही रट। मेरा गिलास, मेरा गिलास। बाबू जी ने उनको कस कर डाँट लगाई कि क्या तमाशा है, एक गिलास के लिए सारा घर आसमान पे उठा रखा है, गिलास न हुआ कोई कारूँ का खजाना हो गया। अब तो वो लगीं रोने। पहली बार हमने उन्हें रोते देखा। बोलीं

- तुम लोगों के लिए वो एक पतरे का गिलास है। मेरे लिए तो वो मेरा लाहौर है, मेरा वेड़ा है, मेरा मायका है, ... मैं बोलते बोलते अटकी - मेरा सबकुछ है। - वो गिलास मिला फिर? चिल्की ने आँखें गोल करके पूछा।

- नहीं। खाना भी वैसे ही ढँका पड़ा रहा। उन्होंने हाथ नहीं लगाया। शाम तक गिलास मिला नहीं सो शाम की चाय भी नहीं पी। बेहोश सी होने को आईं। आँखें बंद होने लगीं। हम अंदर बाहर ढूँढ़ते रहे। घर के सारे बच्चे बड़े गिलास ढूँढ़ने में लगे थे। आखिर गिलास मिला। पानी रखने की पीतल की कुंडी के तले में पड़ा था। किसी बच्चे के हाथ से गिर गया होगा। किसी को ख्याल ही नहीं आया कि वहाँ भी हो सकता है। जैसे ही गिलास मुझे मिला, मैं चिल्लाई - झाई जी, आपका गिलास... वो एकदम कुहनी के बल उठ गईं। फिर उनकी आँखों में ऐसी चमक आई कि पूछो मत। बोलीं - जल्दी खाना लगाओ। बड़ी भूख लगी है। उनको खाना दिया तो उन्होंने बड़े तृप्त हो कर खाया। रात को एक ही रोटी खाती थीं। उस दिन तीन रोटियाँ खाईं। चटखारे ले ले कर सब्जियाँ खाईं। होठों से गिलास चूम कर उसमें मटके का ठंडा ठंडा पानी पीया। हम सब खुश। दादी का गिलास जो मिल गया था।

- बस, कहानी खतम? चिल्की ने पूछा, फिर क्या हुआ ?

- सुबह हम बच्चे उठे तो देखा - दादी एक हाथ में गिलास छाती से लगाए सो रही हैं और मुस्कुरा रही हैं। हम सब उनके चारों ओर इकट्ठे हो गए -

देखो, देखो, दादी नींद में हँस रही है। माँ ने कहा - आज इतनी देर तक कैसे सो रही हैं!

सबने कहा - रात को खाना पेट भर कर खाया है न, इसलिए मजे की नींद ले रही हैं। तड़के मुँह अँधेरे सबसे पहले उठने वाली दादी अभी तक सो रही थीं। बाबू जी ने आ कर उन्हें हिलाया तो काँसे का गिलास नीचे गिर गया। दादी मर गई थीं।

' हॉ...' चिल्की का मुँह खुला का खुला रह गया - ' मर गईं?'

' हाँ।'

'सो सैड, है न दादी? चिल्की की आँखें भीगी थीं - उनको गिलास नहीं देते तो नहीं मरतीं ना !

'शायद...' मैंने अपनी दादी की वह मुस्कान याद करते हुए कहा। पर मैं कहना चाहती थी - 'मरतीं तो वो तब भी पर तब उनके चेहरे पर मुस्कुराहट नहीं होती।'

'वो गिलास अब कहाँ है, दादी?'

'दादी ने कहा था, मेरी बिट्टो को दे देना। सो मेरी माँ ने दे दिया था वो गिलास बुआ को।'

'तो उनके पास है?'

'होना तो चाहिए।'

'मुझे दिखाओगे दादी?'

'अच्छा, मिल गया तो तुझे दिखाऊँगी।'

वो गिलास कहाँ मिलने वाला था अब।

चिल्की को पूरी कहानी सुनाते हुए एक बात मैने छिपा ली थी कि दरअसल वह काँसे का एंटीक गिलास दादा जी का नहीं था, दादी की माँ का था। अपनी माँ के मरने के बाद यही एक चीज उन्हें विरासत में मिली थी। उसमें उन्हें अपनी माँ, अपना मायका, अपना लाहौर दिखता था। चिल्की को मैंने बहला दिया था पर मुझे पता था कि बुआ अपनी बेटियों के पास अमेरिका गईं तो पुराने बर्तन - भाँडे यहीं छोड़ गईं। पुराने पीतल के बर्तनों के साथ वह काँसे का गिलास भी कोई कबाड़ी आ कर ले गया होगा, क्या पता।

चिल्की ने ठीक कहा था - काँसे का गिलास टूटता नहीं था पर ... पर वो गिलास खो गया था, इसमें शक नहीं ।

-Sudha Arora

Faces Canada Magneteyes Kajal Duo Pack

Faces Canada Magneteyes Kajal Duo Pack

Adviteeyamina
Akshayatritiya
Amazing
Offer
SOUTH INDIA
shopping mall
Kukatpally • Patny Centre
Gachibowli • Kothapet

SCOTTISH CLUB
PACK OF 5 V NECK T-SHIRT
M.R.P. : ₹2,495/-
OFFER PRICE ₹599

12 CAVITY
NON- STICK APPAM PATRA
WITH LONG HANDLE & LID
MRP ₹999/-
SHOP NOW
₹399/-

10 BEDSHEET SETS
+ 15 PILLOW COVERS
MEGA COMBO
SHOP NOW
₹1,999/-

Easy Go Stylish
LEATHERITE TROLLY BAG
SHOP NOW
₹1,499/-

बथुआ की खेती

सर्दियों में बथुआ की मांग काफी बढ़ जाती है, और यह किसान के लिए एक अच्छा व्यापारिक अवसर बनता है। इसे विभिन्न स्थानीय बाजारों में बेचा जा सकता है, जिससे अच्छा लाभ प्राप्त होता है। बथुआ न केवल एक स्वादिष्ट और पौष्टिक सब्जी है, बल्कि यह स्वास्थ्य के लिए भी कई फायदे प्रदान करता है। इसके पत्तों का सेवन हमारे शरीर को आवश्यक पोषक तत्वों की आपूर्ति करता है और यह कई स्वास्थ्य समस्याओं को दूर करने में मदद करता है। हालांकि, इसके सेवन में संतुलन बनाए रखना जरूरी है, ताकि इसके किसी भी दुष्प्रभाव से बचा जा सके।

बथुआ एक पौधा है, जिसे अक्सर 'चेनोपोड' भी कहा जाता है। यह पौधा भारत में आमतौर पर पाया जाता है और खासकर सर्दियों में इसके पत्ते खाने के लिए उपयोग किए जाते हैं। बथुआ का पौधा दिखने में हरा और झाड़ीदार होता है, और इसके पत्ते चौड़े, हरे रंग के होते हैं। बथुआ का उपयोग न केवल भोजन में बल्कि औषधीय गुणों के लिए भी किया जाता है।

स्वास्थ्य के लिए लाभकारीः बथुआ के पत्ते आयरन, कैल्शियम, विटामिन" और ए जैसे पोषक तत्वों से भरपूर होते हैं। यह शरीर में खून की कमी को पूरा करने में मदद करता है। इसके पत्तों का सेवन हड्डियों को मजबूत बनाने में भी मदद करता है।

पाचन में सहायकः बथुआ का सेवन पाचन क्रिया को बेहतर बनाने में मदद करता है। यह कब्ज और पेट से संबंधित समस्याओं को दूर करने के लिए प्रभावी है।

बथुआ का उपयोग विभिन्न प्रकार से किया जा सकता हैः

बथुआ को साग के रूप में पकाकर खाया जाता है, जो सर्दियों में खासतौर पर लोकप्रिय होता है। इसे मसालेदार साग या सूप में डालकर सेवन किया जाता है। बथुआ को पीसकर पेस्ट बना लिया जाता है और उसे त्वचा पर लगाने से त्वचा के विकार दूर हो सकते हैं। बथुआ की पत्तियों से चटनी भी बनाई

जाती है, जो खाने का स्वाद बढ़ाती है। बथुआ को अधिक सेवन से बचना चाहिए, क्योंकि इसमें ओक्सलेट्स की मात्रा अधिक हो सकती है, जो गुर्दे पर असर डाल सकते हैं। इसलिए इसे संतुलित मात्रा में ही सेवन करना चाहिए।

बथुआ एक महत्वपूर्ण और पोषक तत्वों से भरपूर पौधा है, जिसे खासतौर पर सर्दियों में उगाया जाता है। यह अत्यधिक लाभकारी साग के रूप में उपयोग होता है और इसकी खेती का खर्च भी अपेक्षाकृत कम है। बथुआ की खेती करने से किसान अच्छा लाभ प्राप्त कर सकते हैं, क्योंकि यह कम पानी और देखभाल में आसानी से उग जाता है।

बथुआ की खेती के लिए उपयुक्त जलवायु

बथुआ की खेती के लिए ठंडी जलवायु सबसे उपयुक्त मानी जाती है। यह मुख्य रूप से सर्दी के मौसम में उगता है, और इसका आदर्श तापमान १५-२०ष्टण होता है। बथुआ को शरद ऋतु (अक्टूबर से दिसंबर) में बोया जाता है, और यह मार्च तक तैयार हो जाता है।

बथुआ की खेती के लिए भूमि चयन

बथुआ की खेती के लिए हल्की, उर्वरक और जल निकासी वाली मिट्टी सर्वोत्तम होती है। इसकी वृद्धि के लिए मिट्टी का ज्प ६-७ के बीच होना चाहिए। यह पौधा विभिन्न प्रकार की मिट्टी में उग सकता है, लेकिन बलुई या चिकनी मिट्टी में इसकी पैदावार अधिक होती है।

बथुआ की बीज बोने की विधि

बीज की तैयारीः बथुआ के बीज छोटे और हल्के होते हैं, जिन्हें बोने से पहले अच्छे से छान लेना चाहिए ताकि खराब बीज अलग हो जाएं।सबसे पहले खेत को अच्छे से जुताई करके समतल करें। फिर मिट्टी को बारीक करके उसकी सतह को थोड़ा दबा दें। खेत में उचित अंतराल पर नालियाँ बनाकर सिंचाई की व्यवस्था करें।बीजों को खेत में बिखेरकर हल्की सी मिट्टी से ढक दें। इन बीजों को एक-दूसरे से १०-१२ सेंटीमीटर की दूरी पर बोना चाहिए। बोने के बाद खेत में हल्की सिंचाई करें। बथुआ को अधिक पानी की आवश्यकता नहीं होती, लेकिन शुरुआत में पानी देने से बीज जल्दी अंकुरित होते हैं। फिर पानी की आवश्यकता को मौसम के हिसाब से पूरा किया जाता है।

बथुआ की देखभाल

खाद और उर्वरकः बथुआ की खेती में जैविक खाद जैसे गोबर की खाद का प्रयोग लाभकारी होता है। रासायनिक उर्वरक जैसे नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटाश का सीमित मात्रा में प्रयोग किया जा सकता है। बथुआ के पौधों को अधिक देखभाल की आवश्यकता नहीं होती, लेकिन खरपतवार को नियंत्रित करना जरूरी है। विशेषकर जब पौधे छोटे होते हैं, तो खरपतवार के साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए निराई की आवश्यकता होती है। यह खरपतवारों को हटाकर बथुआ को पर्याप्त पोषक तत्व प्राप्त करने में मदद करता है। बथुआ के पौधों के बीच में खरपतवार को दूर करने के लिए निराई-गुड़ाई की आवश्यकता होती है। यह पौधा किसी भी प्रकार के खरपतवार के साथ आसानी से प्रतिस्पर्धा करता है, लेकिन कुछ मात्रा में निराई की आवश्यकता होती

है। कीट या रोग कम होते हैं। लेकिन कभी-कभी इसकी पत्तियों पर सफेद मक्खी, कीट या फफूंदी का हमला हो सकता है, जिसे समय पर उपचार किया जाना चाहिए।

बथुआ की फसल से लाभ

जलवायु के अनुकूलः बथुआ सर्दियों में आसानी से उगता है, और इसे अधिक पानी या देखभाल की आवश्यकता नहीं होती, जो इसे छोटे किसानों के लिए एक आकर्षक विकल्प बनाता है।

बथुआ की बुवाई के लिए आदर्श समय अक्टूबर से दिसंबर तक होता है। यह ठंडी जलवायु का पौधा है, जो शरद ऋतु और सर्दियों में सर्वोत्तम तरीके से उगता है। इसके बाद मार्च के अंत तक इसकी फसल तैयार हो जाती है।

बीजों की मात्रा और वितरण

बथुआ के बीज छोटे होते हैं, और इनकी बुवाई के लिए बहुत अधिक मात्रा की आवश्यकता नहीं होती। प्रति एकड़ के हिसाब से लगभग ३-५ किलो बीजों की आवश्यकता होती है। बीजों को अच्छी तरह से बिखेरकर हल्की मिट्टी से ढक देना चाहिए ताकि वे जल्दी अंकुरित हो सकें।

बथुआ की सिंचाई

बथुआ एक ऐसे पौधे के रूप में प्रसिद्ध है, जिसे कम पानी की आवश्यकता होती है। हालांकि, बीज बोने के बाद पहले कुछ दिनों तक नियमित सिंचाई की आवश्यकता होती है। अंकुरण के बाद पानी की आवश्कता मौसम के हिसाब से होती है, और इसके लिए अत्यधिक सिंचाई से बचना चाहिए। बहुत अधिक पानी देने से इसकी जड़ें सड़ सकती हैं।

बथुआ की उर्वरक की आवश्यकता

बथुआ के लिए उर्वरक की आवश्यकता बहुत अधिक नहीं होती। हालांकि, अच्छी उपज के लिए गोबर की खाद या जैविक उर्वरक का प्रयोग करना लाभकारी होता है। रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग भी किया जा सकता है, लेकिन इसे बहुत अधिक न किया जाए, क्योंकि बथुआ स्वाभाविक रूप से कम पोषक तत्वों की आवश्यकता वाला पौधा है।

बथुआ की खेती से संबंधित चुनौतियाँ

अत्यधिक बारिशः यदि बारिश अधिक हो तो बथुआ के पौधों को सड़ने का खतरा हो सकता है। इसके लिए भूमि का सही जल निकासी और सिंचाई की सावधानी बरतनी चाहिए।

बथुआ की मार्केट डिमांड

स्थानीय बाजारः बथुआ की खपत मुख्य रूप से भारतीय घरेलू बाजार में होती है। ग्रामीण क्षेत्रों में बथुआ का उपयोग बहुत अधिक होता है, जबकि शहरी क्षेत्रों में भी स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता के कारण बथुआ की डिमांड बढ़ रही है। विशेष रूप से उत्तर भारत, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, पंजाब, और राजस्थान में बथुआ की खपत बहुत अधिक है।

बथुआ का व्यापार

पारंपरिक व्यापारीः छोटे व्यापारी और कृषक बथुआ को स्थानीय मंडियों में बेचते हैं। इन व्यापारीयों का काम बथुआ के उत्पादों को शहरों और गांवों में वितरित करना होता है। शहरों में आमतौर पर सुपरमार्केट, मंडी, और होलसेल बाजारों में बथुआ का व्यापार होता है।

ऑनलाइन मार्केटिंगः डिजिटल युग में बथुआ की बिक्री अब ऑनलाइन प्ल`टफार्मों पर भी होने लगी है। कई ई-कॉमर्स साइट्स और ऑनलाइन कृषि प्ल

`टफार्म जैसे Amazon, BigBasket, और LocalBanya आदि पर बथुआ की बिक्री हो रही है। खासकर, शहरी क्षेत्रों में जहां लोग ताजे और ऑर्गेनिक उत्पादों की तलाश करते हैं, बथुआ की ऑनलाइन डिमांड तेजी से बढ़ी है।

लेखकों से निवेदन

मौलिक तथा अप्रकाशित-अप्रसारित रचनाएँ ही भेजें।
रचना फुलस्केप कागज पर साफ लिखी हुई अथवा शुद्ध टंकित की हुई मूल प्रति भेजें।
ज्यादा लंबी रचना न भेजें।
सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षणिक, साहित्यक, स्वास्थ्य, बैंक व व्यवसायिक से संबंधित रचनाएँ आप भेज सकते हैं।
प्रत्येक रचना पर शीर्षक, लेखक का नाम, पता एवं दूरभाष संख्या अवश्य लिखें ; साथ ही लेखक परिचय एवं फोटो भी भेजें।
आप अपनी रचना ई-मेल द्वारा भेज सकते हैं।
रचना यदि डाक द्वारा भेज रहे हैं तो डाक टिकट लगा लिफाफा साथ होने पर ही अस्वीकृत रचनाएँ वापस भेजी जा सकती हैं। अतः रचना की एक प्रति अपने पास अवश्य रखें। स्वीकृत व प्रकाशित रचना का ही उचित भुगतान किया जायेगा।
किसी विशेष अवसर पर आधारित आलेख को कृपया उस अवसर से कम-से-कम एक या दो माह पूर्व भेजें, ताकि समय रहते उसे प्रकाशन-योजना में शामिल किया जा सके।
रचना भेजने के बाद कृपया दूरभाष द्वारा जानकारी न लें। रचनाओं का प्रकाशन योजना एवं व्यवस्था के अनुसार यथा समय होगा।

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. ,
Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
mangsom@rediffmail.com

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

ADVERTISEMENT TARRIF

No.	Page	Colour	Rate
1.	Last Cover full page	Colour	50,000/-
2.	Back inside full page	Colour	40,000/-
3.	Inside full page	Colour	25,000/-
4.	Inside Half page	Colour	15,000/-
5.	Inside Quater page	Colour	07,000/-
6.	Complimenty Adv.	Colour	03,000/-
7.	Bottam Patti	Colour	2500/-

6 Months Adv. 20% Discount
1 Year Adv. 50% Discount

Mechanical Data: **Size of page:** **290mm x 230mm**

PLEASE SEND YOUR RELEASE ORDER ALONG WITH ART WORK IN PDF & CDR FORMAT

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. , Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

दिवाली पर सभी को प्रेम, शांति, और
खुशहाली मिले, यही कामना है।